कथा सरवरी

भाग १



हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी,
परी महल, शिमला-9

प्रकाशक :
सचिव
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
शिमला–9

प्रथम संस्करण
माघ, 1898 तदनुसार
जनवरी, 1977.

प्रतियां : १०००

मूल्य : **दो रुपये पचास पैसे**

मुद्रक :
नवीन प्रिंटिंग प्रेस
बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी पुस्तक माला–पुष्प ७

कथा सरवरी

भाग १

[हिमाचल प्रदेश के सिरमौर, शिमला व कुल्लू क्षेत्रों की कुछ चुनी हुई लोक-कथाओं का संकलन]

मुख्य सम्पादक :
लाल चन्द प्रार्थी

सम्पादक मण्डल :
हरि चन्द पराशर
मौलू राम ठाकुर
डा० बंशी राम
विद्या शर्मा



हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
परिमहल, शिमला – 171 009

प्राक्कथन

पहाड़ी लोक-कथाओं का प्रथम भाग हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी की ग्रन्थमाला में सातवां पुष्प है। बर्फ के किसी बड़े तोंदे (लुठित हिमपुंज) में बर्फ के इलावा कितनी शिलाएं, पेड़, पौधे, पशु साथ में ढेर हुए पड़े हैं, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता। परन्तु वह हिमपुंज कुछ अदृश्य रूप से चलित होता है, कुछ क्षरित होता रहता है, कुछ नीचे भूमि में रिसता है कुछ ऊपर पसीजता है। लोक कथा भी हिमपुंज की मानिंद है उसमें देवगाथा, पुराण कथा, इतिहास वार्ता आदि के कई तत्व समाए रहते हैं। और सबसे बढ़कर है उसका गल्प और आख्यायिका तत्व जिसका कथक्कड़ी रस उसे साहित्य क्षेत्र की परिधि में घेर कर ले आता है।

हिमाचल प्रदेश में आदिकाल से विभिन्न जाति समूहों का मेल जोल रहा है। अतः यहां का लोक साहित्य विविध और विभिन्न है। लोक साहित्य में से लोक कथा सर्वाधिक व्यापक रूप है क्योंकि इसके सुनाने वाला यत्र तत्र परिवर्तन कर लेता है क्योंकि उसकी अपनी साहित्यिक कल्पना कथा सुनाते सुनाते कार्यशील रहती है।

'बड्डुकथा' (बृहत्कथा सरित सागर) भारतीय लोक कथाओं का ऐसा भंडार है जो समय-समय पर भारतीय भाषाओं के ग्रन्थ साहित्य को सामग्री प्रदान करता रहा है, साथ ही उससे तत्कालीन भाषा रूपों का ज्ञान होता है और उस समय की भाषाओं के ग्रामर लिखने में मदद मिलती है।

पहाड़ी भाषा और साहित्य की इस विकास वेला में लोक कथाओं से एक साथ दो वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है, साहित्य के लिए कथानकों का तानावाना और भाषा के ठेठ रूप। हमारा प्रयत्न है कि पहाड़ी लोक-कथाओं की सरवरी को ग्रन्थ साहित्य के लेखकों को निरन्तर उपलब्ध कराते रहें। यह पहला भाग हिमाचल प्रदेश के मध्यवर्ती क्षेत्रों, सिरमौर, शिमला तथा कुल्लू के सम्बन्ध में है और दूसरा भाग चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व बिलासपुर क्षेत्रों से सम्बन्धित है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक उपयोगी होगी और पाठक इस प्रयास को पसन्द करेंगे।

लाल चन्द प्रार्थी
अध्यक्ष
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
एवम्
मन्त्री, भाषा-संस्कृति, हिमाचल प्रदेश

भूमिका

जो प्रदेश जितने विभिन्न प्रकार के जनपदों से बसा हो वह प्रदेश लोक-कथाओं में उतनी ही विभिन्नता रखता है। लोककथा मानव इतिहास के उस चरण की उपलब्धि है; जब मानव अपने से बाहर के संसार को और विराट प्रकृति को भावात्मक दृष्टि से देखता है और उसे अप्रयोज्य इकाई (अनयुटेलाइज़ेवल होल) समझता है। लोक कथा में कल्पना का फन्तासी रूप किसी अदृष्ट घटना को मनचाहे ढंग से चित्रित करता है। इसलिए सामान्य जनों में से प्रभावी ढंग से भाषा प्रयोग करने वाले कुछ एक ऐसे व्यक्ति अवश्य होते हैं जो गल्प में रस घोल सकते हैं।

प्राचीन साहित्य में उल्लेख है कि लेखकों की परम्परा ने भारत के आदिवासियों में प्रचलित सवा लाख कथाओं का संकलन किया था और कथा सरित सागर में उनमें से अधिकांश विरचित है। भारत के कथा साहित्य को उन कथाओं ने प्रचुर मात्रा में प्रभावित किया है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न जाति समूह और सांस्कृतिक समुदायों का आरम्भ से ही मिलन होता रहा है। विभिन्न वसु यहां आपस में मिलकर जनपद बनाते रहे हैं और आपस में मेल जोल के कारण उनकी गल्प में लेन देन होता रहा है। सदियों की इस रेल पेल से जो लोक कथाएं आजकल सुनने सुनाने में मिलती है उनके अन्तर्गत की कथावस्तु में अनेक सांस्कृतिक रूढ़ियां (कल्चरल मोटिफस) हैं, जिनका निर्वचन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक सांस्कृतिक दृष्टि कोणों से किया जा सकता है।

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी ने प्रदेश के लोक कथाओं के संकलन की एक विशाल योजना बनाई है इसके अन्तर्गत प्रथम प्रयास के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं प्रथम भाग में कुल्लू, महासू और सिरमौर की लोक-कथाएं संकलित है और दूसरे भाग में चम्बा, कांगड़ा, मण्डी व बिलासपुर की कुछ एक लोक-कथाएं एकत्र हैं।

इन कथाओं से जहां प्रदेश के मौखिक गल्प साहित्य का अनुमान लगेगा वहां इन क्षेत्रों की कथ्य भाषा के सहज रूप के उदाहरण भी उपलब्ध होंगे।

इन दोनों पुस्तकों के संकलन और सम्पादन में तकनीकी सहायक श्रीमती विद्या शर्मा ने मनोयोग से कार्य किया है। अनुसन्धान अधिकारी डा० बंशीराम और सहायक सचिव ठाकुर मौलूराम ने समय समय पर बहुमूल्य सुझाव दिए हैं।

अकादमी के सभी प्रकाशनों का कार्य अकादमी के अध्यक्ष श्री लालचन्द प्रार्थी जी निकटता और निष्ठा से देखते हैं। वह अकादमी की गतिविधियों के महाप्राण हैं।

हमें आशा है कि इसी शृंखला में हम शीघ्र ही किन्नौर और लाहुल स्पिति की कुछ लोक कथाओं के हिन्दी रुपान्तर को पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर पाएंगे।

हरि चन्द पराशर
सचिव
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी
परिमहल, शिमला–9

विषय सूची

भाग १ :–सिरमौरी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

भाग २ :-महासवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

भाग ३ :- कुल्लवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

पहाड़ी लोक-कथाएं – ३०

भाग १. :– सिरमौरी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	नौरो रो नोटेण	विद्यानन्द सरैक
२.	दुधाधारे देव देवठी रा	विद्यानन्द सरैक
३.	जिम्पर देवे वलेंग्रा	विद्यानन्द सरैक
४.	पींटू पींटी री कथा	डा० खुशीराम गौतम
५.	एक थिया साहुकार	अमरसिंह चौहान
६.	शिरगुल देवते री कथा	अमरसिंह चौहान
७.	भाई भाई रा प्यार	अमरसिंह चौहान
८.	राजे रा राज गोम्रा बाटो रा काज गोम्रा	जगदीशचन्द शर्मा
९.	नौ लाखा ग्रार	जगदीशचन्द शर्मा

नौरो री नोटेण

आज नौरे रा गांव रिणके तसीलो (सिरमौर) रे संघड़ा ब्लाको रा सोबी दू बोड़ा रो प्रसिद्ध गांव ओसो पर ऐसी गांव रे बजुरग पछादे तसीलो रे गिरी पार मान्दर परगणे रे नोरे गांव दे बोसो थेऐ। आज बे नोरे रा येह प्राचीन उजड़ा टू गांव ढोल् दू थोड़े घोरो, मन्दिर रो आंगणों री साफ थाती (खण्डर) सूरक्षित राखे ओसो। ऐनी रे धौरे दो म्हाणेड़ जे खाड़े नौरे री खाड़ी रे नांव पलाल नोदि दे मिलो ओसो।

कोई चऊ शौए बोरषें रे बात ओसो जे ऐसी नोरे रे गांव दा कोड़ था। हर घोरो दे कोड़े थे। देवी देवते पान्दे लोग विश्वास कोरो थे पौंडतो पावचो रा जमाना था। सारे गांवो रे माछ गणाबेओ गठावेओ रोजे गोऐ, पर कोड़ न टोला जागरे चेरशी शांतें ओखणे, भूण्डी भाइठो का-का न किओं तिने एकी दिनो रे बात ओसो जे एक नोटूऐ (नट) रे एक पार्टी गांवों दे आए से क्या देखो जे जेतेषो देखणें आल् गांव दे आए तिनो माहे भोश्तो कोड़े थे ऐ। एखो दा कोड़ लागदा त्यार था कोरने काम भोगवानो रे थेऐ। एक नोटणे विउने तीऐ बोलो तुमोरा कोड़ टोलो सोको जे तुमे सारे गाँवों रे मिले रो एक काम कोरो। मेरे बात मानणे पोड़ले। गांवोरे कोड़े टाटे माठे सोब ढालो कोरदे लागे मांतिए म्हारे भगवान तो तू औसे जे गांवों दो कोड़ टालो। वैली गांव रे ठोगड़े स्याणें घोरे पूजे तो खुमले बेठे। नोटूऐ बे गांवो दे थेऐ। नोटण खुमली दे थे। नोटणे ऐ गांवो रे ठोगड़े आगे बोलो जे सामणे रे ढाको दो थोड़े खे बेड़ लागणे ओ। तोइने बीख रो बाकटू बेड़ो पान्दे खे लागणो ओ दिन किओ रो नोटूए ढाको दो बेड़ आण्डे थोड़ें खे लाए। बाजा बाजदा लागा रो नोटेण नाचदी बेड़ो पान्दे झूमदे लागे बेड़ कोइ फरलांग भेरे थे।

तब क्या बीख रो बाकटू एक कदम एक बकरा कोटो। कोंई मढ़ाले खोतम होई। एकी री वारी जोवे आई तिनिए सुँचो २ रो चूपी बेड़ बे काटे। नोटेण आधी बेड़ो पान्दे वे पूजे बेड़कोटे के से डून्दे बे रोड़े। तीऐं रिड़दे २ बोलो, जे कोड़ गोआ टोल् नोरो गो गौल्, तेसो दिनो दो मोरगे ढोल् रो नोरो

गोल्दो लागो एक आदमें बोली था नोगरे तिणिऐ जोबे तेतो शोणो तो से जाएरो नोरे बोसा रो नोरे नावो रो गांव बसाया। भगवाने रे माया ओसो जे ऐवे तोरो गोल गो। माटलो रा गांव आग बे नोरालो रे बरादरी रा ओसो। आज बे नोटुऐ ऐसी गावो दे नी डोई। कुछ बोरषो पोएले तो पूछो थे जे एथा कुऐ नोराल तोनी हामे तमाशा नी कोरदे।

एस तोरे नोरालादू कोड़ टोला रो गांव खतम होआ। आग ढोली दो थोड़े देवठी मकान तोलणे खलेण नोरे रे यादगार ओसो तोई ऐरा पोता लागो जे ऐ गांव सुख सम्पन गांव था लोक धौणे थे। खाई जीवी थे। बोल्तो रा पोलटा इनो रिणके बसाए गोआ बाकी रा सर्वनाश होए गोआ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. बोसो	रहना	6. बेडो	बेड़ा
2. ठोगड़े	अकलमन्द	7. नोटुऐ	नाचने वाले या तमाशा दिखाने वाले
3. खुमले	गांव की पंचायत	8. टीला	चोटी
4. ढाको	ढंकार		
5. बाकटू	टाछी बकरा		



दुधाधारे देव देवठी रा

सिरमौर जिला रे देवठी मझगांव रे गावों दा आज बे सुन्दर कला-कृति रा अनमोल रो सजीव रुद्र देवो रा मन्दिर एक यादगार ओसो। ऐसी मोन्दरो दो आज बे एक (मूरत–पुतला) देव रुद्रो रा प्राचीन पुतला ओसो। एसी पुतले रे मुहों दे हलके-२ काले नशाण कुछ ऐतिहासिक सबूत देओ ओसो।

कोई दारो शोए बोरषो रे बात ओसो। देवठी रे नजदीक बड़ोग गांवो दा डिवरे घलेवोगो रा डवराल भाट रो भाटणे रो थी। एकी दिनो री बात ओसो जे भाटणे दूधो छाटदे लागे रोवे थे। कोरने काम भगवाने रे थे ऐ, दूधो रे कठा एंडे दो शोणण-शणण मोरो। भाटेण हाथ बे छाड़ो रो तीन्दो कीएं बे न। बस तोबे तोई छाटदे लागे रो सीऐ शणाका–रो सीऐ धमाका तोबे तोई हाथ धोओ रो हाथ कठा एंडे खे राखो तोबे बे सीऐ शणाका तोबे डवराले भाटो खे बोलो तीऐ, माता ओरा आवो देख तो इन्दो कीऐ ओसो। भाटे हाथ धोवे रो कठांएडे खे छाड़ाहाथ देखो तो तीन्दा एक पुतला। भाट बोड़ा हैरान परेशान होओ तोबे तीनिए पोंडतो गे जाए रो गणाओ गठा वो पर पोता न चाला। आखिर सो ठाकरोगे मझगावां

डोवा । ठाकरे बोलो जे तो होला दोश तो लागेलो चटी श्रो रो खोज नातो जे होला भूत प्रेत तोवे न होलो कीऐ बेन । बोस डबराल् भाट घोरे डोवा नो श्रोवरे दो लीग फाटो तीणिऐ श्रोरज लाए जे तो तू देव देव देवता तो श्रापणा रेख रखेनी, जे श्रोसे भूत परेत तोबे देखमें तेरो । कोरने काम भगवानो रे थेऐ जे जोबे सोबिए श्रोरज लाए तोचटी श्रो रो खोज बड़ोगे दो मभगावों रो मभगांव दो देवठी लवाणे कुन्थलो तोबे देवठो श्रावेरो स्थान रेखा । रो थड़ोटो रे जागा बणावे देशे धारटिए मिले रो मन्दिर बणावा रो सात जागरे कोए सातवें देस देवो रे केदश लागे रो नाच मुजरा स्वांग कीऐ। श्राज बे सेऐ प्रथा श्रोसो । श्रोखणे चेरडे जागरे, शात देवो रे पूजणे मानने रे जोग श्रोस जागरे माहे देव कलेण नावको बड़ा सुन्दर मेला होश्रो श्रोसो। देव बालगी सगासनो दा डोवो । कुछ बधन वे श्रोसो जेरा सारे देशो दा सहवास नी कोरदे, शकार नी खान्दे, ऐरी बातो बो श्रोसो जे देवठी गलत बात स्थानो रे नाते नी कोरदे ऐरे केतणे प्रतिबंध श्रोसो जो मान्य श्रोसो ।

दोश्रो खे कीऐ बोले भाइठो नी चोढ़दो ऐथी कोंई ने देव दूणो रे कठां एंडे दा उपने रोश्रा श्रोसो श्राज वे दोश्रो रे स्थान थाडोटु, मोड़ डूमो रा चौतरा बड़ोगे, थड़ोटका, पूजनीय रखेनी श्रोसो ।

रोज भण्सरे पाचे रां बली, बेल नोगत बाजा बोजो श्रोसो। कैदशे रो जागरे माहे राते धवेले साथ देश्रो श्रोसो रो चोगड़े धरेवणे वाजे देवकरे बागे वोजो । ठेका सूरज न्हाण देव री यात्रा रे बाजे श्रोसो ।

ऐबे जो पुतला देवो रा दूधो माहे फावा था से जेठो मूल श्रोसो रो श्राखणू चेरशू रो ददोणू नावो रे देव रे पूतले नये बणवे होन्दे श्रोसो । ऐरा वचार श्रोसो । जे थे सोब पुतले लगभग 800 वर्ष पराणे श्रोसे । हारो बे कोई देवो देवते रे पुतले सगासनो दे देखणे खे फावो ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छाटदे	मथना	4. नोगत	बाजा
2. श्रोवरे	कमरा	5. फावो	मिलते हैं
3. भेंण्सरे	सुबह		



जिम्पर देवे दलेंग्रा

लगभग एक हज़ार बोरशो दो बे पोएले रे बात ओसो । ड्रोंलो रे डेरे रो चोन्दे दू भाए बोली थे । दोशो दा काल था । तीने दूएं भाइए आपणा साज सामान थागा रो नोगरो खे निकले । कोई दिनो दे बाद लादे पालवे पूजे । ऐरो बोलो जे भेखल् नावो रा एक आदमी तीनों फाबा जो भाट आये खे जातेरा बोलो था । तिनिए बोलो आज ऐसी नालो दा जीओं रा जागरा ओसो । तिने दूएं भाइऐ डेरी चोन्दिऐ बोलो चालो हामें बे देखमें । से तीने भोणे डेरे, चोन्दे, भाखल् निओं डाबरे खे डोवे जेना जीओं रा जागरा थेआ । एरो बोलो ओसो जे आगे से भेखल् पाछे डेरे चोन्दे डाबरे दे उतरे । गाची २ तांई जोबे से डूबे तो तिनोखे बार फाबे । तीऐ बाटे तीनो भोरे मांछ देखिऐ । जो हान्दरदे नाचदे पूजदे लागे रोवे थेऐ ऐबे से तीने भोणे कनारे दे बेठे गोऐ । खूब पूजा पातरे देखे कोई किशमे रे माछ हाण्डदे जान्दे देखे । जोबे ऐ पूजणे रा काम पूरा होआ तो जागरे रो खाण खुलो । पंगते लागी रो खान्दे देन्दे लागे । जीओं रे देव एक थाल, एक कोरवा तीन चीजे थी । बस भगवानो रे कोरने कामथे एकी ऐ कोरवा, एकीऐ डोंरू, ऐकिए थाल थागा रो चूपी तीने भोणे डेरे, चोन्दे, भेखल तीनों रे जागरे दो भागे । खूब फंटे दीते आखिर दिन रात भूखे प्यासे अलोटी (जिला शिमला ठियोग तहसील) गावों री सोंई सेरे दे पूजे । तोवे तीऐ भोण से देवे रा समान थाल, डोंरू कोरवा, राखा भोइंदा रो आपे कीआ राम । पाण्डे परोइति वेदे भाट पजेरे गोणने गाठणे आले तोव ढाढरो री सेरे दा सोवी दो पोलका स्थान देवे रा वणावा गोआ । भेखल् जो लादे पाल्वे रा भाट था तेसी दो तीने पूजदी बोई नगारे वजावे । ऐके जाते पाते रा टाइम था । बस से तूरे वाजगे वणावा रो देवे ऐ देश कारा । तोवे बोलो जे रोजका आदम देवे री ताई लागो था । तोवे पूजे जोजेओ रोजके बाकरे गाए ल्हेओ । तोवे आठवे दिनोरा बाकरा, तोबे म्हीने रा तेरा कोरेओ शोउजो रे नोराते खे भोटा (भैसा) रो चोईचो रे नोराते खे एक २ बाकरा रो भोटा चोढोद थेआ ऐ रोआज आज २ ताई था । कुछ बोरषो पोएले ऐ रवाज खोतम होआ ओसो । तोबे ढाढरो दो देवेऐ चटीओ रो खोज लाओ रो अलोटी, होलो न्हाउलो वण्जड़ी टेली मानले बगाइलो दलेऐं ताई लाओ । दलेऐं आपणो स्थान रेखो । तेनी दो वाद टेली आपणो मोड़ रेख तेरा कोरेओ देवे रा देश बोणा । आज बे देवेरा प्रत्यक्ष देखणे खे फाबो । हर बोरष चोईचो रो शोऊजो री आठवे गलणे रे जात पारम्पारिक देवे रे मेल ओसो । जोबे कोसरे देवे रे देशो दा पोएलका छोटा जाओ तो बाल बढ़ावेओ नौराते माहे जड़ूले देवे रे स्थानों दे काटणे कार ओसो वधावे सोवी दो पोएले दलेंए चोड़ा ओसो । आजबे ऐ रवाज लच्छमणो रे रेखा ओसो । आज वे गीतो रे बोल अमर ओसो ।

दलेंओं गाणो केलिबो न्होउलो रे ठाए डेरी चोन्दी भेखल् सांगे पोहाड़ो खे आए आजबे कुछ कड़ी इओ पाजड़े रे बोलो री गायणों दी गाणे खे फाबे ।

देवे रा देश अल्टी डोलों न्होउलो कूड डिबरे बगाइलो ओसो । देवे रे मानता आखणे ऐ जिन्दे कोण्डे देव आओ हेरो जागरे खे देवे रे पालगे नेज़े छोड़े बोड़े सुन्दर समारोहे मधालू रे घोरे डोओ खूब दाल, पटाण्डे, घीऊ बकरो खाणे खे फाबो ओसो ।

शब्दार्थ

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
1.	जीओ	जिसका	7.	चोइचो	चैत्र
2.	गाची-गाची	कमर-कमर	8.	नोराते	नवरात्रे
3.	डावर	रुका हुआ पानी	9.	फाबो	मिलना
4.	भोईंदा	नीचे	10.	पोएलका	पहले का
5.	भाट	ब्राह्मण	11.	आजवे	आज भी
6.	झोटा	भैंसा			



पोंटू पोंटी री कथा

एक थिया पोंटू एक थी पोंटी। दुईने एकी बोणो में रहिओं थिए। एकी दिनों पोंटिए पोंटू ख बोला जे म्हारे ओस्कली कारेने तू बोणों में जाईऐ मोटी मोटी छीड़ी ले आ। पोंटू त्योंरी बात माने ऐ छीडी लेओणी चला गवा।

सो एकी रीछो रे बोणों में जाई से खूब मोटी मोटी शूकी-छीडी काटणी लागा। छीड़ी काटणी रा शब्द (शाद) शूणी ऐ रीछे जोर दी हाक (धाह) देई रो पूछा—कूण रे तू जु मेरे बोणों में छीडी काटणी लाग रवा ?

पोंटू बोला, मामा ई तो हों असू।

तूं कूण ओसों ? हों असू पोंटू।

तूं मेरी छीडी क्यों काटणी लाग रवा ? भाग एईदा निभांगुए (मारुएं)

पोंटू पेईली तो कुछ डोरा, पौर तेणिए रीछो री खशामद कोरी ऐ बोला, मामा म्हारे घोरे ओस्कली बणावणी। तेनी री खातरी छीड़ी न्हीणी लागरवा।

रीछे बोला, ओस्कली तो त्हारे खाणी। छीड़ी तू मेरी न्हीणी लागरवा। मों का मिलणा ?

पोंटूए बोला, मामा हाम ताईं खे बि ओस्कली दे ओंले।

रीछ खाणे रा लोभी हो ओ। तेणिए बोला, मों किशा पोता चालणा जे तुमें ओस्कली बणा राखी।

पोंटुए बोला जे भालको जब म्हारे गाए खोडा धूंआं चालला तो सोमझ लो जे हाम ओस्कली बणावणी लाग रवे। तोब तू खाणी आ जाई। रीछे बोला, आछा, तोब तू छीडी लो जा। पोंटुए खूब मोटी मोटी छीड़ी काटी, एक बोड़ा सा पूला लाया रो घोरे ख होटा।

रेके दिनों पोंटू रो पोंटिए खूब ओस्कली बणाई रो खूब खाई। खाई पी ऐ तिने एक एक ओस्कली चुल्ही रे अगले रो पाछले आंवदो पांद राखी एक एक चुल्ही रे दुई नाको पांद, एक चुल्ही री खेडली दी, एक घोरो में भुईदी रो एक द्वारो पांद। तोब तिने चुल्ही दे खूब शूके सोने छीटे भोरी रो भण दिया रो आपी सुतणी चले गवे। पोंटू तो एकी तूम्बड़े दा बोड़ गवा रो पोंटी चाकी गोले में बाड़ि रो सुत गोई।

रीछे जोब खोड़ा धुआं चालदे देखा तो सो ओस्कली खाणी रे चाव में पोंटू रे घोरे री काहनी चाला। घोरे पोंहची ऐ तेणिए देखा जे तेथ कुई बिनी एंथी रो दू चार ओस्कली घोरो में जेगा जेगा राखी होई ओसों तेणिए धाओ दी।

रीछो री धाओ शुणी रो पींटू रो पींटी चुप हो गोए। थोड़ी देरी में पींटू पादणी लागी। तेणिए सूले शी पींटी खे बोला जे मी पादणी लागी। पींटिए बोला जे सूले शी पादी बाहरो रीछ ओसो। पारे पींटू रे हुड़िए (खूब जोरे) पादिया जेदिए तुम्बड़ी फाट गोई। तुम्बड़ी फाटणे री बाज (शब्द) शुणी रो रीछ डोरी रो भाग गवा। तेसरे घोरो में राखी होई ओस्कली बि नि खाई।

जोब रीछ भाग गवा तो पींटू रो पींटी बाइण्डे[42] निकल् रो खूब होसे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
1. पींटू	एक कल्पित लघु प्राणी खूब खाने पीने वाला
2. दुईने	दोनों
3. बोणों	जंगल में
4. ओस्कली	सिरमौर में त्यौहार अथवा शुभ अवसरों पर चावलों के आटे से बनाया जाने वाला एक स्वादिष्ट भोजन
5. छोड़ी	सूखी जलाने की पतली-पतली लकड़ियां, ईंधन
6. त्यों री	उसकी
7. ले ओणी	लाने
8. शाट	आवाज़
9. हाक (धाह)	जोर से पुकारने की आवाज़
10. ओसूं	[मैं] हूं
11. झांगुएं	मारूं गा पीटूंगा
12. तेणिए	उसने
13. खशामद उई खुशामद	मिन्नत समाजत
14. घोरे	घर में
15. मी	मुझ को
16. ताईं ख	तुझ को
17. लोबो	लालची, लोभी
18. भोलको	आने वाला कल
19. खोड़ा धुंआ	खड़ा, ऊंचा उठने वाला धुंआ
20. पूला	लकड़ी या घास का गठ्ठा
21. होटा	वापिस आया
22. रेके	दूसरे
23. आवंदों	चूल्हे के आंच निकलने के छेद
24. नाको	चुल्हे के सामने का ऊपर का कोण नुमा भाग
25. खेड़ली	चुल्हे की हद प्रकट करने वाली भूमि के साथ लगने वाली गोल बनी ऊंची मेंड जहां तक चुल्हे की राख फैली रहती है
26. भुंईदी	नीचे
27. द्वारो	दरवाजे पर
28. शूके सीने	सूखे तथा गीले
29. छीटे	लकड़ी की पतली-पतली छड़ियां
30. भेण	खूब ईंधन डाल कर अग्नि को प्रज्जवलित करना जिस में से आग की लपटें और धुंआ साथ-साथ निकल रहा हो
31. सूतणी	सोने, नींद लेने
32. तुम्बड़ा	तूम्बा
33. चाकी	चक्की के ऊपर पाट का वह तंग गोल भाग जहां पीसने के लिए अन्न डाला जाता है
34. काहनी	ओर, तरफ
35. नेथ	वहां
36. जेगा	स्थान
37. ओसों	हैं
38. सूले	आहिस्ता से
39. हुड़िए	जोर से
40. जेदिए	जिस कारण
41. बाज	आवाज़
42. बाईण्डे	बाहर की ओर

एक थिया साहुकार

एकी गांव दा एक साहुकार रोंअ थिया । मां बाबा तेसके मरी गोवे थिए । पाछु तिनका आठी आदमि रा कुड़बा थिया । जिनु मुँजी तीन तेसके भाइ, तीन तिनकी तिरोंइ एक आपू रो एक तेसरी आपणी तिरोंई थी । घरो रा काम खूब धूम धड़ाके शा चाला हंदा थिया । फर्क सिर्फ एतौड़ा थिया जे तीअन्ने भाई आपणे बड़े भाई शे खुश नी थी । क्यों के सी आपणी तिरोंई का गुलाम जिया रोंअ थिया बणा हंदा । इयो बातो लोई सी नराज थिए । तिनुवे एक देस आपणी एक खुमली करी रो आपणे बड़े भाई खे बोलो जे या तो तु आपणी तीरोंइ री गुलामी करणी छोड़ी दे ओरो या तु घरो शा निकली जा । लो महाराज जु घरो भीतरा सेयाणा थिया, जेसको घर थियो, तेसी खेइ सी घरो शा निकाल दे लागी रोवे थिए । परो भई जिथे सी बड़ा भाई आपणी तिरोंइ रा गुलाम थिया तिथे ओकी ढब्बे सी भोतई आच्छे सभाव रा थिया । तेने बोलो जे मुखे घरो शो निकली जाणो मंजूर असो । परो हाँव तुवो सोब्बी खे खुश देखणे जाऊं । लो जी बड़ा भाई जेसीखे साहुकार बोलो थिए सी आपणी तिरोंइ सीअता घरे शा आपणे भागो री खोजो दा निकली गोवा । जाणो तिनके कोइके थियो ए पता कोसीइ कोई बी नी थी । आपु बी तेसकाई एजा पता नी थी जे आमोर कोंइके जाणो । दुइने जणे चालदे रोवे चालद रोवे हारी खड़ीइबा सी बिशा करदे एकी डाली मुली बाइशे । तेसकी तिरोंइ बी बोइशी गोई री सी बी बोइशी गोवा एगोड़ी तिनुवे आपस मुँजी बातो लाई ओरो बातो वाअदूं २ दुइने जणे तेसी डालो मुली सुतो गोवे । दुई खे एशी नींद आई जु इयों जाणी थियो जे पता नी ए मखमलो र बछाणे गाशी सुतो रोवे । बख्तो रा फेर कुछ एसा पड़ा जु तेतीए खे काअ हो जे तेसी डालो रें खोंगरो शा एक दानव निकला जेने तेसी साहुकारा की तीरोंइ दा डंग मारा । तिरोंइ खे नींद एशी आई रोई थी जु तीयो कोई बिल्कुल बी पता नी लागी । रो तेशखेइ सुतोई सुतो हंदी मरी गोइ । तियोंरी री आखी कोउवे खाई पाई । एब्बे जी आगे काअ हो जे तेतीए खे साहुकारो री नीज बी खोली गोंई । सी ऊबा बिउजा अण्डो पुण्डो तेने देखो । देखो काअ जे तेसकी तिरोंइ मरी गोइ थी । लियो री आखी कोउवेए खाई पाइ थी । लो जी जबे तेनीए आपणी तिरोइ रे एशे हाल देखे तो सी तो लागा जी लेअरो मारदा । रोई रोई रो तेसकी आखी बी ऊशाई गोइ । परो भइ एब्बे जु मरी गोइ थी तिओंखे कुण लेआंदा थिया पाछु । सी तो मरी गोई थी । खयर जी तेने साहुकारे सोचो जे एब्बे ए तो मरी गोइ परो मेरे बी इयांइ आरी मरी जाणो । तेने लाकड़ी लुकड़ी कठी रो ढेरी लाई दी । बख्तो रा रेका मोड़ आया ।

शिबजी रो पार्वती जी घुमदे फिरदे आए। पार्वती जी ए तेसो डालो मुली देखो। तो सी एकदम रूकी गोई। तिये शिबजी खे बोलो जे इनके हाल चाल पुछो। शिबजी ए बोलो जे हे पार्वती ए दुनियादारी भोत लाम्बी चौड़ी असो आमे कसी-२ की देखभाल करदे। ए तो आपणें-आपणे कर्मो रे फल असो जेशो कोबे बोअला तेशणोई काटला। पार्वती बोलो जे हांव तो इथेशी आगे एक कदम नी राखदी पयले इनकी पूछताछ करो तबे जाइरो आमे इथे शे आगे जाऊंगे। शिबजी खे रूकणो पड़ो। क्योंकि सी जाणो थिये जे पार्वती एब्बे आपणी जीदो पांदी अड़ी रोई। इंयो आशे एब्बे ज्यादा टेग्रड़ करणी बेकार असो। शिबजी रो पार्वती तेसी साहुकारो कांई आये रो तिनुवे तेसी खे पूछा जे भई तु किदे खे बोइशी रोवा माथे पाण्डा हाथ लाइबा। तेनीए बोलो जे महाराज माथे पाण्डे हाथ एब्बे बी लाअणी नी? तिरोंइ तो मेरी मरी गोई जु मेरे सोब्बी शी प्यारी थी। पार्वती जी ए बोलो जे शिबजी महाराज करो कुछ लाज। शिबजी ए बोलो जे देखो पार्वती जी इंयो री उम्र पूरी हयी गोइ थी, यानी शामल कामल चुकी गो, तो तबे ए मरणीइ थी। पार्वती जी ए बोलो जे भांव कुछ बी हयी रो हलो, परो इंयो खे जीवंदी करी दे। शिबजी लागे बोलदे जे एक ही बाट असो एब्बे, सी बाट असो एशो जे साऊकारो खे आपणी आधी उम्र इंयो खे देणी पड़ली तभे जाइरो एसकी तिरोंई तुवे जीवंदी हई सको। साहुकारे बात मानी पाई रो बोलो जे हे महाराज मेरी तिरोंइ तुंवे जिवंदी करदो देव मुखे भांव आपणी जान बी देणी पड़ी जांव, हांव तो जान देणो खे बी त्यार असो।

शिबजी ए बोलो जे तु आपणे हाथो दा पाणी का लोटा कअर रो एशेखे बोल जे, हे भगवान मेरी आधी उम्र मेरी तिरोंइ खे लागणी चेइं। लो जी साउकारे एशेखेइ पाणी का लोटा हाथो दा किया रो तेशखे बोली दियो। बोलणो की देर थी तेइ तेसकी सी तिरोंइ जीवंदी हई गोई। शिबजी रो पार्वती चाली पड़े आपणी बाटो दे। औरो ओकी ढब्बे सो साहुकार रो तेसकी रांगडो बी चाली पड़े आपणी बाटो दे। चालदे-चालदे सी एक गांव दे पोंउचे। तेसीगांव दा एक साधु रोअं थिया जु कि भोतई आच्छा एकतारा बजावं थिया।

लो जी आगे बात केशी हयी जे साहुकारो री तिरोइ का साधू आरी प्यार हई गोवा। एशेखेइ कंयो देस तुड़ी बातो चालदी रोइ परो तेसी साउकारे कांई इयो बातो रा कुछ बी पता नी थी। सी जाणो थिया ऐशेखे जे मेरी तिरोइ बी एब्बे भगवानो री भक्ती दी लागी रोइ। एक देस तेसकी तिरोंइ ए साधू खे बोलो जे हांव तांव आरी आणो चांऊ। साधु ए बोलो जे औरो तेरा मालक कोइके जाला। तिये बोलो जे इंयो बातो खे नी तु तड़पीया, हांव एसीखे मारी देउबी रो तेई तु रो हांव आपणी जिन्दगी हसी खेलियो काटुबे। लालची साधु बी इंयो बातो खे त्यार हई गोवा। तिनुवे आपस मुंजी बात चीत लाइबा सारा प्रोगराम त्यार किया जे केशेखे हांव एसीखे मार बी रो तबे आमे दुइने जणे कोइके भेटीउगें।

लो जी पाक्के ठाअक्के वादे हयी गोवे । साउकार रो तेस की तिरोंइ एब्बे तेसी गांव शे बी चाली पड़े । चालदे-चालदे सी एकी पाणी रे कुंए कांई होटे जिथे सी दुइने जणे बिशाव करदे बोइशी गोवे । काफी देर तुड़ी बोइशणो बासीए तेसकी घर वाली ए बोलो जे मुखे पाणी ले श्रांव पीणो हो । तेने बोलो जे तु ई जा श्रौरो तुई लेश्राव पाणी । सी गोई भाजी जे हांव ए डअरू कुंवे श्रदो जाणो खे । हां एशेखे कोरूबे जे श्रागे-श्रागे तु जा कुँवे ऊदा रो पाछे शी हांव आंऊबी । साऊकारे बात मानी पाई रो भोला भाला साऊकार कुवे मांय जाणो खे त्यार हयी गोवा । तेसीगे काश्र पता थिया जे मो श्रारी काअ छल कपट असो । साऊकारे कुवे भीतरा उतरी गोवा पाणी लेश्राणो रो तेंइ गयल पाछे शी तेसकी तिरोंई बी तेसी आशे थी । जेइ साऊकार पाणी निकालणो री खातरी ऊदा निउड़ा, तेइ तेसकी तिरोंइ ए तेसदा धाक्का दिया रो साधु सीअता किया हंदा वादा तिये पुरा किया । एब्बे सी बडी भारी खुशीथी । आपणो टअल करीयो सी कुवे शी ऊबी निकली रो बायरे श्राइ गोइ । श्राज तियों के एशो जाणीइ रो थियो जे मुखे श्राज नोइ जिन्दगी भेटी रोइ । सी बडी भारी खुश थी । तियोंगे बी पता नी थी जे ए थोड़े देसो री खुशी एक देस तियों खे सदा-सदा खे मिटाइ देली । सी तिथे शी चाली पड़ी तिथे खे जिथे तिये साधु श्रारी मिलणो रा वादा करी थोवा थिया । साधु एकतारा बजाव थिया रो सी नाचो थी । एशेखे तिनुवे सोब्बी खे मोई राखे थिए । रजवाड़े मोय तिन की बडी भारी इज्जत हंदी लागी । राजा बी तिनके नाच गाणे पांदी मोहित थिया । राजा ए श्रापणे रजवाडे मांय तिनुखे एक घर बी देइ राखो थियो, रो तिनका गुजारा खूब खड़ाके सीश्रता चाली रोवा थिया ।

ओकी ढब्बे जेसी कुवे मांय साऊकार थिया । तेसी कुवे कांई तीन चार भेड़ वाले आये । जु कि श्रापणी भेड़ो श्रारी तिथे बीशांव करदे बोइशी गोवे । बोइशी-बोइशी बा तिनुवे सोचो, जे पाणी तो इथे श्रसो इ ए, क्यो नी खाणो खे बी इथोइ बणायो जाव । तिनुवे श्रानणी सोंपोश्र की बुरी खुली रो श्रापणा खाणो वाणणो रा समान निकाली बा सामणे राखी दिया । एब्बे होटा बे एक भेड़-वाला पाणी खे । तेने बाल्टी पागोंइ दी बानी रो तेइ कुवे ऊदी छोडी दी । जेइ सी बाल्टी कुवे भीतरी होटी एकदम साउकारो की पाची तियो बाल्टी दी पड़ी । भेड़वाला बाल्टी ऊबे खे खोंइघो परो तेमके सी बाल्टी नी खोंइचीयों । तेने श्रापणे श्रोकी साथी खे धाव दी जे देइ ऊण्डोड़े श्राव ए बाल्टी तो कोथी एशी श्रड़ी गोई जु ऊबीइ नी खोंइचीदी । दो भेड़वाले श्रोके आये । तोइ ए जबे जोर लाया तो समेत साऊकारो सीअती तिनुवे बाल्टी खोंइची पाई । आगे तो सी तेसी आदमि खे देखियो डरी शे गोवे । परो जबे तिनुवे तेसका शरीर छुजा तो पता लागा जे तेसदा एब्बी थोडा शा सास रोइ रोवा । तिनुवे श्रापणा बिछाणा बिछाइबा तेसी खे बिछाणे पान्दी सुताली दिया । बिस्तौड़ा तेसी साऊकारो दा होश श्राया ओरो सी ऊबा बिउजा तेई बोइशी गोवा ।

एब्बे सी भेड़वाले तेसी खे पुछदे लागे जे तु कूण तो तु श्रसो ए कोइके शा

तु श्राइ रोवा रो तेरे जाणो कोइके थियो। साऊकारे श्रापणी दुख भरी कथा तिनु लोइ शुणाइ। जे श्रामे चार भाई थिये रो हांव श्रापणी तिरोंइ का गुलाम थिया क्यों के सी मेरे भोतई प्यारी थी। तियो पाछे मुखे घर बार छोड़णा पड़ा। भाई श्रारी बुरो बणणो पड़ो। श्राने घमदे फिरदे एसी कुंवे गाशी विशांव करदे बोइशी रोवे थिए। तिये मुखे बोलो जे तु कुंवे शा पाणी निकाल पीणो खे रो हांव बी तांव सोश्रती गयल श्रांऊबो। जबे हांव पाणी निकालदा ऊदा निउड़ा तो तिये मो दा धाक्का दिया रो मुखे तो पाया कुवे भीतरो रो आपु पता नी कोइके होटी हली। भेड़वालेए तेसकी सब्बी बालो शुणी शाणी बा, तेसी लोइ रोटी खेश्राइ दी रो तेसी खे बोलो जे तु एब्बे पाछु जा आपणे घरो खे तिरोंइ रा भरोशा नी करणा चेइ। तेने साऊकारे रोटी राटी खाई रो चाली पड़ा राहण्डा श्रापणो बाटो। बाटो पुण्डो सी सोचदा लागा जे मेरे भाई साच्चे थिये। देसी के दोपाहरे सी एकी गांव दा पोंउचा सी गाव सेजाई थिया राजे का रजावाड़ा जिथे सी साधु रो तिसकी तिरोंइ थी। गांव मांय तेसी साधु रा रो तियो रा नाच गाणा हंदा लागी रोवा थिया। सब्बे लोग नाच गाणे देखणो खे कअठे हयी रोवे थिये। साऊकार बी बचारा तिथे पोंवची गोवा रो एक ढबा खलीइबा सी बी तमाशा देखदा लागा। श्रागे बात काश्र हयी जे नाचदू नाचदू तेसकी तिरोंइ री झ़ेठ साऊकारो पांदो पड़ी। देखीबा सो हयरान हयी गोइ जे एसी खे तो मोवे मारी दिया थिया। ए पाछु केशेखे श्राया हला खयर जी। तिये काश्र किश्रो जे तलोइ राजा काई होटी रो तेसी साऊकारो के बारे माय तिये राजा काई चुगली लाई जे ए एक भोतइ खतरनाक श्रादमी असो। राजा बी तियो पांदो मोहित थिया। तेसीखे तियोंरी बात मानणी पड़ी। राजा ए बोलो जे तु काश्र चाए। तिये बोलो जे एसो साऊकारो खे फांशी देइ देव। राजा ए बात मानी पाई। दुजे के राजा रे दरबारो मांद साऊकार साधु रो सेजो तिरोंई बी हाजिर थी। इतके श्रलावा रजवाड़े रे सब्बे लोग बी तीथे कअठे हयी रोवे थिए। साउकारो खे फांशीं देणो रा इन्तजाम बिल्कुल त्यार थिया। राजा ए साऊकारो खे बोलो जे तु कुछ एब्बे श्राखरी बेइ बोलणो तो नी चाए। साऊकारे बोलो जे महाराज मेरी इयो तिरोइ काई एक चीज श्रसो हांव सी चीज मांगणी चांऊ। तेसकी तिरोइ ए सोचो जे या तो एसके कांगणी मागणी हामीया कुछ रूपीया पयसा मांगणा चांव हलां। राजा ए तियो की ढब्बे देखो रो बोलो जे तांव कांई जु एसरी चीज श्रसो, तीयो चीज पाछु देणो खे तु त्यार श्रसो। तिये बोलो जे महाराज जु बी एसकी चीज मो काई श्रसो हांव देणी खे त्यार श्रसो। राजा ए साऊकारो खे बोलो जे हां साऊकार जु तेरी चीज इयो काई श्रसो तु एब्बे मांगी सके। साऊकारे बोलो जे महाराज इयो रे हाथो दा पाणी रा लोटा देव रो पाणी का लोटा हाथो दो करीयो इयो लोइ बोलाव जे, हे भगवान जु एसकी चीज मो काई श्रसो मोवे एसी खे पाछु देइ पाई। तोये हाथो दा लोटा किया रो बोलो जे, हे भगवान एसकी जु बी चीज मो काई श्रसी सी मोवे श्राज एसी खे पाछु देइ पाई। बोलणो की देर थी रो सी तिरोंइ धोइना सुती गोइ। जबे तियोंखे देखदे लागे तो तियों रे प्राण निकली गोवे थिए। सी सुतो गोई थी सदा सदा री तेंई।

इयो कथा लोइ श्रामोखे शिक्षा भेटी जे जेशे श्रादमि के कर्म हुंव तेशणाई तेसी खे फल भेटो। श्रादमि खे श्रापु पांदी घमण्ड नी करणा चेइं रो नी हो कोसी धोका फेरब करणा चेइं। रेके री बुराई करीयो आदमी श्रापु खेइं बुराई मोल लोंव।

शब्दार्थ

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
1.	कुड़वा	परिवार	22.	जेशो कोवे बोश्रला तेशणोई काटला	जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा
2.	तिरोइं	श्रौरत	23.	टश्रड़	उलझना (या) बहस करना
3.	धूम घड़ाकेशा	धूम धाम से	24.	शामल कामल	दाना पानी
4.	तिश्रन्ने	तीनों	25.	रांगड़ी	साहसी श्रौरत
5.	देस	दिन	26.	मालक	पति
6.	खुमली	पंचायत	27.	तड़पीया	तड़फना
7.	सेयाणा	ठगड़ा (श्रक्लमंद)	28.	भेटीऊगों	मिलना
8.	सीश्रता	साथ	29.	भाजी	इनकार करना
9.	तेसकाई	उसे (या) उसके पास	30.	निउड़ा	नीचे झुकना
10.	हारी खडीइबा	हार थक कर	31.	टश्रल	काम
11.	विशांव	श्राराम	32.	भेडवाले	भेड़े चराने वाले
12.	डालो मूली	वृक्ष के नीचे	33.	सोंपोश्र	सामान
13.	एगोड़ी	एक घड़ी (कुछ समय-तक)	34.	खोंइचो	खींचना
14.	वातो लाश्रंदू-लाश्रंदू	बातें करत करते	35.	धाव	श्रावाज
15.	खोंगर	कोटर	36.	सुताली	सुलाना
16.	दानव	सांप	37.	बिस्तोड़ा	कुछ समय बाद
17.	नीज	नींद	38.	कोईके	कहां
18.	ऊबा बिऊजा	ऊपर उठना	39.	कुंवे गांशी	कूंए के ऊपर
19.	ऊण्डो पुण्डो	इधर उधर	40.	देशो के दोपहरे	दिन को दोपहर के समय
20.	लेश्ररो	जोर जोर से रोना	41.	खलीइबा	खड़े होकर
21.	ऊशाई	सूजना	42.	झंठ	नजर
			43.	कांगणी	श्रंगुठी (मूंद्री)

शिरगुल देव की कथा

सिरमौर जिले री मानी हुंदी रो मशहूर चूड़ धार भला कूण नी जाणदा। दूधो साइ चिटीए धार, गयणी खे छुइणो वाली धार; जड़ी बुटी री धार, लोगो रे मनो खे लुभावणो वाली धार रो देव री पवित्र चूड़ धार कूण नी जाणदे। जिनुवे ए धार देखी राखी सी हजो जाये बिना नी रोग्रइ सकदे रो जिनुवे ए धार आखी लोइ तो देखी नी राखी परो चूड़ धार रे वारे मांय जाणकारी जरूर हांसिल करी राखी सी चूड़धार जाये बगैर नी रोइ सकदे।

शिरगुल देव रा एक मन्दिर चूड़धार रे टिब्बे गाशी बणा हुंदा असो जिथे हर साल लोग शिरगुल देव रे दर्शन करणो री तेई जांव ओरो आपणी सुखना पुरी करो। शिरगुल देव री कथा एशेखे बेताइ जांव जे एकी बेइ शिरगुल देव रे सासो दी आवड़ी जे मेरे दिल्ली खे जाणो। सोच बचार करीयो एक देस शिरगुल दिल्ली खे ऊचली गोवा। तलो मोटर गाड़ी तो कुछ बी नी हुंव थी पता नी पयदल इ होटा हला। खैयर जी शिरगुल जी महाराज जेशे केशे बी दिल्ली पोंउची गोवे। बेताओ जांव जे तिनु आरी पांच छोअ ओके हाटो वाले बी थिये। एक दो देस दिल्ली सी घूमदे फिरदे रोवे या एशेखे समझो जे सी सेयल सपाटा करदे रोवे। सेयल सपाटा करणो बासिये, सी जु शिरगुल आरी हटी आई रोवे थिए सी घरो जाणो खे तड़फी रोवे थिए। तिनुवे शिरगुल देव खे बोलो जे आज की रात तो आमे जेशी केशी आगु काटुबे परो दोती आमारे सोअदा पाता लोअणा रो तेई जाणो दोतीइ इथे शो पाछु घरे खे। घरे बी तड़पी रोवे हले। रात जेशी केशी काटी पाई। दुजे के सी सूरजो री किरणो आरी ऊबे बिउजे। थोड़ा भोउता नीना नुन्ना किया। तेइ सी शिरगुलो आ री सौदा पता लोअंदे बोइजरो दे निकली गोवे। कुणिये गुड़ लोवा कुणिये आपणे कुड़बे खे खटाणो री तेइ कपड़ा लोवा। खैयर जो तिनुवे सअब्बे समान लोइ पाया थिया बस नूण रोइ रोवो थियो लोअणो खे। एकी बाणिये री दुकानी दे नूण लोवदे बोइशी गोवे। भाव की बातचीत आगेइ हुई गोइ थी परो तिनके एकी बातो पादी टअली गोइ सी बात थी एशी जे जेइ बाणिया नूण तोलदा लागी रोवा ओरो तेने एकदम ताखड़ी दा डाण्डो मारी। बस जो तबे काअ थियो शिरगुले तेसीखे डाण्डी मारदी बेइ देखा पाया थिया। शिरगुलो दो कुछ एशी झोक आई दो पड़ताले लाये बाणिया दे रो हाथो शी ताखड़ी ऊण्डी करी रो आपू लागा नूण तोलदा। बाणिया ए काअ कियो जे तेतीए खे गली बेअड़े रे लोग कअठे किये ओरो जी तिनु हाटी री तो आच्छी मार कुटाई हुई गोइ परो शिरगुलो पाण्डा हाथ लाअणो री कोसीई की बी हिम्मत नी पड़ी। सेजे जु राहण्ड़े हाटी थिए तिनुवे बोलो जे आमोरन तो नूण चेई रो बाकी जु आमे सौदा पाता लोई थोवा एजा बी त्वारे पाछु करणा तो पाछु करो परो आमोखे छोड़ी देव। लो जी तिनुवे तो आपणे पिंड प्राण अर्ज करीयो छोड़ोई पाये। तेइ सी सबवो जणे शिरगुलो खे छोड़ीयो घरे खे आये। शिरगुल एकलाई दिल्ली रोवा।

जबे सी हाटी घरे पोंउचे तो तिनुवे दिल्ली री बिरथा सअबे शुणाई दी। लोग हयरान हयी गोवे जे शिरगुल केशेखे रोई गोवा एकलो पाछु। लोगे शुणी राखो थियो जे दिल्ली मांय राकोअस रोव। जितके कारण कोसांइ की बी एशी हिम्मत नी पड़ी जे दिल्ली जाइबा आभें शिरगुलो खे पाछु लेआव।

लो जी शिरगुल बीच मोइदानो दा बोइशा रो तेने दुई लातो का चुल्ड़ा बणाया। दुई लातो रे बीच आग बालिबा गाशे खीरो का पतीला धरी दिया। एशेखे जबे राकशसे देखो तो सी बड़े भारी हयरन हई गोवे जे ए कूण हला एशणे तप वाला। परो तिनके सासो दी तो एकई बात अड़ी हंदी थी जे एसरी आमारे सामणे एशणी हिम्मत केशेखे हुई गोई। सासो ऊदे सबबोई जणे डरी रोवे थिये। परो सामणे जाणी री हिस्मत कोसीइ दी नी थी। एकी राकशसो दी झोक आई सी होटा तेने खीरो के पतीले दी लातो की लाई। बेतायो जांव आधी खीर धोइनो पुण्डी ढली जिथू लोई आधी दिल्ली फुकीइ गोइ। लो जी एब्बे तिनके बात फशी गोइ जे एसीखे केशखे काबू किया जांव। आखिर में जबे तिनके कुछ बी दाब नी चालो तो तिनुवे आअ किओ जे चाम्बड़े की डोरो बणाई एक लाम्बी शी, रो दूर शी सेजी डोर सीदी फेरकाई जु कि शिरगुलो रे गलो दी पड़ी। लो जी तियो चाम्बड़े को डोरी रे कारण शिरगुल तिनके काबू दा आई गोवा। तिनुवे काअ किओ जे शिरगुलो खे सातो कोठड़ी भीतरा बन्द करी दिया ताकि शिरगुलो का अता पता कुछ नी लागी साको। बायरे लाई दिया पअरा। एब्बे शिरगुलो के छुटणो चापरी गो। गोचदा लागा जे कोरू तो कोरू परो काअ कोरू। कयो किस्मो रे बचार सासो दे आये। हठी-हठी शिरगुलो खे एक बाट भेटी। शिरगुलो खे बात आई जे बागड़ देशो माय गुगा देवता असो जु कि एसी बख्ते मेरी मदद करी सको। शिरगुले चाउलो रे दाणे मंतरे ओरो कयदी खाने शे सेजे मंतरे हंदे चाउल बाईण्डे फेरकाए। शिरगुल देव दा कुछ एशा सत थिया जु सी मतरे हंदे चाऊल बाईण्डे फेरकाए तलोई बागड़ देशो माय गुगा जी खे पता लागी गोवा जे शिरगुल देव कोथी मुसीबतो दा असो पड़ा हंदा। बिस्तोबड़ा गुगा कोई एजा बी पता लागा गोवा जे शिरगुल देव दिल्ली कयदी खाने दा असो। पता लागणो री देर थी, तेई गुगा महाराज जी शिरगुलो री मदद करदा चाली पड़ा।

चूड़धार शिरगुलो रे मंदरो आरी शिरगुल देव रा भअड थिया जेसको नाव थियो चूअरू। चअरू का काफी बड़ा कुडबा थिया। तेसी काई जबे शिरगुल देव री विपता रा पता चाला तो सी बी दिल्ली आणो खे त्यार होवा। परो तेतीएखे काअ हो जे तिनु राक्षसे कुछ एशा खेल किया, एशा करीश्मा किया। जितके कारण चुअरू दिल्ली खे नी आई सकी। हो काअ जे चुरू का कुड़बा दानोव ए एशा घेरी दिया जु तिनके छुटणो चापरी गो।

आच्छा ओकी ढब्बे गुगा देव बी दिल्ली पोंवची गोवा परो सी जोअंदे-जोअंदे हारी गोवा परो तेसीखे शिरगुलो रा बिल्कुल बी कोथी पता नी लागी। क्योंकि दिल्ली सोब्बी खे बोलो थो थियो जे कुणिये बी शिरगुल देव रा पता दियो तो

तेसका काल बी सामणे असो । इयो बातो की डअरो के सबवों जणे चुप्पी थिए । कोवे बी शिरगुल देव रा पता नी बेताव थिया । जेसोखे बी पुछी, सेजाई एशो बोलो जे आमो काई नी आथी पता । गुगा देव रे बी बात कुछ उलझी शी गोइ जे एब्बे काअ करी । केशखे लाई पता जे सी कोइके असो ।

बख्तो री बात असो—बोलो बी असो ए जे बुरा बख्त आंदी बई बी देर नी लागदी रो जबे आच्छा बख्त आणा हंव तवे बी देर नी लागदी । यानी के आच्छा बख्त आणो रा कोब्बी पता नी लागदा । जेशखे एशो बी बोलो ए जे जबे किस्मत सीदी हंव तो छाप्पर ऊपड़ोबा बी रूपीया की वर्खा लागी जांव ।

बात केशी हई जं जेसी कयदी खाने दा शिरगुल देव थिया तेसी कयदी खाने बायरी एक भांगण झाड़ू लांअदी आंव थी रो तियों कांई शिरगुल देव रा पूरा भेद थिया ज शिरगुल तेसी कमरे दा असो बना हंदा । ओकी ढब्बे शिरगुल बी बड़ा भारी तड़पी गोवा थिया । तेने जाणो जे एसी बख्तो खे गुगा तो आणा चंई थिया । पता नी काअ बात हामी जु सी एब्बी तुड़ी बी पोंउची नी । शिरगुल जाणो जे काअ पता ए तेसी खे बी इनुवे बानी दिया हला या तेसी पांदी बी कुछ मुसीबत आई गोइ हानो । शिरगुल देव आपणे सासो ऊंदी एशी-२ बातो सोचदा लागी रोवा थिया । बायरे काअ हों जे तेतीए खे गुगा कांई कयदी खाने रा तो पता चालो गोवा, परो शिरगुल देव कोसो कमरे दा असो एजा पता एब्बी तुड़ी बी लागी नी राइ थी । गुगा देव कयदी खाने शा दुरकोड़ा पात्थरो पांदो बोईशीबा सोच बिचार करदा लागी रोवा थिया । एकदम तेसरी नज़र कयदी खाने बाईरा एकी तिरोंई कांई होरा । आगे तो सी तिरोंइ तेसदी डरी गोइ परो जबे तेने एशोखे बोलो जे हांव गुगा देव आसो ओरो हांव शिरगुलो खे छोड़ोंदा आई रोवा । तबे सी भाँगंण कुछ सतीइ शी गोई आगे सी अण्डो पुण्डो लागी देखदी । तबे चुप्पी खलीइ गोई । गुगा ए तियं खे बोलो जे तु मोअ कांई एजा भेद देई दे जे शिरगुल देव कोअसी कमरे दा असो । ओरी तु कियोंइ बी बातो खे नी डरीया तेरी रक्षा हांव आपू करुबा । भांगणी ए बोलो जे हे गुगा देव एलो तो मोवे एब्बे झाड़ू देई पाया सारी खे तु एशेखे करीया जे दोती आया एसी बख्तो शा आगोड़े रो जबे हांव झाड़ू देंउबी तु दुरके शा देखदा, हांव जबे तेसी कमरे पाछी झाड़ू देउबी जेसी कमरे दा शिरगुल असो तो तलो हांव तींयो भीती पाण्डा झाड़ू लांउबी रो तु समझी पाया जे एशीइ कमरे दा असो शिरगुल देव । लो जी एब्बे गुगा देव रा तारीक दुजे का लागा । इदी कुछ बी शको री बात नी थो जे बाट पुरी करीयो सुखाली बणी गोई थी । गुगा देव ए रात जेशी केशी काटी रो झीअशीइ दा कयदी खाने बायरा आई गोवा । भांगण बी आपणे ठीक बख्तो पांदी आई गोई । सी झाड़ू देंदी लागी रो गुगा तियों खे दूर शा देखदा लागा । जेई भांगण शिरगुल वाले कमरें कांई पोंउची तेइ तिये भीती पाण्डा आपणें झाड़ू भोई इशारा किया । गुगा देव समझी गोवा जे एजाइ कमरा असो गुगा देव ए आव देखी नी ताव सी कमरे की भीती पाछी होटा औरो तेंने पाछु बिआली शी एक खिड़की चुडी रो तेइ तियो खिड़की बाढी सीदा कमरें भीतरा पोउचा । जिथे शिरगुल देव तोसी खे

ठअलदे ठअलदे हारी गोवा थिया । शिरगुले बोलो जे एतौड़ी देर तोंवे कोइके लाई। गुगा ए बोलो जे एतौड़ा बख्त नी आथी बात बेताणो रा एब्बी तुंवे आपणे हाथ करो ऊण्डे खे । शिरगुले आपणे हाथ गुगा की ढब्बे किए । तेइ गुगा ए शिरगुलो रे हाथो दी बानी हंदी चाम्बड़ री डोर आपणे मुंहो लोई काटो दी रो शिरगुलो पांदी गंगा जल छिड़की दियो । तेइ सीं दुइने जणे कयदी खाने शे बायरे निकले । बायरे आये तो देखो काअ जे भांगण बी राहण्डी तेथीइ थी खलीइ हंदी । गुगा ए शिरगुलो खे बोलो जे ए असो एक भांगण जिये मोअ लोइ त्वांरा कमरा बेताया नेइ तो मुखे बिल्कुल बी पता नी लागी सको थिया । ए एक भांगण असो जियों खे लोग नीच जाति री नजरो लोइ देखो । शिरगुले बोलो जे आच्छा ? शिरगुले भांगणो खे बोलो जे हे देवी तु एलो शी ऊबी मेरी बोइण असो आज तुड़ी लोग ताखे नीच जाती री समझीयो नफ़रत करो थिए । परो एलो शी ऊबी लोग तेरी पुजा करीया करले । लो जी गुगा देव तो इथे शा पाछु होटा बागड़ देशो खे रो शिरगुल रो भांगण चूड़धार खे चाली पड़े । जबे चूड़धार रे नोंजीइक पोऊचे तो शिरगुले काअ देखो जे तेसके भअड़ो रा कुड़बा तो दानोव ए घेरी घारीबा ढांगो रे मेयालो गाशी पो लेआई थोवा । शिरगुले तलोइ शोरू की बखो करी जिथु लाइ दानोव तो मरी गोवे रो चुअरू का कुड़बा बची गोवा । आज बी जे कोवे चूड़धार जांव तो तीथीइ ढांगो पांदी चुअरू रा कुड़बा पात्थरो के निशाणो सीअता बणा हंदा असो । जबे शिरगुल देव आपणे मंदरो दा पोवची गोवा तबे तेने तियो भांगणो खे बोलो जे हे बोइण ताखे आज शे ऊबे लोग भगांयण देवी रे नाव लोइ मनाले रो तेरी पुजा करले । इग भगांइणी आज बी भंगायण देवी रा मन्दर बणा हंदा असो जिथे हर साल भंगायण देवी रे नाव का मेला बी मनाया जांव ।

एशेखे शिरगुल देवते राक्षसो का तो नाश किया रो छुआछूत रे भेदभाव खे मिटाइबा छुआछूत रा कलंक सदा सदा खे मिटाई दिया ।

शब्दार्थ

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
1.	टिब्बे गाशी	ऊंचे पर्वत पर	11.	बिरथा	गाथा
2.	सुखना	मनौती	12.	पअरा	पहरेदार
3.	आवड़ी	इच्छा पैदा हुई	13.	चाउल	चावल
4.	ऊचली गोवा	चल पड़ा	14.	तेतोए खे	तब तक
5.	दोती	आने वाला कल	15.	छुटणो चापरी	छूटना मुश्किल हो गया
6.	हाटो वाले	बाजार से जो सामान खरीदने जाते हैं ।	16.	जोंअदे-जोंअदे	ढूंढते-ढूंढते या खोजते-२
7.	सोअदा पाता	घर की सामग्री	17.	कोइके	कहां
8.	नीना नुन्ना	थोड़ा सा नाश्ता	18.	ऊपड़ीबा	उखड़कर
9.	ताखड़ी	तराजू	19.	बाना हंदा	बांधा हुआ
10.	फेरकाई	फंकना	20.	दुरकोड़ा	थोड़ा दूर

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
21. बोइशोबा	बैठ कर	28. पाछु बिम्रलो शी	पीछे से
22. छोड़ोंदा	छुड़ाना	29. ठम्रलणा	इन्तजार करना
23. खलीइ	खड़ा रहना	30. ढांगो के मेयालो गाशी	ढंगार के किनारे पर
24. बख्तो शा ग्रागोड़े	बख्त से पहले	31. शोरू	ग्रोले
25. भीत	दिवार	32. तेथ्थी	वही
26. सुखाली	ग्रासान		
27. भोग्रशीह	सुबह ही		

●

भाई भाई रा प्यार

एक राजा थिया। सी राजा बड़ा ई भागवान राजा थिया। घाईटा शा कुडबा थिया। राणी रो दो बेटे। यानी के चौऊ ग्रादमी रा तिनका कुडबा थिया। राजा पाशे खेलणों माय बड़ा भारी चतुर थिया। राजा हर बख्त पाशा ई खेलदा रोंअ थिआ। जितके कारण तेसके दुइने बेटे बी पाशा खेलणो दे काफी तेज हुई गोवे थिए। राजा रे दुई बेटे रा आपस मुंजी बड़ा भारी गयरा प्यारा थिया एकी के बगैर ग्रोका नी रोअई सको थिया। खाणा पीणा उठणा बैठणा लिखणा पढ़ना सअवे काम दुई भाई रे कम्रठेई चालो थिये। राजा, ए बात देखियो मनो दा बड़ा भारी खुश हुंव थिया। राजा रो राणी काफी बुढीइ गोवे थिए परो भई तिनके जीयो रे जु दो टुकड़े थिए तिनुवे कियोंई बी बातो शी सेवा करणो मांय कसर नी छुड़ी। ग्रचानक राजा बमार पड़ी गोवा गोवा रो बमारी घटणो रे बजाये देसो २ री बढदी रोइ। समाला बी दुअ भाई ए बोहत किया बोलो बी ग्रसो जे जेसी ग्रादमी रो शामल कामल चुकी जांव तेसी आदमि खे कोवे नी रोकी सकदा। जबे राजा के कुछ जाणोई गो जे एब्बे हांव बची नी सकदा, तेने ग्रापणे दुइने बेटे बोइदे। राजा रे मनो दी एक इ बात थी जे इनका ग्रापस मुंजी प्यार नो बिअगड़ा चेंइ। राजा ए आपणे दुई बेटे रे हाथो दी एक सूने री तलवार पकड़ाई रो बोलो जे इयो तलवारी खे आपणे सुतणो वाले कमरे रो भीती दी लाइ देव। सी दुइने जणे बात शुणदे रोवे। राजा ए बोलो जे जबे बी कोब्बी ए तुवो मुंजी कोसीइ खे बायरे जाणो पड़लो। तम्रलो ए तलवार देखिया करीया जे तो तुवों मुंजी कोवे ठीक ठाक हला तो इयो तलवारी शे दूधो रे टींपू छुटीया करले रों जे कोवे मुसीबतो दा फशी गोवा तो तलवारी शे लोउ रे टीपू छुटीया करले। जबे लोऊ रे टिप्पू छुटले तालो जाणी पाय जे मेरे पाई पांदी कुछ मुसीबत ग्राई

रोई रो जबे तलवारी शे दूधो रे टिप्पू छुटले तलो फिकर नी करीया तलो जाणो पाया जे मेरा भाई जिथे बी कोथी हला ठीक ठाक असो। एतौड़ी बात राजा के बेताइबा बी चुकी रो राजा आपण दुई बेटे खे रो राणी खे छोड़ीयो सोंइसारो शा चाली पडा। राजा का दाह संस्कार किया गोवा। दुइने भाई पाछु घरो खे आये मां राहण्डी एब्बे रात देस रोग्रइया करो थी। तियों खे रोज सुइणे लागो थिये सुइणे मांय तियोंखे राजा आप्पु काई बोइंदो थिया। सी बी रोज एजीइ रह लाव थी जे हे भगवान मुखे आपणे मालको काई भेजी दे। लो जो 2-3 मीने बासीए राणी बी चाल पड़ी। रजवाडे रा सारा बोभ तिनु दूअ भाई पांदी पड़ी गोवा। लोग तिनके राजो मांय बड़े भारी खुश थिए। कियोंइ बी किस्मो री कोसीइ खे मुसीबत नी थी। राजा पाठ री टग्रल खब खड़ाके सीअती चाली हंदी थी। तिनु दुअ भाइ ए बाबा री दीती हंदी तलवार खूब सजाइबा आपणे सुतणो वाले कमरे मांय टांगी थी। रो जी खूब हसी खेलियों दुइने भाई आपणे देस काटदे रोवे। पाशे खेलणो रा तिनुखे बी बड़ा भारी शौक थिया। एक देश बड़े भाई रे मनों दी आवड़ी जे शिकार खेलदो जाणो चेइ कोथी दूर जंगलो दो। तेने आपणे नानड़े भाई खे बोलो जे मेरे जाणो आज शिकार खेलदो। सी बोलो जे हांव बी गयल चालू। बड़े भाई ए बोलो जे तु रोग्र इथोइ, एथे तबे देखभाल करणो वाला कोंवे नी आथी रो हांव फीग्ररे तुड़ी पाछु आइ जांऊबा। तेने बोलो जे ठीक असो

लो जी बड़े भाई ए आपणा घोड़ा त्यार किया जीन बगैरा धरीयो रो आपणी तलवार रो दो नाली करी रो घोड़े पांदी बोइशी बा शिकार खेलदा चाली पड़ा। जबे सी बीच जंगलो दा पोंऊचा तो तेने देखा जे आगे आगे एक भोतइ बढ़ीया हिरण चाली रा थियो। जु कि देखणो खे भोतई आच्छो थियो। तेने सोचो जे आज ए हिरण ही लोइ जाणो मारीबा। तेने आपणी दोनाली सीदी करो हिरणो की ढब्बे परो सी हिरण कोथी बी दोनाली रे निशाणे दो नी आंव थियो। एकी बेइ तेने दोनाली चलाई बी थी परो सी हिरणो रे बजाए गोली लागी एकी डालो दी एब्बे सी तेथू हिरणो रा पीछा करदे करदे हारी गोवा थिया। परो पीछा तेने बी नी छोड़ी। सी बी हिरणो पाछी दौऊड़दा रोवा। पीछा करदे करदे देस ऊछाई गो परो सी हिरण कोथी बी तेसके काबू दो नी आई। तेने सोचो जे एब्बे काग्र करी। संध पड़ो गोइ रो एकदम सी हिरण तेसकी आखी काइशो चुरोइ गो। एब्बे तेसीखे हजों पड़ा फिकर जे देश भरी पीछा बी किया रो एब्बी एब्बे ए हारची गो कोथी। तेने जाणो जे इथोंइ कोथी हलो ऊण्डो पुण्डो परो सी तेसी खे कोथी नी भेटी।

तेने पुरी रात जांगलो दोई बिताई। रात भरी सी तीयो हिरणी खे जोग्रदा परो सी कोथी बी तेसके लेहटे नी लागी। रात बेग्राइ गोइ थी सूरजे आपणी भ्रांव जंगलो दी बी बिखेरी दी। थोड़ी शी बेर बासीए तेसीखे कुछ शड़का जीया शुणिया भाड़ी मुँजी तेने आपणा घोड़ा तेस ढबो खे फेग्ररा देखा काग्र जे

हिरण झाड़ी परोशो निकलो रों आगे आगे भागदो रोश्रो। सी सासो उंदा बड़ा भारी खुश होवा जे ए तो सेजोइ हिरण असो। एब्बे नी इथु हांव आज छोड़दा। एतका काल आज मेरेई हाथो लोई असो। तिअपरो तुड़ी सी हिरणो पाछी भागदा रोवा परो सी कोथी बी तेसके आड़ो दो नी फशो। देखदे देखदे हिरण एकदम हजो लाअपता हुई गो। खयर जी राजकुमार चालदा रोवा आगोड़ जाइबा तेसीखे जंगलो दो एक घर भेटो जिथे एक भौतई शोभाली तिरोई बायरे बोइशी हुंदी थी। तेने राजकुमारे तियो खे बोलो जे तोवे इथे बाअटी हिरण तो नी देखो जांदी बेई। तिये बोलो जे सी हिरण तो मेरो असो रो एब्बी सी भीतरे आसो। राजकुमारे बोलो जे आच्छा एशी बात असो। मुखे माफ करीया, हांव तो इथू मारणो खे फीरी रोवा थिया इथू पाछी। ए तो आच्छो हो जु तोवे बेताइ दियो। दुजे की बी तेसी राजकुमारो खे रात पड़ी गोई थी। तिये बोलो जे आव आअ ईथीइ ठअरी जा। एब्बे रात तो पड़ीई रोइ। राजकुमार घोड़े गाशी शा उतरा रो घोड़ा बानी दिया, आपु तियो कागी भोअटा होटा। भीतरे जाइबा सी हयरान हयो गोवा जबे भीतरे पात्थरो के बणे हुंदे घोड़े बाकरे भेड़ो रो पता नी काअ काअ चीजो थी पात्थरो की बणी हुंदी। रातो खे तिनकी आपस मुंजी होड़ लागी जे पाशे रा खेल खेलुबे। जे तो तु जीती गोवा तो तु मेरो से जो करे जु तेरे करणो हलो रो जे हांव जीती गोई तो तेरो सेजो करबी जु मेरा जीऊ बोलला। राजकुमार पाशे खेलणो मांय बड़ा तेज थिया तेने जाणो जे ए काअ पाशा खेलदी मो आरी।

ओकी ढबे घरे राजकुमारो रा घाइटा भाई बी तड़पी रोवा थिया क्यो के दो देस हयी गोवे थिए ठअलदे-ठअलदे। संतोष सिर्फ तेसीखे इंयो बातो दा थिया जु तलवार एब्बी तुड़ी दूधो रे टीपू छोड़दी लागी रोई थी। इंयो बातो लोइ तेसीखे संतोष थिया जे भाई भांव कोथी बी हला ठीक ठाक असो।

हां जी तो ओकी ढबे पाशे रा खेल शुरू हुई गोवा। बख्त कुछ एशा फीरा, जु राजकुमारो रा पाशा हमेशा उल्टाई पढदा रोवा। लो जी आखिरकार राजकुमार पाशे दा हारी गोवा। राजकुमारे बोलो जे भई एब्बे तु मेरो सेजो कअर जु तेरा जीऊ चांव। तिये तिरोइ ए तेसी गाशो हाथ फेरा रो तेसका पात्थरो का बाकरा बणाई दिया। बाकरा बणाणो री देर थी। घरे एकदम तियों तलवारी शे लोऊ रे टीपू निकलदे लागे। नानड़ा भाई घबराई गोवा जे एब्बे कुछ मेरे भाई पांदी मुसीबत आई गोइ एब्बे काअ कोरू।

तेने दरबानो खे बोइदा रो तेसी खे बोलो जे घोड़ा त्यार करो ओरो भाई कोथी मुसीबतो दा फशा हुंदा असो। हांव तो जांऊ तेसका भुजा करदा ओरो तु पाछु मअलो का ख्याल राखिया।

लो जी नानड़ा भाई आपणे बडे भाई री खोज करदा घरे शा निकली पड़ा। तेसीइ जंगलो दा सी बी चाली पड़ा। चालबे-चालदे तेसीखे बाअटो दी एक बुढ़ी भेटी। बुढीये तेसी खे पुछा जे रे तु कुण असो रो तेरे कोईके जाणो। मोबे

ताखे दो देस पहले बी इंयो बाटो पुण्डा देखा थिया। नानड़ा राजकुमार घोड़े पांदी शा धोइनो उतरा रो तेने तियो खे बोलो जे नानी जु तोवे देखा थिया सी मेरा भाई थिया रो आज चार देस हई गोवे सी घरेइ नी श्राइ एतोड़ा पता तो मो कांई श्रसो ए जे सी मुसीबतो दा श्रसो कोथी उलझा हंदा। परो कोईके श्रसो ए पता मो कांई नी श्राथी। एब्बे जांऊ तो जांऊ परो कोईके जांऊ। बुढ़ीए बोलो जे बेटा मेरी बात शूण तेरा भाई मोवे— हिरणी पाछी देखा थिया जांदो बेई, रो सी बेटा हिरणी नी श्राथी बल्कि सी राकसीण श्रसो। हिरणी का भेष बणाइवा सी सोब्बी खे श्रापु पाछी लोई जांव रो घरे जाइबा तिरोंइ का रूप धारण करीयो सी सोब्बी श्रारी पाशे का खेल खेलो। जु कोंवे पाशी दा हारी जांव तेसी खे सी श्रापणे जादु लोई पात्थरो के बाकरे, भेड़ो, घोड़े रो गोरू वगैरा बणाइ देंव। राज कुमारे बोलो जे श्राच्छा, एशी बात श्रसो। बुढीए बोलो जे तु पाशा खेलणा जाणे ए तेने बोलो जे हांव पाशे रा खेल खूब आच्छा करीयों जाणू। बुढी ए बोलो जे सी कोसो खे बी नी जीतणो देंदी। बुढी ए श्रागे बात बेताई जे बेटा तिश्रारे पाशे मुलो मुशा श्रसो जु कि पाशे खे सुल्टा फेरीया जांव। तु एशेख कअर जे एब्बी मो श्रारी घरे चाल। हांव घरे शो तांव कांई एक नानड़ो शो बिराल देउबी। तु तिथु बिरालो खे चुप्पी श्रापणे फाकटो ऊंदो राखिया चोरीयो। तबे काअ हलो जे तियारे पाशे मुली जु मुशा श्रसो डअरो को कुछ नी करी सकदा रो तु तेशखे जीती जायला। राजकुमार बुढी का बडा भारी सान माना औरो तियो श्रारी चाली पड़ा। घरे जाइयो बुढीए तेसी लोई खाणो खे खेश्रावो श्रौरो तेइ तेस कांई एक नानड़ो शो बिशल देई दियो। बाट बी तिये तेसी लोइ बेताइ दी जे सीधा चाला जाव इंयो बाटो पुण्डा। राजकुमार तियो बाटो पुण्डा चाली पड़ा। काफी देर चालणों बासीए तेसी खे एक घर भेटो जिथे एक तिरोंइ खूब बणी ठणी बा बोइशी रोई थी बाइण्डी बिश्रलो। राजकुमार एक दम समझी गोवा। तिये आगेइ धाव दी राजकुमारे खे जे श्राव री मुसाफिर शोट मार। राजकुमारे एतोड़ीई बात शुणी रो घोड़े पांदी शा उतरी गोवा। तेइ भिटा होटा रो बोइशी गोवा। तिये तिरोंइ ए तेसी खे बोला जे पाशा खेलणा जाण ए। तेने बोलो जे जाणुइए थोड़ा-थोड़ा। तिय बोलो जे परो एक बात श्रसो जे हांव खेलू होड़ लाइयो। राजकुमारे बोलो जे काश्र शर्त श्रसो तेरी बेताब। तिये बोला जे तु जीती गोवा तो तु सेजो करीया जु तेरा जीऊ चाश्रला रो जे हाव जीती गोइ तो हांब बी तेरो सेजो कर बी जु मेरा जीऊ चाअला। राजकुमारे बोलो जे शर्त मंजूर श्रसो।

पाशे रा खेल शुरू हई गोवा। पयलेई तीन दाव राजकुमारे जीते। क्यों कि तियारा सी मुशा रोवा चुप्पी दबड़ा हंदा। तेसीखे गोइ थी लागी बिरालो की गंद। रो सी राकसीण हई गोई हयरान जे ए काश्र बात हई। सी पाशे री पेटारी दी मुटकुरे की लांव परो मुशा बिल्कुल चुप्पी रोवा दबड़ा हंदा। श्राखिरकार राकसीण हारी गोइ। तिये काश्र कियो जे राजकुमारो खे बोलो जे तु एब्बे से जो कश्रर जु तेरे करणो ए तिये डअरो के मारे मुशा एकदम छोड़ी दिया बाइण्डे खे क्यो के तेसी मुशे पाण्डीइ तियोंरी जिन्दगी थी। जांव तुड़ी मुशा जिऊंदा रोंव

थिया तांव तुड़ी सी मरी नी सको थी। परो भई राजकुमारे बडी चतुराई शा काम किया जेइ तिये मुशा छोड़ा तेई तेने एक दम तिथू पाछी बिराल छोड़ी दियो आगे-आगे मुशा रो पाछे शो बिराल। फरलांग भरी नी हुटीइ मुशे के तेतीए खे बिराले सी झपटी पाया। जेइ बिराले मुशा झपटा तेइ सी राकसीण भी धोनोयो पड़ी। तिये राजकुमारो खे बोलो जे मुखे जींवदी छोड़ी दे हांव सेजो करबी जु तु बुलला। राजकुमारे बिरालो की जाती शामुशा ऊण्डा छोडोइया रो राकसणी खे बोलो जे ताखे हांव तबे छूडुबा पयले तु ए सब्बे आदमि जींउंदे करी दे जीन के तोंवे पात्थरो रे गौरू बाइची बाश्रणी थोवे। राकसणीए सोब्बी गाशी हाथ फेरा रो सोब्बी खे जींवदे करी दिये। अणगणित आदमि पयदा होवे। जिनु मुंजी तेसका भाई बी थिया। राजकुमारे सोब्बी खे बोलो जे इंयोराकसणी खे काश्र सजा देणी चेइ सोब्बीए बोलो जे इंयो खे मारी देव रो बीच बाटो दी गाड़ी बा हाडी कुत्ते लोई खेआव। ताकी एसी ठग्रड़ो खे देखीबा लोगो खे पता लागला जे बुरे कर्मो रा फल बुराई भेटो। राजकुमारे मुशा बिरालो की ढब्बे फेरकाया रो बिराले सी चाकी चुकीबा घुटी पाया। ओकी ढब्बे राकसणी रे गयल के गयल प्राण निकली गोवे। तिथ फिरे तियो री लाह श बीच बाटो दी रो हाड़ी कुत्ते छोड़ी दिये। एब्बे तियों रा फयसला हाड़ी कुत्ते के जुम्मे छोड़ी दिया। दुइने भाई आपु आरी गले शे मिले रो आपणे-आपणे घोड़े पांदी पाछु घरो खे आये।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. बड़ाई	बहुत ही	21. शोभालो	सुन्दर
2. भागवान	भाग्यशाली	22. इथे बाश्रटी	इधर से
3. घाइटा	छोटा	23. तियो कागी	उसके यहां
4. बढ़ोई	बुढ़ापा	24. होड़	शर्त
5. जीयो रे	हृदय के	25. नानड़ा	छोटा
6. समाला	इलाज	26. धोइनो	नीचे
7. कोंवे	कोई	27. सुल्टा	सीधा
8. लोऊ रे टीपू	खून की बूंदें	28. बिराल	बिल्ली
9. राहण्डी	बेचारी	29. फाकटो ऊवो	जेब में
10. सुइणे	स्वपने	30. सान	एहसान
11. बोइदो थिया	बुलाता था	31. शोट मार	घर में बैठने के लिए बुलाना (हुक्का पीने के लिए)
12. देस काटदे रोवे	दिन व्यतीत करने लगे	32. एतोड़ीइ	इतनी ही
13. गयल	साथ	33. भिटा होटा	अन्दर चला गया
14. फीश्ररे तुड़ी	सायं काल तक	34. मुटकरा	मुक्का
15. दौउड़दा रोवा	दौड़ता रहा	35. जातो शा	मुंह से
16. चुरीइ गो	छुप गया	36. गोरू	पशु
17. हारची गो	गुम हो गया	37. हाड़ी कुत्ते	भुखे कुत्ते
18. लेहटे नो लागो	हाथ नहीं आया	38. ठग्रड़	जगह
19. रात बेश्राइ गोई	रात खुल गई	39. चाकीयो	चबा कर
20. झांव	चमक		

●

राजे रा राज गोआ बाटो रा काज गोआ

आजो दे कुई सो साल पैलो रे बात असों, एकी राजे गाछे एक बाट नोकरे करों था। तेसरा नावो था रामें। जिशा तेसरा नावों था तिशा ई तेसरा काम था। सवी कामों मञ्जे से रामपणा दखाओ था। राजे तेसखे सवी री कुर्सी जाड़ने रे नोकरे देराखे थे, हेरो साथे तेसरा काम था राजे सबा मञ्जे बलाएरो ले ओणा। एसी कामो रे तेसखे राजा 5 रपेइए मिने रे तनखा देओ था। तियों तनखाए दे तेसरा मिने रा खर्च तो चलजों था पर बाकी कुछ नी बचो था।

राजे तेसखे केई बार बोलो बई तु आपणा चड़े बुजणे रा काम न छोड़े नेई तो तु बादो मञ्जे जब नोकरे छुटण तो भूखा मरना। पर तेणिए राजे रे बात एकी कानें शुण हेरो रेके कानें नकाल दीए। से आपणा गजारा तियोंई तनखाए मञ्जे करदा रोआ जु राजा देओ था। कुछ दिनों बाद से बाट राजे नोकरी दे निकाल दिया ए देखणें री खातरे वई तब एसरे का करना।

थोड़े से दिनो तो तेणीए से पैसे खाए जु दो चार रपेइए तेसे गछे बचरोए थे। जब तेसगे सब कुछ खतम ओगा, तब सोचणे लगा बई ना तो आओं चणे बुजणे जाणदा, हेरो आब राज गे बे किशा जाऊ। आब तो तेसरा शा आल ओला जिशा दोबी रे कुते रा ओं। 'ना गरो रा रोआ ना गाटो रा।'

जब कई दिन तेसी भूख ओगे तो तेणिए सोचा बई आब तो अतिए ओगे। तब से एकी दिनो राजे री सबा मञ्जे चला गोआ तेसरे बुरे आल देखेरो राजा पूछणे लगा बई रामे ए तें का आल बणाए रखा। तब मरी ओंई शी आवाजे दे से बाट बोलणे लगा—'महाराज जी, पेली तो आओं तारे नाकरे करूथा, जु तुम तनखा देओ थे तेदिदे आपणा गजारा करूथा। आवे तुमे आओ नोकरीं दे काड़ दिया हेरो मारो जु खानदानी काम जणे बुजणे रा था से बी मों आबंदा नी एथी।'

तेसरी बातो सुणेरो राजें तेसी पन्दे दया आओगे। तेबे राजे तेसीखे सेजीए नोकरे तइए दे दी आब रामें बाट पेली री तरे आपणी जीन्दगी रे दिन वतावणे लगा। हेरो बड़ा खुश ओगा वई राजें मेखे नोकरे देदी।

कुछ सालों बाद राजे रा राज खतम ओगा। तब तेसी बाटों रे नोकरे तेइए जान्दे रोए। तब तेइए तेसरा सिए आल ओगा जुं पेली ओआ था।

तबे से बाट बोलणे लगा—'बई राजे रा तो राज गोआ पर मेरा तो काज गोग्रा। एकी बारे तो राजे मेंखे दवारा नोकरे दे दी थे पर आब ना तो राजा रोआ ना नोकरें।' श्राब से बाट भूखा तड़फे-२ रो मरगोग्रा।

शिक्षा— श्रापणा काम कवी नी छोज्णा चेई, नई तो ऐसी बाटो रा शा आल शा श्रों।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. जिशा	जैसा	4. तड़फे-तड़फे	तड़फ तड़फ कर
2. तिशा	वैसा	5. चेई	चाहिए
3. मेंखे	मुझे	6. किशा	कैसा

●

नौ लाखा श्रार

एकी समें रे बात श्रसौ हिमाचलो मञ्जे तबे राजे रा राज थिया। तेसि गछे पैंसे रे तो कुई कमें नी थी। तेणिए श्रापणी राणी खे एक नौ लाख रपेइये रा श्रार बणवाया। सारे बड़े-२ राजे हेंरो साऊकार तेसे देखणे श्राए। तब तेसे आरो री साथे राजे रे बे खूब प्रशंसा श्रोणे लगे।

तेसी राजे गछे दू नोकराणि बी थी, जु तेसरी राणी रे सेवा करो थी। तिनी मन्दे एकी रा नावो निन्द्रा था हेरो रेकी रा नावो थिया चिन्ता। एकी दिनो तिनीए दुइए मिलेरो राणि रा आर चोरणें रे सकीम बणाए। कुछ दिनो बाद तिनिये राणि रा आर चोर लिया। जब श्रार राचा तो राणिये राजे गछे बताया बई मेरा श्रार पता नी कुणिए चोर लिया।

तब राजे श्रापणें शपाए बलाए हेरो तेसी श्रारो ढुडणे बेज दिए। तिने सारा राज्य छाण दिया पर श्रारो रा बे पता कोथी नी लगा। तब राजे बड़े-२ पण्डत बलाए। पण्डते वे बतेरें प्रश्न लगाए पर तिनो कोथी कुई बे पता नी लगा। आब राजें बड़ें चिन्ता श्रोगे बई श्राब आश्रो तेसी श्रारो कोथी ढुंडु। (खोज करना) श्राब श्रारो रें फिकरो मञ्जे राजें ना तो राते नीञ्ज आओ थे, ना दिनो भूख लागो थे। दिन रात फिक्रो मञ्जे खोया रों था।

तबे कुछ दिनों बाद तेणि ने एकी पण्डतो रा नांव सुणा। बई मारे राज्य मञ्जे एक इशा पण्डत श्रसौ जु बीतर बिठें रो रुची श्रोई चिजो रे बारे में बताओ। राजें सोचा बई से तो बलाबणा पड़ना नेई तो मेरा नौ लाख रपइए रा आर मिलणा नी एथी।

तबे राजे आपणे नोकर बलाए हेरो तिनो गे बताया बई इशा शा एक पण्डत असौ, तेसरे गरे जाओ हेरो तेशी आपणी साथे लेओ ।

राजे रे शपाए तेसरी खातरे तेसी ढुडदे-ढडदे तेसरे गरे पोचगोए। पण्डत शपाई देखेरो डरोरे मारे बितरो दे भायड़ा ई नि निकला। तबे शपाइए तेसरी जवाणसओ गच्छे बोला बई राजे पण्डत जी बलाए तिनो रा नौ लाख रपेइए रा आर राजोरा। हामे शुणा बई तुम राजे ओए चीज प्रश्न लाए रो वादादो।

एतणे बात शुणे रो राजे रे तो फूक सिरक गोए। आपणी बेइयरो खे गाले देणे लगा बई राण्डे आब तो राजे रे मेखे फांसे कर देणे। हेरो तु केली भूखे तड़फे-२ रो मरने।

तब से पण्डत आपणे पण्डत बणने रे काणे याद करने लगा बई आओ भूखा गरने वाला पण्डत ऐतणा बड़ा किशा बणा जु राजा बे मि याद करने लगा।

पेली तो से पण्डत हेरो तेसरे जवाणस गांव मञ्जे मांगे-२ रो आपणा पेट भरो थे वादो में तिबो खे लोके भिक्षा देणे वे छोड़दी। तब तेसरी गर वालिए रद्दी कागज कठ्ठे किए हेरो तिनी रे एक कताब शे बणाए दी। तब पण्डतो खे बोला बई तु इयो लोएरो गांव मञ्जे मांगणे जाए। से बचारा मुकता बाजा पर तेसरी बेइरे से जबरिए बेज दिया। से बे बचारा आपणा शा मुं लोए रो चला गोआ। जे ना जान्दा तो करदा वे का गरे तो कुछ खाणे पिणे खे था इ नी।

एकी गावों में गोआ तेथी एकी जीमीदारो रा ऐला लगो रा था। गावों रे बारा आदमी ऐले मञ्जे आओ रे थे। तेसी जीमीदारो रे जवाणस रोटी पकावणे लगरोए थे। से पण्डत बे तेथी जाए रो बिठे गोआ। भूख बे खूब लगरोए थे पर तिए बइरे वे तेसरा रोटी खाणे रा नाव तक नी लिया। से एक-२ रोटे गिणने लग गोआ जब से बेइयर रोटी पकाए रो आटे तो जीमीदारे बोला बई रोटी थोड़ी तो नी ओणी। तब पण्डत बोला—बई जे तो एले वाले आठ-२ रोटी खाले तब तो रोटी पूरी असौ जे जादे खाले तो कम ओजली। तब जीमीदार तेसरे पण्डतयाएं देखणे लग गोआ। लगा रोटी गिणने। रोटी पूरी छयाणवे निकली। जीमीदारे बोला बई पण्डत जी तो ठीक प्रश्न लाओ। तेने पेली पण्डतो रोटी खलाई बाद में एले वाले। तब तेने पण्डतो खे थोड़े से चावल हेरो आटा दिया।

से पण्डत तेसी ले रो आपणे गरे आया। तब तेसरी बेइरे पूछा बई ए एतणा आटा हेरो चावल किशे मिले। तेणिए सारे बात बताएदी। बामणे बड़े खुश ओए। तिने ब्याल चावलो रे खिचड़े पकाए हेरो खुशी-२ सुतगोए।

भलखी उठे रो बामणे पण्डतो खे बोलणे लगे बई आज रेके गावों रे कनारे खे मांगणे जाए। पण्डत बचारा दोते लाए रा तियो रद्दी री कताबे चके रो रेके गांव रे कनारे खे भगवानो रा नांव लेंदा ओआ चला गोआ।

रस्ते मञ्जे जान्दे-२ तेसी कुछ गदे मिले । से पण्डत तिनो गदे गोर दे देखणे लग गोआ बई ए केतणे असौ, हेरो कोसरा मुं किशके के असौ । आच्छी तरे देखे रो से पण्डत आगे-२ जाणे लगा । रस्ते में तेसी एक कमार मिला । तेणिए कमारें बोला बई पण्डत जी तुमे मारे गदे तो नी देखे । तेणिए सोचा बई ए तो तुका मारने रा बड़िया मोका मिलगोआ ।

तब पण्डत बोला बई मैं तेरे गदे तो देखे नी एथी पर आओ प्रश्न लाएरो तेरे गदे बताए दुए बई ऐसी समे तेरे गदे कौथी असौ । तब कमार बोलणे लगा बई पण्डत जी तारे बड़े मेरबाने ओले जे तुम प्रश्न लाए रो मेरे गदे बताओले । आओ तुम खे एक गदा दे दुए ।

तब पण्डत बोला—बई मेरे गदे रा का करना । गदा तो मेरे कामो रे चीज असौ । कमारे सोचा बई पण्डत तो पोचे ओए मुर्त असौ । तब तेणिए बोला बई पण्डत जी आओ तुमोखे एकी गदे रे किमत देऊएं । पण्डत समादे लाए रो मिलेगा । हेरो आपणी तिथों रदी री कताबे रे बर्के पलटणे लगगोआ ।

थोड़ी शी देरी में से पण्डत बोला बई तेरे गदे मिलगोए । कमार बड़ा खुश ओआ हेरो बोला कोथी असौ माहाराज पण्डत जी मेरे गदे ! तब पण्डत बोला—जेथी तेणिए से गदे देखे थे सिए बताए दिए । बई फलाणी जगा तेरे गदे असौ जाए रो ले आ । जे तो मिलले तब तो इनाम दें नई तो आओ कुछ वे नी लेऊऐं ।

कमार खुशी-२ तेथी गोआ जेथी पण्डतें गदे बताए थे । जब कमार तेथी पोचा तो तेसी आपणे गदे मिल गोए । से तिनो एड़े रो गरे खेलेया । पण्डत वे तिनो गदे देखेरो बड़ा खुश ओआ बई एसरे ई निकले । से कोसरे हारी रे ओंदें तो मारा गोआ था ।

कमारे गरे आए रो पण्डतो खे एकी गदे दे जेतणे किमत थी तेतणे पैसे दिए । पण्डत बे तिनोले रो आपणे गरे खे आओगा । गरे आए रो पंडते रारे काणें आपणी पंडतयाणी गे बताए । बामणे बड़े खश ओए । आब से आराम दे आपणा पेट बरने लगे ।

तो इशा बणा से गरीब भूखा मरने वाला एक माना गिणा ओआ पण्डत जु राजे याद किया ।

तो तब से पण्ड आपणी इयो काणी रे बारे मेंजे सोचे रो आपणी जवाणसो गछे बोलणे लगा बई आब का करूं । तब तेसरे बेइयर बोले बई तु भगवानो रा नांव ले रो होजा जु ओला से सई । जु ओणा से तो ओए रोई रोणा ।

तब से पंडत आपणे पोथे चके रो राजे रे शपाई री साथे सोचदा ओआ चला गोआ बई आब तो राजे रे फ़ाशी रे सजा देदणे । जान्दे-२ से राजे रे दरवारो मञ्जे पंचे तब शपाइए बोला महाराज जी हाम तेसी पंडतो ढुड़े रो ले आए ।

राजा बड़ा खुश ओश्रा। पंडतो रा श्रादर सत्कार किया। तब राजे श्रारो रे बारे में बताया, बई इशा शा मेरा श्रार जेसरे किमत नौ लाख रपेइए श्रसौ चोरी ओगा। तुम प्रश्न लाए रो बताओ बई से श्रार कोथी श्रसौ। तब पंडते सोचो बई श्राब बचणिया तो एथी नी राजे से सजा तों जरूर देदणे। पर श्राज श्रापणे दिलो रे पूरे करलु यानि खाणे पीणे रे मजे लेलु।

तब पंठते बोला बई कई एकान्त जगा में एक बिस्तर लादो हेरो जु आओ मांगुए दे देया करें। राजे नोकरो खे बोला बई जाश्रो जिशा पंडता जो बोलो तिशा करों।

तिने जु-२ पंडते मांगा से दिया हेरो चले गोए। खाए-पिये रो पंडते सोचा बई कालो खे पता नी का श्रोणा, एदी मास श्राज राम दे सुतलु। पर फिकरो रे मारे तेसी नीञ्ज नी श्राये। तब से बोलणे लगा– 'श्रा निन्द्रा जा चिन्ता। आ निन्द्रा जा चिन्ता।'

श्राब राणी री नोकराणी फिकर ओगा बई पंडतो रे हामी गे श्रार बतादणा हेरो राजे रे हामी खे फांशी रे सजा देदणे। तब से दुए राते उठे रो देखणे गोई बई दया पंडता का लगरोश्रा करने।

जब से तेथी पोची तां तिनिए सुणा बई पंडत बोलणे लगोरा श्रा निन्द्रा जा चिन्ता। तिनिए सोचा बई ए हामी बलावणे लगरो श्रा।

सो दुए बीतर गोई हेरो तेसी दे माफ मांगणे लगी बई हामी खे माफ कर दो। राजे गे देखे बताश्रो हाम श्रार तुमोखे देदो ले।

पंडते तिनिखे बोला बइ जाश्रो एसी तेथी दवाए आश्रो जेथी सारे शेरो रा कुचड़ा फेंको। तेथी गोई मे दुए जणी हेरो तेसी आरो दवाए श्राई।

तबेतो पंडतो री खुशी रा कुई ठकाणा इ नी रोश्रा। से मोज सुतगोश्रा। भलखी दश बज गोए। राजे रे सारे लोक जु नोकर थे पोच गोए पर पंडत जी सुतेरो इ नी उठे।

तब राजे तेसी ठवाओणे खें श्रापणे नोकर बेजे बई पंडतो ठवाएरो लेश्रो। शपाए गोए तब पंडतो खे बोलो बई ताई राजा बलावणे लगरोश्रा। तब पंडते बोला बई पेली मिखे नाणे खे पाणी लेश्रो तब श्रांश्रों तैयार श्रोएरो राजे गच्छे चलुएं।

नोकरे तेसिखे जु मांगा से दिया तब से तेयार श्रोएरो बारां बजे तोड़ी राजे गच्छे पोचा। तेणिऐ राजे खे श्रात जोड़ हेरो श्रासनो पन्दे जाऐरो बिठगोवा।

तब राजे बोला– पंडत जी प्रश्न लगा या नी लगा। तब पंडते बोला बई प्रश्न तो लगा पर तुम मेरी साथे श्रापणे शपाई ले रो तेथी चलो जेथी सारे शेरो रा कुचड़ा फेंको।

तब राजे आपणे शपाए लिए हेरो पण्डतो री साथे तेथी पोचे जेथी सारे शेरो रा कुचड़ा फंको थे।

तब पण्डते बोला बई एथी खुणना शुरू करो। तब शपाइए तेथी खुणना शुरू किया। थोड़ी शी देर में निनो राजे री राणी रा नौ लाखा आर मिल गोआ। राजा बड़ा खुश ओआ। तेणिए खुशी ओएरो पण्डतो खे खूब धन दिया। पंडते से गाठड़ी में बादा। तब नोकर तेसी छोड़ण तेसरे गोरे रे कनारे खे चले।

जब पण्डत राजे गदे गरे खे जाणे रे इज्जाजत मांगणे लगा तब राजे बोला बई आओ ताई छोड़ण चलु। थोड़े शे दूरो तांड़ी राजा पण्डतो री साथे बातो मारदी गोआ।

रास्ते मञ्जें जान्दे-२ राजे एक फिदरत सुजे। तेणिए एक टिडे (जन्तु-विशेष) मुट्ठी में (हाथ में) बन्द कर ली। तब पण्डतो खे बोला बई जे तु तिशा प्रश्न लागे वाला असौ तो बता मेरी मुट्ठे में का असौ। तब पंडत सोचणे लगा बई आब तो मेरे बारे आओगा। आब मेरी पंडतयायी रा पड़दा खुलणा।

तब से आपणे पंडत बणने रे बात सोचणे लगा बई आओ पंडत किशा बणा। तब तेणिए सोचा बई रोटी तो गिणेरो बताई, गदे देखे रो बताए। आरो रा पता आपे लग गोआ था। पर बादो में तेसरे जोरे ई बोल गोइया बई आब आए वे टिडा तेरे मोत। हेरो राजे आत खोला हेरो बोलणे लगा बई पंडत जी तुम तो बिल्कुल ठीक बताया।

तब पंडत सोचणे लगा बई जु भगवान करो से बड़िया ई करो। मैं तो आपे खे बोला था बई आब आए बे टिडा पंडत तेरे मोत। पर राजे रे हाथो में बे टिडा इ निकला। कई बारे तुका वे जान बजाए दो। तब से गरे गोआ। तेसरे पंडतयाणे रो से पंडत खुशी दे जिणे लगे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. राचा	गुम हुआ	8. जबरिए	जबरदस्ती
2. ढुंडु	खोज करना	9. ओजली	पड़ेगी
3. नीञ्ज	नींद	10. ऐतणा	इतना
4. शपाए	सिपाही	11. किशके	किस के
5. वितरों दे	अन्दर से	12. तुमों खे	तुम्हें
6. जवाणसो	औरतों	13. गाठड़ी	गठड़ी
7. फांसे	फांसी		

●

भाग २. :– महासवी जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	नो लाख हाथे	जगदीश शर्मा
२.	बेइमानी–मानदारी	जगदीश शर्मा
३.	हूल्टू	जगदीश शर्मा
४.	धोनें री ठींडु	आचार्य केशरवाम शर्मा
५.	सौतेली मां	सुमित्रा ठाकुर
६.	ब्राह्मण ब्राह्मणी	हरिराम जसटा
७.	टुण्डी राकस	हरिराम जसटा

नौ लाख हाथे

तौ जी तुएं यो काणी खै नौ लाख हाथी रौ नाम्रो देओं भाओं भागौ म्रो लक्ष्मी रा फैसला बोलौ। बात एक ई ओसौ। एकी बार भागौ म्रो लक्ष्मी मतलब किस्मते म्रो रुपौए पोइसै रे लड़ाए होए। लड़ाई रे कोई खास वजह न थे। लक्ष्में बोलौ थे कि हांओ बड़े म्रोसौ दूनियै दा मेरा ही बोलबाला म्रोसौ मायं वाले म्रादमो रा खूब मान हों। दूज्जो बिल्लो भाग म्राप्पू लछमी दू बलवान् बणों था। भागो रा दावा था कि लक्ष्में तौ भागो वालै म्रादमी खै ही हों। दूनें भ्रणे म्राप म्रापणी बातौ खी बड़ा भारी सबूत देम्रों थे। झगड़े रा आखरी चारा था कि विष्णु जी ही यों बातौ रा निपटारा करौ ला कुण छोटा कुण बड़ा।

तौ माराज विष्णु जी काए भाग म्रो लक्ष्मी पूज्जे। विष्णु जी वेकुण्ठौ दे तपस्या करदे लागै रोए थे। विष्णु जी री अस्त्रीए तीन रे खूब म्रादर सत्कार किया। जबै विष्णु जी तपस्यै दू उठै तौ भाग म्रो लक्ष्मीए म्रापणे-२ बात बोलणे शुरू किए पर विष्णु जी तौ पूरे विष्णु थै। विष्णु जी ए सूचो म्राप्पू दी बट्टी म्राणयो ला फायदा। हांम्रों कौस छोटे चाणु कस बड़े। ऐबै ब्रह्मा जी बिल्लो चालै। ब्रह्मा जी इन रा फैसला करौ लै। ब्रह्मा जी भी बड़े पाके निकलै। तेनै भी बात म्राप्पू गाओ टालै। एबै एक ही उम्मीद थै शिवजीम्रां रे कि फैसला सै ई करौ लै। ब्रह्मां, विष्णु, भाग ओ लक्ष्मै सब्बी म्रणे शिवजी म्रो बिल्लो चाले गोए। शिवजो म्रासनो गाई विराजमान् थै, पार्वती जी से वे स्तुति करदी लागे रोई थी। राजी-खुशी पूछण बाद विष्णु जी ए सब्बी रै म्राणे रा मतलब बोला।

शिव जी बिल्कुल खामोश रोए। सब्बी लोग मनाउदे मजबूर करदे लागै तयें सब्बी भ्रणे शिव जाए मातलोगौ गाई म्राणे।

तौ महाराज मातलोगौ गाई देखा कि एक कुम्हार म्रो एक कुम्हारै थै। दलोद्रो रै दूस काटे लाए थै। औलाद थे पर छोटा था बेटा। कुम्हार आपणा भाण्डे वर्तणो बणाणे रा पेशा करौ था ओ कुम्हारे थ जू बजीरौ री गावी चारौ थे। एजा ही खाणे पीणे रा जरीया था। तौ जी मांम्रो के बाद बेटा गावी चारौ था। ऐबै सै बड़ा होए गा था। तेस रा काम था कि रै रोज दूर जांगलो दी गावी नीयों था। खेलौ कूदौ था ओ दूस ओडे जाम्रों थो। एकी रोज सै जांगलौ दा सूत्ता तेसे खूब नींज लागे। दूस भी गर्मी रै थै। उठा तौ ख्याल आ कि हांम्रों तौ गावी चारदा आए रोआ। पर देखा कि गावी तौ नेई थी।

सारै जांगलौ दी खुब तलाश की पर सै नेई भेटी। आखीर तेम खै एक ही चारा था रूणे रा। रात पड़दे लागै रौए थे। कुम्हारी रा नेठा रून्दै-२ एक सादू काए पूज्जा। तौ जी सादू तौ जरूर था पर थिया सै शिव। तेस हारी सारे पार्ट थे सादू रै भेशौ दे मतलब ब्रह्मा, शारदा, विष्ण, शिव ओ पार्वते। तेनें सादू जो रैं दूणैं खुब जालै। तपस्यै दू उठयौ साधुए रोणे-धोणे रा कारण पूछा। तेने बोलो मूं भूख लागै रोए हांओ भूखा ओसू मेरी गावी भी खोवी दी ओसौ।

साधू जी ए तेस खै दू लाड्डू दिणे ओ बोलो कि ऐस रास्ते दी तेरी गावी भी मिली जाली। माराज देखणे री बात ऐजे ओसौ कि एक्की लड्डूए सारी भूख मिटे गोए तेने एक लाड्डू आपणी आम्में खी छाड़ो।

सारै बात तेनें आपणी मातै जी खै शणाए। कुम्हारीए सूचौ कि जौ हांओं बजीरो खी लाड्डु देउ लै तौ सै भरी खुशी हुआ। शायद कुछ इनाम-शिनाम भी देओ ला। बात इणे ई होए बजीर खूब खुश होआ ओ रोटी कपड़ा दिणा। वजीरै सूचौ राजा भरी खुश होला हांओ लाड्डू राजै खी देऊ। म्हाराज बात आग्गू दू आग्गू ड़ेवे। लोभ तौ बुरै बला ओसौ। हो का कि राजै रे राणे बमार थे राजै सै लाड्डू राणी खी दिणो ओ राणे बिल्कुल ताकड़े होए गोए। राजे वजीरो खै बोलो कि तू दूज्जो लाड्डू आज नेई तो तांओ फांशे मिलौ लै।

बजीरो खै डर फशै गोआ कि ऐवै तौ जाने री बारी आई। वजीरै सेजाई हुकूम कुम्हारी खै दिणा कुम्मारै रून्दै लागै। तियै सारै बात बेटै खै शणाए बेटा डरै तौ गोआ पर सै तेस सादू री लोड़ीदा चाला।

शिव जी ए म्हाराज लाड्डू तो दिणा पर शर्त ऐजै पाए कि आक्की राजै खे दे ओ जो से कुछ मागणे खै बोलौ ला तौ कुछ ना मागै चोऊ पांजो बार न मानौ तौ सिर्फ धर्म मांगै। छोटू भी राजे काए डेओ तेने मांगणे खी बोलो पर सै मानदा भाजा आखिरो दा तेने धर्म मांगा। पर धर्म भी राजै दे गोआ।

राजै सुचौ कुम्हार मांगो ला तौ का रुपए-पोइसे मांगदा। छोटू सादू बिल्लो डेआ ओ सारै बात शणाए। साधुए बोलो कि तू राज दू आपणी छोटी साथी ब्यै करणे रै शर्त छाड़ौ। सै तस माननै पड़ौ लै। धर्म तो तेने दे पाए।

राजे दरवारो दा सलाह मशवरा किया ओ तेस रे बारै दे पूछताछ किये। आखरी दे राजा आपणी बेटी रै जाजड़ै बाणने खी मंजूर तो होआ पर तेने चीन शर्तो छाड़ी।

गेणके शर्त थे कि सातो दूसौ भितरा शादी रा म्हूर्त गाड़ना पड़ौ आ।

इणे वरात आणने पड़ौ लै न आज ताई आए न ऐवै आओ ले।

बरातो दा नौ लाख हाथी ओ नौ लाख सादू रा होणा जरूरी ओसौ।

आखरी शर्त थे म्हाराज कि १६ सहस्त्र गोपी रा नाच बरातो दा हूणा चाई ।

तौ जी शर्तो तौ तेस रै बसौ री थी नांई । सै साधु जी श्रो काए राजै री छाड़ी शर्तो बोलदा डेआ। शिव जी ए सारा प्रबन्ध किया। म्हूर्त गाडने रा कामा ब्रह्मजी खै दिणा। म्हूर्त था आजौ रै सातवैं दूसौ रात कै १२ बजे रै टैमो रा। माराज म्हूर्तो रा पता राजै खै दिणा गोंआ। शिव जी ए ६ लाख हाथै बैकुण्ठै इ आणें। म्हाराज हाथी रा आणना था कि सब भणें जांगलौ रा मैदान बाणदै लागै भिशी खी सारा जांगल मैदान बणें गोया।

तौ जी वरातौ खी नौ लाख साधू आए कि सारै दा तीन री चिलमों, ठोठी करै न्हैरा पड़ा। इया ताई कि सर्गो दा बादलौ रा भी मुँ धुएं ढका। बरात पूज्णें वाले थे कि इन्द्रासनौ द् नौ लाख सहस्त्र गोपियां रा नाच लागा। नाज ला था जी बस माचणें रा सौदा था।

शहरौ नेड़े पूज्जें कि सब्ब कर्मचारी मस्त होए नाचौ दै। खाणे बणाणें वाले जेंकू, ध्याशी करे ई गोपी रै नाचो दें नाचदें लागें। हालत ऐजै होए कि आदमें जेजें-जेजें कामौ दै थे सब्ब कामौ छोडयौ गोपी रै नाचो दै मग्न होए।

सारै दखारै सूचद लागे कि ए कोए मामूलै हस्ते नेंई। ऐवैं राजै हुक्म दिणा कि बरात वापिस नियौ आपणें ही मूल्कौ दा सारा इन्तजाम करौ। विश्व कर्मे सव्वी बराते लाड़ी साथी वापिस लिए श्रो पूजदें-पूजदे महल त्यौर कियों।

सव्वी भ्रणें जरूरतौ रै अनुसार चिजौ मिली कोई भूखा, प्यासा न रआ। साधू रै जमात कुम्हारौ रै जै मनाउदें लागें। विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पार्वते, शारदा, भाग श्रो लक्ष्में भी सव्वी तिन दें शामिल थिए। लक्ष्मी श्रो भागौ रा फैसला वगैर निपटाव्यौ ही मिटा। भाग बड़ा बणा लक्ष्में छोटे रोए। कम्हारौ रैं बेटे रैं भाग जागे तवै ते लक्ष्में मिलें। आपणे फैसले देख्यौ सव्वी इन्द्रपुरी खी डेए। झगड़ा मुकै गोआ। "लक्ष्में छोटे रोए भाग बड़ा रोओ।"

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. टालें	टालना	7. आक्की	अपने आप
2. रुणे रा	रोने का	8. बितलौ	पास
3. डेआ	गया	9. तेने	उसने
4. मूकै गोआ	समाप्त हुआ	10. म्हूर्तो	महुर्त
5. भणे	व्यक्ति का सम्बोधन	11. नेड़े	समीप
6. बमार	रोगी	12. मूके	समाप्त होना

●

बेइमानी-मानदारी

एकी देशो दा एक राजा था । तेस रै दूई राणी थी । माराज एकी राणी रै एक बेटा था पर राणे मरे गोए । हो का कि दूज्जे मां तेस बेटे साथी ठीक वर्ताव नहीं करो थे । रोज राजे खे उल्टी सीधी चुग्ली पाओ थे । तो जी बात एतने बड़े कि पराई माओ रा डांण्ड तेस बचारे भी मिला । मतलब घरौ जायदादे दू बेदखल करयौ तेस खे देशकत दिणे गोए । चालदा-चालदा किस्मतौ रा मारा दूज्जे राजौ दा पूज्जा । रौणे बसणे रा तौ कुछ ठिकाणा था नेई पर बचारा एकी बूढ़ बसबे रै घरै पूज्जा । बूढ़ बेसबा तौ थे ई चालदे रकम तीये भी मशाफरों रा खूब आदर सत्कार किया तीयौं खे भी बातौ चितो खी दूज्जा आदमे मिला । बूढ़ बेसबा रोज राजे खे शहरो री खबरी नीयों थे ओ बागौ दू फूल नीयों थे बस ए ई तीयों रा काम था । एकी दूस्सो तीये खबर आणे कि बजारौं रा एक शाउकार चोरीयों खा । पर भई चोरी करणे वाला तौ सै ई मशाफर राजे रा बेटा था जू बूढ़ बेसवे रै काए री था । सै अव्वल दर्जे रा चोर बणे गोआ था । था भी ठीक मां बापो रै प्यारो दू विछडीयों, रोटी-पोली खाणे रा एक ही रास्ता थिया । सै थिया चोरी-डाका करना । तौ जी तीयों चोरी रै खबर सारे लोके दे बल्के । दूज्जे दू खौ राजे रै मोदी रै घरौ दे चोरे होए । सेजे खबर भी बेसवे बजारौ दू घर आणे । पर तेस खे तौ पता था चोरी करणे वाला तौ सै ई था । तौ जी सारा आरोप पुलसी गाई लगा कि पुलिस ठीक ढंगौ शै अपणा काम नेई करदे पैरा नेई दिंदे ।

दूज्जे दूस्सौ राजे रा दरबार लागा जिन्दा बजीरे सारे पहरेदारों पुलसिये खे स्तर्क रौणे खी बोलो । आगलै रोज वजीरे रे चोरे होए ओ बजीर राजे काए रोइयों पूज्जा सब्बी परजा दूखी ओ हेरान थे कि चोरी डाका रोजौ रै रोज बढदे लागे रोए । एबे राजे रै खजाने गाई बारी थी । राजे पैरा तेज किया ओ अप्पू भी चौगस होआं । तौ एब्बे राजे रै खजाने री चोरी भी होई । सारे पहरेदार नौकर दू बरखास्त किए ओ कौंदे दे पाए ।

एतनी चोरी रै बावजूद भी चोर आटो दा न लागा । चोरौ री तलाशी खी एक तरकीब सूचे गोए । हीरे-मोती-रपौए पोइसे रै ढेर खजाने बारे लाए गोए राजा अप्पू पैरै दा आ । सेजे खबर भी बेसवे घर नींए । सै बेटा दर्जी रे काए डेआ ओ बढीया ठाणेदारौ रा वाणा बणावा बूट वाल-वाणा सब्बी कुछ पूरा ठाणादार वणा तेने बूटौ दी लाख लाए ओ सै भी ठाणादार बणयो चौकीदारी दा शुमार होआ । तड़-फड़, तड़-फड़ शफी बाटी डेआ ओ राजे खे स्लूट दिणे । पगड़े रूपौ दा तौ कोए चोर नेई आ पर खजाने गणदी बार 12 अशर्फी कम होई । अशर्फी लाखौ दी जूडयौ बूटौ साथी डेई । सारे मुल्कौ दा एलान किया गोआ ओ चोरौ पाकडने खी इनाम छाड़ो । पर क्या मजाल थे जू चोरौ रा पता लागदा ।

तवै तेने बेटे वेसवे री मार्फत बोलो कि जवै चोरौ रा पता मोए ला तौ मुखै का मिलौ लो राजे बेसवे खै आधा राज देणे रै प्रण किया माराज ऐवे किस्मत भरीणें वाले थे तेने बेटे सारै आपणे दुःखौ रे कथा राजै खे शणाए ओ आपणी चोरी रा पूरा हवाला सबूतौ साथी दिणा। राजै तेस री हालतै पांदे तरस आ तेने आपणे वायदे मुताबिक आपणे राजौ रा हिस्सा तेस खी दिणा। यो बातौ रा पता तेस रै बादौ रै राजौ दा भी चाला। लो जी, हो का कि तेसरे दूज्जी माओ रै बेटे भी तेस खै निउंदा दिणा ओ आदा हिस्सा देणे रा वायदा किया। ऐवे सै भी राजौ रा मालिक वणे गोआ। जू कुछ मानदारी हासिल हो सै बेइमानी हासिल न करी सका।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1 डाँण्ड	दण्ड	9. मनाउदे	मजबूर करना
2. जिन्दा	जिस में	10. मातलोगों	मातलोग, धरती
3. आंटौ	शत्रुता की आड़	11. भेटी	मिली
4. बेसवे	वेसवा, दासी	12. हारी	साथी, साथ
5. पगडें	प्रकट होना	13. तियें	उसने, स्त्री का सम्बोधन
6. जुडयौ	जुड़ा कर	14. गाडने	निकालने
7. भरीणे	भरने वाली	15. पूजणे	पहुंचने
8. टार्ल	निकालना	16. निपटावणे	निपटाने



हूल्टू

एक था जी भाट एक थे भाटिण। तौ जी पराणे जमानें रै भाट विद्या शास्त्रो ओ दलीद्रो खी बड़े मशुर हो थे। भाटै दूज्जा जाजड़ा बाणा। गेणकी भाटणे रै एक हूल्टू थो ओ एक छोटे थे। गेणकै जमानें दे भेराम ओ कुरूप औलाद भरी जाओ थे। तेस हूल्ट ओ तीयों छोटी साती दूज्जी माओ रा वरताव ठीक नेंई था बस······जी तीयों छोटी ओ हूल्ट खै देरौ (दवारौ) पाछू खाणे रो मिलौ थी। खाणे रा कोई खास चीज नेंई मिलौ थे सिर्फ तूशौ री रोटी तिन खै देओं थे दूसौ भ्यायौ तिन गौरू चारनें पडौ थे। ऐजो था तिन रे रोज का जीउणा!

हूल्टू खै एक दैविक वरदान था तेस रै आपणी वौणे खै बोलदो थो कि जब भी तौओं केजो चीजो री जरूरत पडो तो तोए मेरे शिगो दे लाणे तो जी बात

भी सेजं ई थे। जब भी जरूरत पडौ सैं होल्टू रें शिगो दे जाओ श्रो सब चीज तीयौ भेट जाओ।

से जो वातौ रा पता सौतेली माश्रो खं लागा। तीयं भी दूसौ श्रापणे छोटे हूल्टू साथी छाडे। आग्गू बात इणे होए कि तियों भी शिगटी दे लाए श्रो तेने तियों रे श्राख भानी पाए। सैं रून्दे-रून्दे घर आए। माश्रों खे सब्ब हाल शणावा। तियौ तेस खं रोश फाटा वोला तेस घर आणे दे हाश्रों तेस पूच्छू। यों बातौ रा तेस खास डाण्ड दिणा तेस काटणें रा फैसला होश्रा। सेजी वातौ रा पता तीथों छोटी यनी तेस री वहणे खं लागा। सैं तेस आग्गु रून्दं लागें। तेने बोलो इन्हें रूणे रे बात नेंई तू घवराए न। जौ तांश्रो मेरी डलकी देश्रो ल तू चराढ़ें दी दाब्बे। खाए नेई। तीयैं भी एज्जा ई कियो।

एकी बारी दूर भरी दूर एक मेल्ला यानी जातरौ लागी। सव्वी डावरें रें तेस मेलं खी जानं लागौ घरौ रा सारा काम तीयौ रे सपूर्द किया खल्लैं खेचौ ताई गोरू बौचो दू खाणे पकाणें ताई तीयो एज्जौ काम करनो पडौ। तौ जी सूचदे-सूचदं लागे तीथौ खं एक ई हिट धिशें। सं ओकर खी डे जेई से हाड़की चराडी दी दवाई दी थी। तीयं देखो खी सव्व चीज तिन्दं मोजूद थे। चढ़ू चट केरू थं सैं तियं खलं खेचौ रं कामो दं लाए। लोए कन्ध रेंई खं लिमणं-घृशणें रो काम दिणो यनी सव्व काम तीयं दूज्जें रं स्पुर्द लियो। श्राप्पू नए-नए झुडकें जू तिन्दं थे वाने गौणें लाए श्रो श्रापण घोडा कशा आपू भी जातरौ

जातरौ देखयो वापिसी खी तीयें घोड़ा दौड़ाया ओ सव्वी दू श्राग्गौ पूज्जें। तीयें धोड़ा, गौणे, चड़ू चट केरू सव्व चराडी दं ई दावं श्राप्पू पराणें कापड़ें दे कामौ करद जूटें। जवं सब्ब लोग वापिस पूज्जं सैं इयों वातौ देखयौ हैरान होए कि सब्ब काम बिल्कुल त्यैंर ओसौ।

पणमेसरौ का करतब श्राग्गू ए होआ कि घर श्रान्दं-श्रान्दं तियौ छोटू रे पोलड़े वाटों दे छुटें। स राजं रे शराई खं मिले। ओ तिन्ये घर श्राणें।

राजं सूचौ ए चीज कोयों खास ही श्रोरतौ रं होए सफौ तेने श्रापणे शपाए छाड़ं तिन खं वोलौ कि तेस रं मुल्कौ दी जेंती भी छडेंड़ी ओसौ जियों खं ए लागौ लं से मेरे बेटे खी वंणें। एज्जी लोडौ दे शपाए इयं भी पूज्जं। गेणी तौ तीयौ काणी छोटी खं नापे पर न लागें। जान्दं-जान्दं तीयौ खं भी परखे कुदरत होए कि सं पोलड़ं तीयो खं लागं गोए। लागदं भी केथ न। तीयौ रं ई थिए।

मायं सूचौ राजं रं घरो दे डेओले तिये आपणी काणी छोटी साथी पाणी खी छाड़े श्रो छोटे शकौए पाए। पाणी काए काणीए बोले दादीए-दादीए तू

बाढणे की हांश्रों । सै भी पाणी दा आपणा मुं देखदै लागै दूज्जी छोटीए धाक्का दिणा ओ सै पाणी माजी पड़े गोए । माराज सै काणे छोटे खुशी खुशीए घोरे आए ओ माश्रो खे सब्ब बात शणाए । कुदरतौ रे बात थे कि तेश्रो एक बढ़ीया फूल जमौ । पर सै कसी रै हाथ आन्दो भाजौ । बस जू भी तेस नेड़े डेंश्रो थो ए ई बात निकली थे :—

"झुकु मुकु काणी कभारी रै आख टुकु"

एकी बार राजे रा बेटा भी आ ओ फूलो चोड़दा लादा फूल राजे रै हाथौ दो भी न आश्रो । नेने फूलौ खोदणें रा हुक्म दिणा देखा कि फूलो री जागै दे सै छोटे मिले । तिन्नें सब्ब बात शणाए राजौ तियो साथी वैया वाणा ओ तिन दूई खो सजा दिणें ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. गोरू	पशु	6. सूचदे-सूचदे	सोचते-सोचते
2. शिगो	शीघ्र	7. छोटू	लड़के
3. रुन्दे-रुन्दे	रोते-रोते	8. डेंश्रोले	जाएंगे
4. शणावा	सुनाया	9. चोड़दा	तोड़ता
5. जातरौ	मेला	10. कसी रे	किसी के



धौनें री ठींडु

पराणें सौमें दं म्हारे प्हाड़ो दे बौड़े बौड़े ठींड श्रो थियें जिनो री ठिडव्यें सारे देशौ रा माथा ऊँचा किया था। एकी सौमें री बात औ। एक रेहड़ थिया जेसरो नांव थियो ल्हाली। सै बोली थिया बौड़ा बेगें ठींड। आपणो जवानी गेरा थिया तेस बौड़ा औबिमान। तेस बोगतें आपणें लाकें श्रो दूरो दूरो ताईं सें थिया बेगें मौलें दा। दूजी बात थी एजी जें तेस सौमें इतें प्हाड़ौ दो थियो मछराज। तेस राजो दा जू जेस जेरें लूट सौको था तेरें लूटो था।

एकी बोई आपणें पौरगणें कम्हारशणों दौ सें मांछौ काटदा काटदा घूंडी री ठाकुरी दा पूजा। तेस बोगतें घूंडो रा राजा मूंका थिया बौण्यौ इ। तीनी ल्हाली रेहड़ तेतें पूज्यो तेस राजें श्रो तेसरी बादी पौरजें क दीता लान जें सारें पौरगणें दा जू कुँवें ठींड ओ सें मूं साथें मकाबला कौरो। सें रेहड़ बेशा एकी चौशौ री बावें आगें रा जेथो बादा गांव चौश लैग्रो थिया। जूइ तेस नीड़ें डेग्रौ थीया तेस ई सें भांगी जाग्रो थीया।

ऐरी ई देसौ री बात श्रो। राजा श्रो तेसरें टाबरौ रे बादें भोणें मौरी लागें थे चौशें भूखें। तेस राजैंक दीती कुणियें एरी सला जें इतें घूंडो री रास्तो दा तो नईं कुवें एरा ठींड जु एस भांगी सौको पौर शूणो जाई जें कल्हांजो पौरगणें दा ठेबगौ रें लाक मांजें एक कनैइत बौसौ। तेसरा गांव श्रौ बतिउड़ा। ठीडवी री तेईं बतीउड़ी कनैइत श्रौसौ व्यौ मानें दे। तेस कनैइतौ नाईं धौना। सें शूणा जाई बेगें डारा ठींड। मरदेइय नी तेसकें कौंनरें बी ना टापिदें। जें कुवें तेस लेंव बौलो तौवें केता ऐ रेहड़ भांगियो ला तौबें शांति औई सौकौली।

राजें तबियें दो सपाई बेदें श्रो सें पूरें समभोवें ज तस बौड़ी इर्जातयें पां बेदे श्रो मेरी आड़तो बी दे जें घूंडो रें राजें छाडें उ हामें तां बेददें।

सै दूनें सपाई तेस बेदणें री तेईं बतिउड़ें पूजें। तेसरें घौरें डोवें। जेस बौगतें सें तेसरें आगें पूजें सें था सूता। तेसरी जनानें बोलो जें एबी तौ नी बझेलिदा। जो ऐ बिवजोला तौबें एमरें तबाखू भौरनी ड़ावणां श्रौ। जौ तबाखू पींदा लागौला तौबें आवे तुमें भिठे। तौ बोलें आपणी बात। तीनें कियो तोरो ई। जो सै तबाखू पिदा लागा सै डोव भिठे। तीनी से पूछें जे केथौ आए ओं कंई आए औ। तीनै जवाब दिता जै हाम उ घूंडो रें सपाई। हामें छाड़ेंउ राजे। तनें मोलाओ

एक रेह्‌ड़ । सै बेशाओ एकी बावै पौशै । जुई तेतै चीशौक डेयौ तेसई भांगौ सै । राजै की औ ओरौज जे तू आव सोक तौ ऐ मसीबौत टौलो लो ।

तेस बातौ शुण्यौ धौना शीगा शीगा त्यार ओआ । तीनी तीनौ सपाइक खाणै रो चणाओ । खायी पीयौ सै तेथौ हांडदे लागै । घूंड पुज्यौ राजै तेसरा बौड़ा आदौर किया । तीनी बोलो ज केताओ सै रेह्‌ड़ । तेती गोआ सै रेह्‌ड़ बी हासी सै थिया राजै रै बासै दौ थौड़ा इ दूर । तीनी रेहड़ै दीता लान जै सारै सारै सारै पहाड़ो दी जै सौती सूइयौ कूवै कनैतिण तौ मेरा मकाबखा कौरौ ।

धौना थिया देवी रा पासौक । तेस दी एकै ई भाण आयी ओ तीनी पौगियै गाऔ इ आंगणौक छलांग दीती । दूजी चोजी छलांगौक पूजा तेस रेह्‌ड़ो आक ।

"आहां रै बै पौलियै तू कौर वार तौ रोई मेरी बारी" तीनी बोलो । रेह्‌ड़ै बोलो जै "औला कनैइता पछताऐला तू तौ ना बोले" धौनै बोलो—रेह्‌ड़ा ! बतिउड़ी कनैइत पौलियै वार नेई कौरदै । तीनी रेह्‌ड़ै तेबियै तरारी रा वार किया । धौना ना भांगिया । एक्की बौई धौनै सनेरुवै ओय्यौ डांगरै लाई ओ रेह्‌ड़ बचारा चित ।

धौनै री एई ठिडव्यै बादै घूंडौ रै मांछौक बौड़ी भारी चैन दीती । औ राजै तेसरी बौड़ी इजौत कौरयौ सै तेथौ बिदा किया । तौ एरै थियै पराणै सौमै रै मौरौद ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ठींड	सशक्त, जवान	7. भिठै	भीतर
2. रेह्‌ड़	एक जाति विशेष का व्यक्ति	8. पौशं	पास
3. मौलैदा	अपनी शक्ति पर गर्वित	9. हांडदै	चलने लगना
4. मछराज	मानुषराज अर्थात अराजकता	10. भाण	देवकला के प्रवेश से मनुष्य में होने वाला कम्पन विशेष
5. चीश	पाणी		
6. भांग	मारना		

सौतेली मां

एक ठाकरौ रा गांव थिया। तेस गांव रा मुख्या रामसिंह था तेमरी पत्नी मरियौ दो महीनै हुए थे। आपणी छः महीनैं री छोटी (लड़की) छोडिऔ सै भगवानौ खी प्यारे हुए। रामसिंह मुख्यै कई रूई पिटीयो एक वर्ष टपाऐ। ओ तैणे आपणे दूजे शादे किए। तिऔं दूजो रै भी दूई छोटी जन्मी।

रामसिंह री पैलकी घरवाली री छोटी रो नांव सुशीला थिओं जिणो तिओ रो नांव थियो तिणे ही सै थिये सुन्दर सै ऐती थिए कि तिऔं रा बखान नाई लिखीदा। तिन दूई छोटी रो नांव लच्छे ओ मैना थियो। सै बड़ी चंचल ओ लड़ाको थी। सुशीलैं खी सै रोज मार पड़वाओ थी। पर बेचारे सुशीला हूं नैं हां कौरौ थिए।

वर्षो गाई वर्ष बीतदे लागै चीनै छोटी जवान होई गोई थी। एकी दिन रामसिंह शहरौ खी डे लागा थिआ तैणे आपणी चीनै देवी बोदी ओ बोलो बेटा हांव शहरो खी डे लागा सौ ताहरै क्या क्या मंगावणो सौ। लच्छीए ओ मैनै आपूखी झुड़के चूड़ी एरी मंगवाई। सुशीलै बोलो बापू मूखी एक बाकरे आणीयों। मुख्या बडा हैरान हुआ। पर तैणे कुछ नाई बोलो। सै सुशील दू बेहद प्यार कोरो था पर साची-२ जोरू रा गुलाम भी था। एकी हफ्तै बासियै रामसिंह शहरौ दू आ। तेणे सुशीलै खी काले भूरे रंगो रे हिरण आणे। बाकरी री जागे तिओ खी एक सुन्दर हिरण जैबे आणे तौ सुशीलै री आखी दे खुशी रै आंसू आई गोऐ। सै रोज डंगर चारदे देऔ थिए। जौबे स गीत गाओ थिए तौ बादे गोरू एकी जागे खड़े हो थिए जे भी सुशीला डेओ थे तेछीदे सौ हीरण आओ थिए। तिऔं रे सौतेले मां तिओ तंग कौरौ थे तिओं खी तूशौ री रोटी देओ थिए।

एकी दिन सै रूए लागे थिए हीरण तीओं फेरे तीऔं फेरे चक्कर काटदे लागे ओ हिरणीऐ बोलो हे बेटी तू कैई रूए लागे सौ। सुशीला हैराण हुए। हीरणीए बोलो हे बेटी तू हैरान नें हौ हांव इन्द्र लोकौ रे रहणे आले सौ। इन्द्र देवै मूखी श्राप दे छाडा सौ जेती ताई हांव कौई रो भलो नाई कौरूले तेती ताई ए श्राप मूंदू नाई छुटदा। ऐजे बात तू कौई खे नें बोले। आच्छा तू बोल कि कि तू कंई रूऐ लागे सौ।

सुशीले बोलो हे हिरण माता मेरे मां बड़े खराब सौ सै मूखी तूशो री खाणें खी देओ मेरा पिता तेबी कामो दा डेआ औंदा हो। राती मूखी पिते

जी रे डौरं तिणो ही देऔ जिणो बादे खी देश्रौ पर तिंदो भी लूण मीर्च ज्यादा पाव। तीश्रों री बात शुणीश्रो हीरणी री आखी दें श्राशू श्राए। हिरणीए बोलो हे बेटी सुशीला तू मूखी तिश्रों तूशो री रोटी देइओ श्रौर ठन्डो पाणे हौरी घास खलाईश्रो तौबें तेरें जुणजो खाणो हौलो मूँदू मांगे। सुशीला रोज तिणो ही कौरो थिए। जुण जो भी सें खाणो रौ चांव थिए सेजो खाश्रो थिए। तिश्रों रा रंग रूप होर भी खीलदा लागा। तिश्रों री सौतेली माए सूचों जैं ए दीन पर दीन मोटे हौए लागे श्राई का बात सौ दाली मांजी कालो तौ कुछ जरूर सौ। तिए श्रापणे छोटे लड़के बीदे श्रो बोलो आई बेटा इश्रों साथी डे आई ऐ केथे मोटए लागे सौ। मैंने सुशीले खें बोंलो हे बहन जी हांव भी श्राज ताव साथी गोरू खें आऊ सुशीला बड़े खुश हुए कि आज मू साथी मेरे छोटे बहन गोरु खें श्राए लागे सौ पर बेचारी खें का पता था कि इन्दरें जिश्रौ दौ का सौ।

हे बहन जी तूए का खाओ सौ। तूए मोटूए लागी सौ। दीन पर दीन ताहरा रुप गुलाबी रें फूलों नोहरा खिले लागा सौ। भोलो भाली सुशीलें सब कुछ तीश्रों खें बोलो। मैंने बोलो आई हांव भी इणो ही कौरु। तौबें तू कौर रौगें। मौए कौबें रोके। जिणे ही तिए हिरणी दे लाए हीरणीए श्रापणें शींगें कौरे तिओं रें श्राख भाने में रुंदे २ घोरी ख श्रो आपणी श्रामे खें नमक मीर्च लाईश्रो बादे बात बोले। तौबें का थो जिणो काटे दे गाई लूण लाई श्राणे दे आपणें बापू हांव हश्रों हिरणें काटणें ना नाऊ तौबें भी खाश्रो ले श्राई। रार्मासह री घर–वालीए रामसीघों खें बादे बात बोले कि इश्रो हीरणी काटौ। आज एकी रे श्रांख भाने काल रेकी रे। रार्मासह भी ऐती शुणो श्रो हीरणी काटणे रे इजाजत देणे। ऐजा पता सुशीलें खें लागा तो सें रुंदे २ हीरणी काई डे। हे हिरणी माता तांव का काटो तेरे हतियारीन हांव ही श्रौसू मौएँ बादो कुछ तेरें बारें दो बोलो।

हिरण बोले हे बेटा तू रूए नाई। ए इन्द्र महाराजौ रे कृपा सौ कि मेरा श्राप खत्म हौए लगा। तू इणो कोंरे मेरो मांस न खाऐ तेश्रो कूऐ गाशी बीलें। दबाए। जा तू डेश्रो। सुशीले रोए रोइयो श्रापणा बूरा हाल किया। श्रो मन ही मन भगवानो खें बोलो मौए भगवान कुणजा पाप किया जू मां तौ छिने के ना ऐबें मेरें मां दू भी प्यारे हीरण माता भी मूँदू औलग हौए लागे सौ। सुशीले तिश्रों हीरणी रो मांस कूए गाई गाई बिलको दबाश्रो।

दिन पर दिन डेऊदें लागें एक राजा भेषौ बदलीश्रौ तिगोदा श्रा। जिणां ही सें तेस कूऐ काई पूजा एक सूनें रें पेड़ौ देखीश्रौ से हैरान हुआ तैणं से पेड़ हीलाऊणा चाहा पर सें हीला ही नाई। से श्रापणी राजधानी खी बापस डेश्रा। तेणें श्रापणें सिपोह भेजें पर तौबें भी सें पेड़ नें हिला। राजे बड़े कोशिश किए पर तेरे दाल नें गले।

राजे नगर-नगर गांव डिंडोरा पिटवाया कि जू श्रादमे ऐस पेड़ौ गाड़ौ ला तेसखी हांव श्राधो राज देऊला और अगर से कोई औरत हौले तिओं साथी हांव

शादे कौरूला। सारी दुनीया ते चुटे गोए पर सं पेड़ टस दू मट नं हुआ। सुशीलें रे मां और दूई बौणी भी आई पर तिनरें जाणं कुछ न हुओ। तेस गांव रा एक बूड़ा राजें काई डेआ ओ तेणे बोलो कि हे महाराज हमारे गांव दे एक बहुत ही खूबसूरत बेटे सौ पर तिओं खे कपड़ें लत्ते नाई मूंडो दो जुओ ही जुओं सौर तिओं रे मां सौतेले सौ सें बड़े अत्याचारीन सौ। राजें आपणे कहार पालकी कौरे छाड़ें और दासी भी भेजी गौणें कपड़ें भी भेजें। सुशीलें खे गौणें झुड़के बामे तिऔं रैं मूंडो दू जुओं गाड़ी। ओ सें पालकी दे बठाले जुणजा भी तिओं देखो था सें बेहोश जेआ हो थिआ सें देखदा ही रौ था। जिणें ही सें पालकी दू उत्तरे राजा तीओं देखीओ हेरान हुआ ओ मन मन ही तेणे इरादा कौरडा कि शादे कौरु ला तौ इओं साथी नाई तो चाहे ए पेड़ ढालो बांव न। सुशीला जेबे पेड़ो काई पूजे स जोरं-जोरं रुंदे लागे। राजमात तिओ काई आए ओ पूछो हे बेटी तू कंई रुए लागे सौ का बात सौ तू मूख बोल सुशीले आपणं सारे कहाणे राजमातें खें सुनाए जेओ शुणीओ राजमाता ओ राज बड़ा ही हैरान हुआ पर राजमातें बोलो कि एओं रा का पोता (परुफ) सौ कि एं बात ठीक सौ के गलत। सुशीलें तेतो शुणो ओ सूल-सूल पेड़ो बील कदम बड़ाए। सारी जनता ओ राजा राजमातें रें जिऊ धड़के लागे थिए। सुशीलें एक ही धाके दा स पेड़ डाला सारे जनता सारे बोलदें लागे राणी सुशीला देवी री जय। सुशीलें रे शादें राजें साथी हौई गोए। रामसींह भी बड़ा खुश था तेसखे भी आपणी घौरवाली रे कारनाम रा पता लागा। और तेणे आपणे घौरवाले हमेशें खो आपू दू औलग किए। भगवान रैं घरो दे देर सौ अन्धेर नाई। जुणजा सौ सेजा ही रौ।

पर सौतेली मांओ रो जोऊ ऐबी भी ठान्डो नाई हौओ थियो। सुशीलें एकी बेटें खो जन्म देणा सें राजे खो रोटी ओ आपणे बेटें रे देखभाल आफी कौरो थिए। एकी दूस राजे तिओं खे बोलो। हे प्रिया ! तू ऐतो काम कंई कौरें दास दासी बतेरी सौ करने आली। हे महाराज ! ए तो मेरा धर्म सौ हांव अधर्मी कौणं बौण भारतौ रे नारे चांव गरीब होले बांव अमीर तिओं खो आपणा पति ओ बच्चे ही सब कुछ हो सौ जो बें हांव ऐतो ना भी कौरु ले तौ बें हांव मां क्यों रे कदौ रे पत्ने। राजा तिओं री बात शुणीओ बड़ा हैरान हुआ। तेसरा मन इणी पत्नी पाईओ खुशी कौरे झमदा लागा।

एकी दूस (दिन) करमो रे मारे सें कूएं बील्लै डे। तिओं री सौतेली आमें सें देखे और आपणी बड़ी छोटी खे बोलो। बेटा लच्छीए ! तू सुशीलें खें इणो बोले कि बहन जी आपणें झड़कें मुखें दे आई हांव किणे लागू तू मेरं बाम कि तू किणे लागें। बेचारी भोली भाली सुशीलें भी तिणो ही कियो जौबे सें कुएं दे झाकें तौ लच्छीए तीओं दा धाका दीणा। ओ सें पाणी मांजी पड़े। लच्छीए लाम्बो घुंघट गाड़ो ओ महलो खो डे। ऐजा तमाशा एकी कुम्हारें देख ला थिया सें शिगा-शिगा आ। औ सुशीले राणी रे जान बचावें। बेहोश सुशीलें रें पेटो दू तेणें पाणे गाड़ो।

सुशीलै रा बेटा बड़ा भारी रूग्रौ था। ना ही राजै रा खाणा स्वाद बौणौ था। एक दिन राजै तिग्रों दू पूछो हे प्रिय रानी तू मूंद घुंघट कंई कौरे और बेटा भी आजकल बहुत रूग्रौ न ही मेरा खाणा स्वाद बणदा। का बात सौ। राणीए कुछ घबराईयौ बोलो महाराज एकी पंडतै बोलो कि महाराजौ दू घुंघट एक बर्षो तांई गाड़ना जालो। ग्राजेकल नेरे तबीयत ठीक नाई सौ। बेटा भी पता नाई कंई रूग्रो।

सुशीला राती राती ग्राग्रौ थिए राजै खी खाणा औ ग्रापणे बेटे खी दूध पिलाग्रो थिए। राजा बोलौ था कि का बात हौले भिशका खाणा बड़ा स्वाद हौ। राजा राणी दू पूछो। हे महाराज राती बेटा चैन करी सूतौ। तौबै मेरै भिसका खाण स्वाद बोणों दूसौ खिरूग्रो तौबै मेरै खाण शिघा-२ कौरै स्वाद नही बोणदा।

एक दिन कुम्हार राजै बिलै ग्रा ग्रौ बोले हे महाराज राते एक छाया जे ताहरे महलो दे ग्राव। राजै बोलो ग्रगर ऐ बात ठीक नै हौले तौ हांव तांव कड़े सजा देऊला।

दुजे दिन राजा पहरे दा रौआ। जिणे ही से छाया भीतरे ग्राए ग्रो राजै से पाकड़े। ग्रौ बोलो बोल तू कूण सौ? हे महाराज हांव ताहरे दासे सुशीला ग्रौसु। सुशीलै आपणे बादे बात बोले ग्राच्छा कोई बात नाई सुबह हौणे दे। राजा बड़ा हैरान था।

जौबै सवेरा हौआ तौ राजा बनावटी राणी काई डंग्रो ग्रो बोलौ राणीए हांव तेरी शौकली देखणे खी तौरसे गा सौ मूखे ग्रापणे शौकल दखाओ। बेचारे लच्छे सूखै पाछटू (पत्ता) नौदरे कांबदे लागे। राजा तिओं दा एक हंटरौ रा पटाका लाओ तिग्रौं रा घुंघट उठाया।

राजा सारी जनतै एकी खुलै मैदानौ दे कौठे कौरो ग्रौ ग्रापू रथौ दा बोणा रथौ दे से रशे बानौ सुशीलै री मांओ ग्रो लच्छी भी तिदे ही बानौ औ रथ दौड़औ से पाछौ चिल्लाग्रो से बूरी तरह घायल हौए लच्छे ओ तिग्रों रे मां बोलो हे सुशीला बेटीए ग्रामू बचाग्रौ ग्रामे उमर भर तेरे सेवा कौरू ली बचाग्रो बेटा। सुशीला हाथौ जोड़ोयो राजे काई ग्रौरज कौरो हे महाराज इन क्षमा करो हांव ताहरे लातौ गाई पौड़। आपणा गुस्सा ठण्डा करौ। राजा जलदी ग्राखी कौरे सुशीलै राणी बौलै देखौ जबै सुशीलै री आखी रे नर्मे देखो तौ राजा बड़ा हैरान हौआ तेरा गुस्सा एकदम काफूर हौग्रा औ तैणे रथ रोको। दूई मां बेटी सुशीलै रे लातो गाई पौड़ी। "भारी बुराई गाई अगर कोई क्षमा कौरौ से सभी दू बौड़ा दान हौ।" बोलने ही खी कि तौएं का पापी खी क्षमा दान देणा। तेहो बासिए सब लोग सुखी थे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छोहटी	लड़की	11. आशू	आंसू
2. टपाए	व्यतीत किए	12. मांजी	में
3. ताहरे	तुमने	13. जियो दो	मन में
4. चारदे	चराते	14. नोहरा	की भांति
5. गोरू	पशु	15. शीगं कौरे	सींगों के साथ
6. डेग्रो	जाना	16. रुंदे रुंदे	रोते रोते
7· तिस्रों	उसको	17. होलाऊणा	हिलाना
8. फेरे	गिर्द	18. शादे	शादी
9. मूखी	मूर्ख	19. कीणे	कैसे
10. छाड़ा	दिया	20. भिशका	सुबह का



ब्राह्मण ब्राह्मणी

एकी देशा दी एक ब्रह्मण आपणी ब्रामणी साथी रौआ तौ। सो ब्रामण भरी गरीब तौ। सो ब्रामण जे दोता लै कोदा का खाणा ले आणी हेरा तौ ता बैड़कै खाणीए हौआ ती तेबे फ़ीकर पड़ी नी। एकी बेरा तीने चार पांच धंड़े भूखे रहियो होए गए। तेऊ रियासतीय राजीय दूई सपाहो बामणी तलाशी दी तै। तीने सपाहीए तेऊ ब्रामणा का जात पूछी और सो तीने आपू साथी राजा काले नींओ और तेऊ लै बोलो कि जे तू राजिए सवालो ठीक जवाब देओ ता ताले इनाम मिलनों। ऐणों शुणीओं ब्रामण बड़ो खुश हुओ। राजीए ब्रामणे खूब आदर खातर की।

दूजं धंड़े तीनीं पौंडते राजीए सवालो ठीक जवाब दिने। राजिए खुश होईओ ब्रामणा लै चार शौ अशर्फी दीनी। तेवे ब्रामण घौरा ले चालो और सोच सोचो की ऐतरी कमाई देखिओ मेरी ब्रामणी भरी खुश होणी। ब्रामण जेबी जांगला दी न पहुंचो ता तेऊ लै राच पौड़ी गई। तीनी भी धौनी पाई नूं अशर्फी तेता गाए पाओ चादरू और चादरू गाए सूतो आपू। तेऊ बामणा लै ता दौशा फीरी गई। एणो ता तुम्हें जाणा ही हो कि औ दशाफेर बड़े बुरे होआ। तेऊ, ब्रामणें तेबी सूतूआ ही ता कि दौशा माणछे रूपा करियो आई और से बाढ़ी अशर्फी आपू ले नी जेबी ब्रामण सूतियो ऊबूआ ता सो बड़ो परेशान हुओ कि सै अशर्फी तां केणिए नीं हेरी। ब्रामण राजा काले वापिस डेबूआ और राजा काए सारो हाल शणाऊओ राजो बड़ो दयालू तौ, तीती ब्रामणा ले तोई चार शौ अशर्फी दीणी। ऐणी ऐथखे ब्रामणा सीथीजौ दौशों खेल चौ, चौऊ बेरा चालदो रौ लागी। एकी बेरा राजिए सोच्चो कीजौ ब्रामण मुं रोज रोज ठोंगा ता नहीं। एकी धंड़ ब्रामणा पा चुपा चापी आओ। तेऊ ब्रामणा ले तीन कं भी राच तीदीं ही पौड़ी। ब्रामणे तीनकं भी तैणा ही कीओ। और सूतो। राजिए सोचो कि जी ब्रामण ईना अशर्फी इंदी चोरा हौणौ। राजो भी एकी पेड़ा पाए रो लुकी। आधी राची सौ दौशा तीना अशर्फी गाड़दी आई। सो अशर्फी गाड़दी भी लागी ता राजो भी सामने आओ दौशा पूछदो लागो। दौशं बोलो कि "ऐऊ ब्रामणे ले ता दौशा ही आ ऐणी बेशी नी।" पर राजिए बोलो कि तु ऐरी बादी अशर्फी वापिस कर। दौशे ता बोले कि राजीआ तू पोरू मान नहीं तो जो दौशौ तां बीले आ। राजिए मंजूर कीओ और बोलो कि जो कुछ तू मेरी करी सकी करी पर ऐऊ ब्रामणी बादी अशर्फी वापिस कर। दौसे भी बादी अशर्फी ब्रामणा ले वापिस की। तेवे दौशा राजा बीले गई फिरी। तेता बाद राजो शकारा खेलदे डेबूआ और सो राजो शकारा खेलदा खेलदा एकी दूजे राजीए मुल्का दा पहुंचो। सो एकी तलाबे कनारा दी आराम कौरदे बेशो। तेऊ काए खाणा लं खरबूजौ तौ। जेबी तीनी सो खरबूजो

खाणा ले गाड़ो ता सो खरबूजिए बदले एक माणछो मुंड तौ । तेऊ वकता दी तेया रियासतीए राजीए छोटू गड़ावूआ (राछो) नौ तौ । सो मूंड तेऊ राजिए छोटूए मूंडा साई तौ । तेऊ राजा लै हाथा और लाता काटणिओं हुकम हुओ किलै की तेऊ गाए तैया रियासतीए राजीए छोटूओ खूनो इलजाम लाओ । हाथा लाता काटणा बाद सो राजो कूड़ा कवाड़ा । मांहैं दीनो फैंकी ।

तेसी बीथी एक तेलण बजारा लै तेला बेचदी डेवा तौ । राजीए बोलो हे तेलणीए जैं तू मेरे हाथा लाता गाई तेल लाई ता तेरो एक पैसो बडनो । तैलणीए सारी गल आपणी शाशू काए शणावो । तलणीए भी आपणी शाशुई गल शूणी और राजिए हाथा लाता गाई तेल लाओ । तेऊ धेड़ा दी तैलणीओ बाकी ही एक पैसो बड़ो । तैबैं तैआ तेलणीए सो राजो आपणा कालै नीयो । राजो भेरवै राग बड़ी अच्छी लय दी गाई जाणा तौ । एकी बेरा राजिए छोटिए तेहरो राग शूणों और तेऊ गाए मोहित हुई । और तेऊ सीथी शादी करनीओं फैसलौ किओ राजीए सो आपणी छोटी समझावा पर सो न मानों । जैबैं राजो महला लै आणों और तीनी आपणी सारी कथा तीदी रियासतीए राजा कै शणावीं ता सभी लोग हैरान हुए । तेऊ राजिए सै हाथ लात भी तीदी एकदम ठीक हुए और सो शादी करिओ आपणी रियासती लै वापिस हुओ और आपणी रियासतीओ राजपाट समभाड़ो । जैं ऐणे सब ओ दौशै ही फेर तै ।

कथा कहनी गोआ बिसरी
आ गोवा एबे घिसरी ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. दूजै-धेड़	दूसरे दिन	5. चुपा चापो	धीरे-धीरे
2. राच	रात्रि	6. मूंड	सिर
3. सूत्तो	सो गए	7. लाता	पांव
4. उबूआ	जागा	8. शाशू	सास

●

टुंडी राकस

पहलै जमाना दी एकी गांवां दी एक बुढी रोआ ती । तैआ बुढड़ीयैं चार छोटू तै । तीनै नांव तै टांगड़ो, मुंडड़ो, बालो और सभी का मांठड़ै छोटूओं नांव तौ खंकच्चणू । एकी बेरा तीनैं चारी छोटूयैं बोलौ कि म्हारै खाणो हलुओ । ता तीनी मांए बोलौ कि सभी का पौलै ता आग जा आणनी । तेऊ जमाना दी आग भरी मुश्किल करीओं जा ती पैदी करनी । तेबी आजकल जेई माचिस और

लाईटर नही होआ तै। तीनै बौढड़ बौढड़ चीनो छोटूयें ता आगी आणना लै न कीए। तीनी सभी खा माठड़ै छोटूए बोलौ कि आग ता हांओ आणु। तीनी ठौठी चाकी और आगी आणदौ चालौ। भरी दूर जांगला दी तेऊ लै एक आगीयौ घंनो घोशै। सौ घंनो का लै डेऊओ और तीनी टुण्डी राख्शा लै बौलौ कि मामा तु मुलं आग भी देओ। टुण्डी साकसे बौलो कि भाणजा तरै आग कीऊतै चंई। खकचणूयें बोलो कि म्हारै हलुओ चाणनों तबै ठुण्डी राकसै बोलौ कि मु आग ता देऊ शैई पर मु भी आज तेरे पावणें आणों।

खंकचणूयें आग भी आणी और टुण्डी राकसा सीथी घरा लै आओ घर के पहुंचियौ बुडढी ता लागी वं हलुआ चाणदी और सै छोटु और राकश बेशै आपणी गाला लांदे। टुण्डी राकसे बोलो कि जेतीं बुडढ़ी हलुओ चाणा तेती म्हारे कथया देणी खंकचणूयें बोलो कि पहलं मामा तु दै। टुण्डी राकस भी तबै कथया देदो लागो तीनों बोलौ एकी ओ लै बड्डी, एकी ओ लै टांगड़ो, मुढ़ढो बालो और एकी ओ लै खंकचण और एकी ओ लै हलुओ। जबै टुण्डी राकस कथा देंइयी मूको ता खंकचणूयें बोलो कि मामा तबै मेरी बारी आई कथा देणीयी। सो भी कथा देदो लागो और बोलौ कि

टांगड़ौ पाकड़ा टांगा का,
मुड़ढा शाकड़ा मुंडा का,
बालो पाकड़ा बांई का,
खंकचणू ला फाट,
बुडढ़ी करा प्रात।

(मतलब टांगड़ो, मुडड़ो, बालो तेस चीओं धुरै दो पाकड़ो लै खंकचण तेस दे फाट लाओला और बुडढ़ो प्रात कोरौ ले)।

टूण्डी राकसै जो कथा शुणी और सो भरी डरो। तीनौ बोला कि भाणजा मुंईदा भागणो दै। एवं मु केबीयं भी नहीं आंदो। तबै सो तीदा भागो तीनै भी साभिये हलुओ मजा के खाओ। देखो भाइयौ तीनी माठड़ै जै छोटूए, खंकचणूयें राकस भी तींदा डौरे मारै भगाऊयो। जो सब अकलीओ ही काम तो तबै ही ता म्हारे बजुर्ग बोला कि, "अकली के खाईया संसारो एतो मतलब जौआ" कि अकली के ही सारै काम होई सौका।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छोटु	लड़के	3. चाणना	बनाना
2. बोड़के-बोड़के	बड़े-बड़े	4. आगीया घंनो	खूब आग



भाग ३. :– कुल्लवो जनपद से सम्बन्धित लोक-कथाएं

क्रम संख्या	कहानी का नाम	संकलक
१.	अनोखा स्वर्ग	ठाकुरदत्त शर्मा
२.	फूल दी बेटी	सुरेन्द्र
३.	चालाक जट	सुरेन्द्र
४.	सार नवार बारह ग्रोम	सुरेन्द्र
५.	हुरंग नारायण	एम० आर० ठाकुर
६.	नकली देवी	एम० आर० ठाकुर
७.	काग भाखे राखसणी रा भीत	एम० आर० ठाकुर
८.	दादी हिड़मा	एन० सी० शर्मा
९.	रूप–बसन्त	विद्या शर्मा
१०.	शूरू री देवी	विद्या शर्मा
११.	रुभ री कथा	विद्या शर्मा
१२.	बाबा कुआरी	नरेन्द्रकुमार
१३.	दिआरी ठाकुर	व्योमेशचन्द्र
१४.	जचौली जातर	व्योमेशचन्द्र

अनोखा स्वर्ग

एक किसान त तेऊये चार छोटूअ तै। सै वडे नालायक तै पर सभी होछह जूण छोटू त स बड़ह समझदार त। तेऊओ नाम त पंकज। किसान तेऊये पंकज कै बडह ही प्यार करा त जेवी केभी दूर देशा लै डेउआ त ते भी स किसान तेऊ पंकजा लै वीते खेलटू और नअऊ-नअऊ कापड़ै भी आणा त। इना चिज्ञा संगह स पंकज बड़ही खुश हुआ त। तेऊ किसाने लाड़ी गेई मरी। पर तेऊ किसानै तीना छोटुअे खातरी दुजह विवाह नहीं किआ। स किसान आपी सवे करा त। भाणने-वाणने ओरू वणा-वुटा हीं सवे काम आपी ही करा त। थोड़ी बहुत साहयता पंकज करा त। पर स पंकज त बेचारह छोटह ज तेऊअै कै काम लैओ त करी जूण कुछ तेऊका हुई सकहा त स तेऊ काम करि लैआ त। पर तेऊ किसाने सै चन छोटू जातीये निखटु तै कोड़ीओ काम भी नई त तीनो। अणै कर स बेचारो बड़अ दुःखी रह त। एकी वेरके गला स किसान ढगअै वाछु लै घाह आणदह त डेऊअनह। पर जो भी सह घाह काटदह त लागह नह तेभी सह एक जानी का फिशलह और ऊंदी रुड़ह रुड़दी-रुडदी स काफी हुंदी रुड़ह तेऊदी काफी चोट आई। तेऊअै ती दे आपणै प्राण छोटै। जेवी तेऊ छोटुअ कै तेऊअे मरने खबरा पूजी ता स पंकज जोरै-जोरै रौंदह लागह। पर अवै कै लागह त हुई। जुण गल हुई गई सता हुई ही गई ती। पर तेऊ गाये एक होर आपतियो पहाड़ चूटह। तेऊये चीये भाई तेऊका अलग हुअ। पर तेऊ पंकजे हिम्मत न हारी। एऊ संसारा रचने आड़ै भगवाने आसरे स पंकज बेचारह अपनी कठिनाई संगह झूझदह रह लागी।

तेऊये पिता जीयं जूण खेलटू तेऊ लै बारह का तै आणै नै तेऊ पंकजे सै सबे इक्टं किये। ता तेऊए कुछ होर समान भी खरीदह तबै तेऊअै एक दुकान पाई। थोड़ै धेड़है भीतरी ते अवं काफी पैसे हेरे कमाऊई। अणै करा तेऊ सोचह की एकी एकी बूंदा करै घड़ह भरिया। थोडै ही धेड़े भीतरी तेऊअै काफी पैसे कमाऊअ। तबै तेऊ पंकजं काफी आच्छी दुकान पाई। तैंआ दुकाने कै अबै स काफी आच्छह धना आड़ह हुअह। तेइऐ चिये भाई तेऊ का बड़ै जलदै लागह। तीनै तेऊ मारणे री स्कीम वणाई। तीनै भी भाइ लै वोलह कि भाई पंकज तू अणै कर। हामां तू आपू आगे नौकर डा। तेऊ पंकजा तीना गाये काफी दैया आई। तेऊ भी टालै सें आपू आगे नौकर डाई। पर सें चीअें भाई सारी सारी धेंड़ी कुछ भी काम नैं करा तै। तेऊ पंकजे तीना

लै बोलह कि बिना परिश्रमा करिया एऊ संसारा किछ भी नही मिलदा । पशु भी कुछ काम करा । तुम्हे ता आदमी चारे हाथ परा आलू । पर तेइये इना गलै तीना गाये कोई असर न हुअह । तीनें अबे तेऊ मारणे स्कीम बणाई तीनें चौ भाई ये स पंकज एकी बोरी दी बन्द कीओ और एकी कुएं दी राचो राच चलह फेंको । पर स कुअह काफी डूगह नेती त । स पंकज तेता के भगवाने कृपा कै कैणा करी बची गेओ । जैबे स पंकज घरा ले वापिस आओ ता चौअ भाई बड़े हैरान हुअह तीनें तेऊ का पूछह भाई तू कैणे करे बचह । हामे ता तू कुअ दी हेरह त फेंकी । तेऊ पंकजे अब जाणों कि नीता सी ऊचा नीचो ज व्यवहार करनू तेऊ तीना का बदलह लेणे ली तीना लै बोलह भाईओ जेऊ कुअ दी तुम्हे मू फेंकह त स ता स्वर्गो रास्तहआ । तेथी बीती मू माता जी का पिता जी कै मेड़ी माड़ीआ आओ । सै पंकजे चौअ भाई मूर्ख ता आसा ही त ! तीनें चौ भाई ये बोलह हामा भी टाल तू बोरी भीतरी भरी भारीआ तेऊ कुएं दी । हमें भी मां बापा का मड़ी माड़ीईया आहमें । पंकजै सोचह मूर्ख सी मूर्खा व्यवहार ही करनू आछो । तेऊ पंकजे भी सै चौये भाई बारी दी बन्द कीअ और एकी दूजे डूग कुएं दी टालै फेंकी । जिऊ कुअं का सै बची ही न सक दें त । तेऊ पंकजे तीना चौ भाई के अनोखह स्वर्ग दसह । तैबे स आपणै घरे आइया आरामा के रहद लागह । तेऊअ पश्चाताप ता किओ कि सै आपणै भाई यल मारी पर जे सै तेऊअ जानी लदें तै तुलह नै ता स कणें कै चुपी रहो सकद त । ठीक ही आ अगल कि मूर्खा संगह मूर्खा ज व्यवहार ही करणु जा ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. छोटू	लड़के	8. कीओ	किया
2. खेलट	खिलौने	9. राचो राच	रातो रात
3. बाछु	बछड़े	10. आहमें	हमें
4. फिशलह	फिसला	11. डउआ	गया
5. प्राण छोटे	प्राण त्यागे	12. रुड़दी रुड़दी	फिसलते फिसलते
6. अणे करा	ऐसा करने से	13. डूग	गहरे
7. धेड़े	दिन		



फूलदी बेटी

एक ब्रह्मण तो । तेऊ ऐ दुई छोटी ती । तेऊऐ ब्रह्मणी गेई ती मोरी । सो ब्रह्मण दोती सुतीश्रा उजिया तो और जंगला का फुल पाची उचिया राजे दरबारा ले निया तो । ऐथे दी गाई तेऊश्रो गुजारो चाला तो । तेऊए दुऐ छोटी बोड़ी भक्तणे ती । से दोती राची उजिया ती । नहाइया धोइया ती तेथा बाद साफ-सफाई कोरिया 'बि माते' पुजा कोरा ती । एक दिन तिने आपणे बापु ले बोलो कि हे बापु तों फुला पाची चुंकदे दूर जांगला ले गोआ नाणों । एवे हामें दुए बेणे घोरा ही दी फूल में । तू फूल पाची श्राच्छी के उचे ।

तेथा बाद दुए बेणे दोती नहावी दोहबीया श्रापणे नाक मुंह सिभा ती और फूल-पाची बोणा ती । ब्रह्मणे फूल पाची श्राच्छी के उचे श्रौर राजये दरबारा ले नाश्रो । राजो तिना नोखे फूला हेरिया हेरान रोही गो तेऊए ब्रह्मणा का पुछो कि हे ब्रह्मणा तेरे जे ऐने नोखे २ फूल श्राज किदा का श्राणे । पेले ता ब्रह्मण डोरे मारे बोली नीसो । बाद राजये डरावणे-धमकांश्रणे गाई तेऊऐ सच्चाई बोली दिनी । राजे तेऊ ब्रह्मणा ले बोलो कि हे ब्रह्मण मुं एवे तेरे श्रागा ले पाउणे बोणिया आणो ।

ब्रह्मण बेचारो दुःखी होइया घोर वापिस आओ दुऐ छोटी ए श्रापणे बापु का दुःखी होणश्रो कारण पुछो । ब्रह्मणे बोलो कि जो सारी थारी खोटी श्रा न मु थारे फूल-पाछी नीदो न जो सयापो श्राज पोडदो । एवे किदा का मेरे राजे श्रौर तेऊए नौकर चाकरा ले राइन पाणी देई लाश्रो । राजे पोरशी पाउणे बोणी आ महारे घोरे श्राणों । दुए छोटी हासदी लागी श्रौर बोलो हे बापू तू दुःखी किले होआ । श्राणे दे तऊ राजे । हामे दुए बेणे तेऊ आपी सम्भाड़ी ।

राजो भी श्राश्रो । दुए बेणें तेऊश्रो श्रादर मान कियो । गोरख डिबिया दी कई २ प्रकारे पक्वान बणांऊए । लोग जुण राजे सी आए ने ती तेऊ नाजा खाईया हेरान रोही गेई । तिने श्राजा तेई एणों नाज न खाश्रो तो । राजो नाज नीसो खाई । तेऊए पेले ब्रह्मण का बचन मांगो ब्रह्मणे भी जो सोचीया की राजये मुं गरीबा का के लाश्रो मांगी वचन देई दिनों । नाजा खाईया राजये ब्रह्मणा ले बचन सम्भाणना ले बोलो । ब्रह्मणे भी बोलो दां महाराजा तोया मूं गरीबा का के चंई । राजे ब्रह्मण का दुए छोटी मांगी । ब्रह्मण बेचारो हेरदो ही रोही गो । एवे न ता सो वचन चौड़ी सोका तो न दो छोटीया बयोग सोही सौका तो । आखीर प्राण जाये पोर बचन न जाए । ब्रह्मणे दुए छोटी रोंदा २ राजये हवाले कि श्रौर

आखी दी आशरूए राजे के बोलों हे राजा ! मंह तोंखे आपणं फला साही दुई छोटी दें दो लागो नो । ऐरे वे तू जाणं अगर इना न्ने कुछ हुआ ता तोन्हे ब्रह्म हत्या लागणी । राजये तेऊ लें तिनो आच्छों के डाणदो वचन दिनो ।

महल दी राजये सात राणी ती । जुणा तिना भाई सोभी का लौउड़ी ती सो आच्छे स्वभावे ती । से दुए बेण तिदी एक लेदे कमरे दी रोंदी लागी । तिदी भी से नित नियमा के नहाईया ती और बारी २ के फलिया ती पहली बहण फलिया ती ता दूजी तेआ उची ती । छौ राणीया तिना का एवे इर्षा होदी लागी । से तीना दुई बेणी तोंग कोरा ती । एक ध्याड़ राजा जंगला न्ने शिकारा खलदो नाओ । दुई बेण तेऊके एक फूलो हार दिनो और बोलो हे महाराज ! जेवी जो फलो हार मुरझांदो लागे तेबी तू जाणे हामा गाई कोई विपदा आई गेई । राजा भी तेऊ हारा गोड़े दी पाईया शिकारा खेलदो नाओ । पोरा के तिना साता राणीए से दुए बेणे तंग करणा शुरु कि । तिने बोलो की तामे दुए बेणे महारे सामणे भी फलिया । दुई बेण बोलो कि हामें एक फलवी और दूजी उत्रा । किले कि तोमा कोरणी हामें चोड़ मरोड़ । से राणी निसी मानी । आखीर तिनां दुई बेणे आपणे नाक मुह सिऊए और फलबी । तिना छः राणीए से चोड़ मरोड़ कि और फूल पाची डांडी बगरहा ओरी पोरी फेकी दिले । उधर जेवी राजये नोजर फल हारा गाई पोड़ी तेऊए हेरो सो मुरझांदा लागो नोआ सी छेके २ महला न्ने वापिस आओ सो दुई बेणा चोड़ मरोड़ी नी होरिया दुःखी होई गो । तेऊए जाणो एणके ता मु गाई ब्रह्म हत्या लागणी । तेऊए ब्रह्मणा आगा ले आदमी छाडे । ब्रह्मण बेचारो आंदा दी आपणं छोटिये बुरे हाल होरिया रोंदो लागो ।

तेऊए से सारे फूल पाची और डांडा बगरह ओरी पोरिया कोठे किये और तिना गाई । अमृत छिडकाव कियो दुवे छोटी जीऊंदी हुई । राजये आपणे छ राणी दूर जंगला दी जिउदो गाड़े दी गाड़ी दिनी । आपु तिना सी मोजे के राज कोरदो लागो ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. सुतीआ	सोकर कर	6. सोही	सहना
2. राची	रात को	7 लेदे	अलग
3. नहावी दोहवाया	नहा धो कर	8. नाओ	गया
4. पाउणे	मेहमान	9 छेके-छेके	जल्दी जल्दी
5. पोरशी	परसों	10. ओरी पोरिया	इधर उधर

चलाक जट

एकी शहरे साहुकार ते बोड़े बेईमान । से लुटा ते लोगा बुरे सुले। तेऊ शहरा दी रोहा तो एक जट और एक जटनी। जटे बाबा जोआ ते देणे साहुकारा ले कुछ पैसे। सो सारी उमर तिना पैसे देंदो रो, मगर से निसे पुरे हुई। सो साहुकार तेऊ ठोगा तो। जेवी तेऊ जटे बाबे मोत हुई जटे तेऊ सहुकारा का बदलो लेणो चाहो।

एकी ध्याड़े जट जटणी तोंगा दी ले बेशेने जटे दूरा का आंदो साहुकार हेरो। तेऊऐ दुई शयारी डाकी और जटणी ले बोलो जेवी साहुकार मेरे बारे दी पुछे तू बोले सो खेचा लेआ नाओ नो। अगर सो मु घोरे आणा ले बोले तू ऐ शयारी एणो बोली आ छाडे कि "न श्यारी जटा बेददी" जेवी साहुकार जटे घोरा दी आओ तेऊऐ जोटे बारे दी पुछो। जटणीए भी बोलो दीनो की सो खेचा ले आ नाओ नो। जेंवी साहुकारे तेऊ घोरा वेदणा ले बोला जटणें सो श्यारी एण एणों बोलीआ कि "न श्यारीए जटा बेददी" छाडी दिनी जट जुण तेसीए तो चोरूओ नो ते आ श्यारी हेरीआ घारो के आओ। तेऊए साहुकारा ले नमस्ते की। साहुकारे हेरो की जटे हाथ दी ता तेणों चेलु आ जेणो जटणीए छाडो तो। साहुकारे जाटो का तेऊ चेलुए बारे दी पूछो। जटे बोलो की हमें एऊ एकी दूजे बेदणा ले भेजी। साहुकारा दो लालच आई गो। तेऊऐ जटा का सो श्यारी मांगी और बोलो मु तेरे सारे पैसे माफ करू तू मुले एऊ भेलु दे। पहले आड़ी ले जट ना कोरदो रो। तेखो श्यारी तेऊऐ साहुकारा के देई दिनी। साहुकारे घोरा के नाईया सोभी घोरा वाड़ ले बोलो के तोमें एबे कामा कोरदे खेचा ले न जेवी रोटी सिटे मुँ तोभा आपी खांदे ने दू। जेवी रोटी सिटी साहुकारे सो श्यारी एणों बोली आ कि "न श्यारी मेरे घोरा वाड़ खांदे बेद" छाड़ी दिनी। श्यारी आपणे उडी गई। से तेऊऐ घोरा बाड़े सारे ध्याड़ भुखे मोरे। साहुकारा जट चलाको गाई गुस्सा आओ। सो तेऊऐ घोरे नाओ। जटे भी सो आंदा हेरी हेरी। जटे आपणे सारे कमरे दी लाल रांग फोचो और आपणी छेउड़ी छेड़ा गाई सतावी डाई। आपु एकशे बीन बजांऊदो लागो। जेवी साहुकार तेऊए घोरा के पोंचो सो कमरे दी खुन हेरीआ डोरी गो। तेऊए जटा का एथो कारण पुछो। जटे बोलो साहुकार जी जेवी मु गुस्सो आ तेवी मुँ आपणी छेउड़ी काटी लेऊं। तेथा बाद मुँ एऊ बीना बजाऊ और मेरी छेउड़ी जीउंदी हुई जा। साहुकारे हेरो जटनी छेडा गाईया खोड़ी उजवी। साहुकार पाछलो गोला भुली गो। तेऊऐ जटा का वीन मांगी। जट न करदो रो। मगर आखीर तेऊ से बीन देई दिती।

साहुकारा कई ध्याड़े ओरू आपणी छेउड़ी का नाराजतो। तेऊए जाणो जो आच्छो ढंग आ। तेऊए घोरो के नाईया आपणी छेऊड़ी सी झगड़ो कियो और सो काटी दिनी। तेथा वाद सो सारी ध्याड़े सारी राची बीन बजाऊंदो लागो रो पर सो काटी नी छेउड़ी केणके लागी ती जिऊंदी हुई। आखीर रोंदो कलांदो साहुकार फिर जटा आगा ले नाभो। जटे फाट फट सारे कमरे दी दुई चोन

मोरेने मुँशे फेंकी डाए । आपु एक संदुका दी चाकु परिया बेशी रो । जेवी साहुकार जटे कमरे दी पोंचो सो वासा के नाक बन्द कोरदो लागो । तेऊए जटणी का पुछो की जो एणी गंदी वास किदा का लागी नी आंदी । जठणे सो संदूक खोजी जिउदी जट चाकु पाइया तो बेशोनो । तेआ संदूका दी एक छेद तो । साहुकार ति नाका लाईया शिगदो लागो जटे तेऊओ नाक काटी दिनो । साहुकार आपण नाका ढाकीया बाहरे भागो । तेथा बाद सो जटा आगा ले पैसे मांगदो न आओ । चालाक जट और जटनी सुखा के जिऊंदे लागे ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ध्याडे	दिन	6. मुशे	चूहे
2. खेच	खेत	7. किदा का	कहां से
3. च्यारी	चिड़िया	8. खोजी	बताया
4. पोचो	लगाया	9. ढाकीया	पकड़ कर
5. राचो	रात को		



चार तवार बारह औंस

एक ब्रह्मण तो । एक ती तेऊऐ बेटी । तेऊए ब्रह्मणी गई ती मोरी । तेऊऐ बेटी बोड़ी भक्तन ती । सो दोती उजवोया चुल्हो चौको देआ ती नहाइया धोईया ती और तेखो 'वि माते' पुजा कोरानी । एक दिन ते आपणे बापु ले बोलो कि बापु तू ब्याह कोर । हामें दुई का न घोर चानणों । तेऊऐ सो बोड़ी समभावी के बेटी मौसी होआ बुरी । पर सो निमी मानी । आखीरकार ब्रह्मणे भी दुजो ब्याह कियो । पहले ता रोही नो मौसी आच्छी के, पर कुछ महिने बाद गई सो जोड़दी लागी । सो ब्रह्मण तंग करदो लागी कि हे ब्रह्मण जो तेरी बेटी बोडी नखटूआ जो सिर्फ पूजा पाठ करनो ही जाणा । न ता जो खेचा लेना, न जो धोरा के काम कोरा । तू ऐ घोरा का पोरु काड । ब्रह्मणे मतीदो बी गो तो ऐवे फर्क आई । सो गो तो नोई छेउड़ीए बोषा दी हुई । ब्रह्मणे एकी ध्याड़े सो आपणे बेटी छोड़ी आणने आने जंगला ले नी । दोपहरे से एक बुटा पाड़ बाप बेटो आरामा कोरदे सुते । छोटी बेचारी भोड़ी ती । ते आपणी पूंजटी ब्रह्मणे चूड़ी सी बानी डाई । जेवी ब्रह्मणे हेरो की छौटी ऐबे नींजे सुती गई, सो खोड़े उजदो लागो । तेऊऐ हेरो की चूड़ी ता बेटीए आपणी पुंजटी सी आ डाई नी बानी । ब्रह्मणे सोचो अगर ता

काटू मु बेटीए पुंजटी ते ता खोंणी ऐ शोभा । अगर काटू मुं आपणी चूड़ी ते होणा मेरो धर्म भ्रष्ट । धर्म ता ब्रह्मणो पहले ही भ्रष्ट हुई गो तो । सो उसने आपणी चुड़ी काटी दोनी और आपणी बेटी घौर जांगला दी काली छाड़ीया घोरे आईगो उधर जेबी छाटीए नींज खुली सो घोर जंगला दी अकेली ओरु पोरु भोटकदी गई । चारी तरफ बराग बगरह भाषदे ते लागेने । सो बेचारी रोंदी कलांदी होउदी गई । आगे एकी तालाए किनारे ते एक बाहटी हेरी । ते जाणों हो न हो एसा कोइ रोहा । सो ते बाहरो ओ पुंजड़ डाको और चालदा २ एकी कुटीया आगे पहुंची । ते कुटिया दी भद्र शिला ती लागी नी । छाटीए मोना दी विचार किओ कि आगर ता मूं सोचे दिले ते तो गोणी जो भद्र शिला खुली अगर मु दोषा बाड़ी ते न खुलणी । भद्र शिला भी खुली गई । छौटीए भीषे साफ सफाई कि और धूप बती जलाबी । ते कुटिया ऋषि तो गंगा किनारे स्नाना कोरदो नाओ नो । जेबी तेउए आपणी कुटीया का धूप बतीए सुगन्ध शिगी सा हैरान रोहीगो । तेउए मोना दी विचार कियो कि अगर ता होए मेरी उपरे कोई ता मेरी बेण होए । अगर मुंका बोड़ी होये तो मेरी मां होये । अगर मुंका छोटी होये तो मेरी बेटी होये । बेटी सोचणे गाई भद्र शिला खुली गई ।

भिदे नाइया छौटीए ऋषि ले प्रणाम कियो और आपणी सारी कथा सुणांवी । ऋषिए तए परिक्षा लेणी चाही । तेऊए सो आपणे जांनु गाई बशेई और मोना दी जो बचार कोरिया कि अगर ता होए जो ब्रह्मण कुले ते ता निखणो मेरी काटी नी गुठी का दुध, जे होए जो होरी कुले ते निखणो खुन, आपणी कानी गुठी काटी दिनी । तेथा का दुध निखुओ । तैथा बाद सों छौटी ऋषिए आगे रोहदी लागी । एक दिन ते कुटिया आगे राजये घोड़ी आई । सो तिदी छौटीए लाई नी साग भाजी खांदी लागी छौटीए सो आपणे हाथा के छड़ी । जी ते ओ हाथ लागो ती सुणेओ हाथ छापवी गो । राजये जेबी आपणी घोड़ी दी सुनयो हाथे छाप हेरी सा तेऊ हाथे नापे छोटी हेरदी चारी तरफ लागो । आखीर सो ऋषिए कुटिया दी पहुंचो । ती ऋषिए राजयो आदर सत्कार किओ और छोटीए गोरख डिबिया दी बोणनों नाज राजे सी आए ने दरबारी के खयाऊआ । राजो नाज नी सो खाई । तेऊए ऋषि का वचन मांगो । ऋषिए भी वचन देई दिनो । नाजा खाईया ऋषि ले राजये बचन सम्भाणना ले बोलो । ऋषिए भी राजे का इच्छा पुछी । राजये बोलो कि हे ऋषि मूं जो छौटी चेई । ऋषि बोलो राजा जो न सोका हुई । जो ब्रह्मण कोन्या और तू आ राजपुत । हमारो शास्त्र बोलो की ब्रह्मणो ब्रह्मणा सी और राजपुतो राजपुता सी ब्याह होणो चेंई । मगर राजो न मानो । आखीर बाल हठ और राज हो० होआ एक सो ऋषिए छोटी राजे सी सवाई दिनी ।

महला दी नाईया राजये होर राणी तेआ तंग कोरदी लागी । सौ ती नाईया भी अलग जे कमरे दी आपणी पुजा पाठ कोरा ती । तिना राणीए सो खुब तंग की और बोलो कि हामा के तू आपणो पेऊको खोज । सो बिचारी बोड़ी दुःखी

हुई । एक दिन तंग आईया दरावा दी छलांगा देंदी नाई । जेवी मो छलांगा देंदी लागी, चार तवार बारह औंसे ति खोड़ हुईगे । तिन छोटी का आत्महत्या कोरनेयो कारण पुछो । छोटीए बोलो कि राणी मुं पेऊके खोजणा ले तंग करदी आ लागी नी । ऐबे मु किदा के तिना के अपणा पेऊका खोजु । चार त्वार बारह औंसे बोला कि तू फिक्र न कोरे । काले तू तिना दूर जंगला दी आपुसी निऐ । तो हामें तेरे पेऊके बाड़ बोणमे । दुजे ध्याड़े छोटीये भी तेणा कियो । जेबी राजो और तेऊए राणी नौकर चाकर समेत जंगला का टोपे तिने गावी और मेंहीर बड़े बड़े थाय हेरे । छोटीएबोला कि जे मेरे मां बावे आ । एक बड़ो सुन्दर शहर आओ । तो बोड़ा कोठा तो । छोटीऐ से तिना सोबी मां आच्छी कोठी दो निये । ति चार तवार और बारह औसी छोटीए मा बाव ते बोणे ने । तिने राजयो बोड़ो आदरमान कीओ । राजये होर राणी तेऊ शहरे ठाट बाट हेरिया हेरान रोही गई । चार तवार बारह औसीए छोटी ले बोलो की जो माया रूपी शहर व गावीदे, मेंई सिर्फ ढाई ध्याड़े तेइआ । तेथा बाद तू इना वापिस निऐ । ढाई ध्याड़े बाद छोटीए राजे ले वापिस नाणा ले बोलो । राजयो शा तिदा का नाणा ले न बोला ता । मगर तेऊ नाणो गो । रास्ते दी तेऊए जाणी बुझीया ओजो वापिस नाणा ले आपणी एक पोलड़ी फेंकी दिनी । जेवी तेऊए पाछा ले मुड़ीया हेरो ति द्वारा जंगल ही जंगल ता । तेखो छोटीए राजे आगे आपणी सारी कथा शुणावी और बोलो कि जो सारो पेऊकयो खेल चार तवार बारह औंसीए कियो ।

राजये आपणी बाकी राणी ले खूब सजा दिनी और आपु ते छोटी सो रोंदा लागो ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. पोरु	परे	6. भोटकदी	भटकती
2. काड	निकाल	7. भाषदे	बोल रहे
3. नींजे	गहरी नींद	8. कानी	छोटी
4. उजदो	उठने	9. पेऊका	माता पिता का घर
5. पुंजटी	पूंछ		

हुरंगू नारायण

एक जमाना एण्डा थी जौंधी म्हारे औज काला रे देऊ बी आसा सेहीं साधारण माण्हू थी। पर इन्हां आगे बल थी, शक्ति थी, गुण थी ता तप थी। इन्हा तप, बल, गुणा री ताकतिये ए होरी लोका-न ज्यादा बड़े घाइया थी ता होरा इन्हा-बे बड़ा मना बी थी जेण्डा आसे औज काल राजा, महाराजा, ता नेता लीडरा-बे मना सी। तेबे-ए इन्हा-बे देऊ बी बोला थी, यानी एण्डा मनुख जो होरी-बे रक्षा ता अन्न-धन्ना आदि देआ थी सो देणु आला देऊ थी। इन्हा रा आप-आपणा इलाका हौआ थी ता औज काला रे राजा से हीं आपणा इलाका बढ़ाणे री तेईएं होरी देऊआ री रियास्ता पांधे लड़ाई केरा थी।

एण्डा-ए भुबू जोता री एकी धीरे एकी देऊआ रा इलाका थी ता दूजी धीरे दूजे देऊआ रा। माण्डी धीरले देऊआ रा ना हुरंगू नारायण थी ता कुल्लू धीरले बोला ग्रामंग नारायण रा राज थी। हुरंगू देऊआ रा असल भण्डार शिलबधानी रे नेड़े हुरंग ग्रां-न थी ता ग्रामंग देऊ जोता रे नेड़ जेंह दरयाणी जगह रौहा थी। ए दूहे देऊ आपु न लौड़दे रौहा थी। केबकी एक माण्डी रे देऊआ रे किछ इलाका पांधे कबजा केरा थी, केवकी माण्डी आला देऊ ग्रामंग देऊआ रे ग्रां पांधे कब्जा केरा थी। पर ते एकी-दूजे रे इलाका पांधे ज्यादा देर नी थी रौही सकदे। एक बारी जोत भुबू पांधे इन्हा री बड़ी लड़ाई हुई ता हुरंगू देऊए ग्रामंग देऊआ रे एण्डा मुका मारू जे सो सदा-बे ए टउणा हुआ, ता हाजी ताईं बी जोधी ग्रामग देऊ निकलणा होला ता तेईरे कोना आगे भाणा वज़ाआ सी तेबे सो उठा सा। पर ग्रामंग देऊए बी तौधी हुरंगू देऊआ री एण्डी मरम्मत केरी जे हुरंगू बे दबारा लड़ाई केरने री हिमत नी पोई।

ग्रामंग नारायणा सोंगे लड़ाई केरना रा ता हुरंगू देऊआ-बे भीरी हौसला नी पोऊ, पर कुल्लू धीरा बे एणे री कोशिश तेईएं छोड़ी नी ता सो भीरी बी लड़ाई रा नाऊं ता नी थी लेंदा पर कुल्लु-बे एणे री स्कीमा सोठदा रौहू।

देऊ आखर देऊ हौआ सा। तिन्हा-न किछ शक्ति एण्डी हौआ सा जो होरी-न नी हुंदी। इन्हां शक्ति-बे बोला सी आध्यात्मिक शक्ति। हुरंगू देऊ ता ग्रामंग देऊ मोल-घराटी केल्हा नी थी केरदे ते आध्यात्मक शक्ति रा बी प्रदर्शन कराआ थी। असला-न ए शक्ति थी जुणी रा हुरंगू देऊए सहारा लेऊ।

तौधी काल मोटर-गाड़ी ता चलदी नी थी। कुल्लु रे लोक माण्डी जाइया गुमा री खानी-न लूण आणा थी। ए लूण ते पीठी पाधे चौकिया आणा थी।

एकी गेरे जियाणी, भमतीर ता समिरगा रे लोका गुमा लूणा आणदे थी न्हौठदे। कीबे जे गुमा दूर थी, दिहाड़ ज्यादा लागा थी, लोका ग्रां-रे-ग्रां कट्ठ होइया लूणा-बे जाश्रा केरा थी। जियाणी, भमतीर ता समिरगा रे ए लोका जेबे किरडू-न लूण पाइया लागेदे थी एंदे, तेबे तिन्हे आप-पोपणी केरी— जो तकड़ा थी सो श्रागे-आगे सीकू, जो थौकदे लागे ते जरा पीछ रौहे। भब जोता री चढ़ाई जुणीए चढ़ी री तेए जाणा सी। सीधी भांऊशी गोहर। जोते रे हेठा-न झाउं भालना ता टोपी श्रौला सा। ऐसा भांऊशी बौना-न जेबे ते लोका लूणा रा भरोटू पाइया श्रागे-पीछ आप-आपणे थोगे लागेदे थी जांदे, तेबे सेभी-न पीछे बचारा एक लंगड़ा माण्हू बरेस्तू थी मजे-२ चोलदा। बाकी सेभ माण्हू खासी आगे निकले हुंदे थी। चढ़ाई-न बरेस्तू रा शाह फूलीरा थी, पसीना-री डरुहनी थी लागिदी छुटदी। तांबे तेई रस्ते रे किनारे एक खापरा जेहां बेठादा हेरु। खापरा बचारा शुकादा जेहां बशां केरदा बेठादा थी। ता एण्डा लागा थी जे बमार सा ता थौकिया चूर हुश्रा हुंदा सा। तेई खापरे बेरस्तू-बे बोलू, "भाई छोकरुआ! हाऊं चौलूदा कुलूबे, किछ बमार सा, किछ हाऊं थोकू, चढ़ाई बी बख सीधी। यारा गाजी मूं चला ता श्रापणे एई किरडू-न, जोत जों दे मूंबे टपाइया।"

बरेस्तू बोलू "यारा बाबा, भाल हाऊं सा लंगड़ा, गरका मू श्रागे लूणा रा भरोटू। तौबे किहां चौकनू हाऊं। संगी न्हौठे भाल मेरे बड़ी आगे। मेरे तां एंडा-ए नी तिन्हां ठिमकिणा। तौ किहां नेनू हाऊं।"

खापरे भी बोलू "देख यारा छोकरा जोकडू जेहा ता हाऊं सा। किरडू रे चाठू-न ए एणा मूं। परयाला-न तू बिठही लूण पाई।" पर बरेस्तू-बे न्हीसो हिमत पोई। सो बचारा सचा बी थी। बचारा लंगड़ा माण्हू, एण्डा-ए सेभी-न पीछुश्रा हुंदा थी ता खापरा-बे किहां चौकदा। पर खापरे भीरे जो सो मनाऊए। मनाऊ। तेईए बोलू —

"देख भाई छोकरुश्रा! तू घबराइंदा मत। हाऊं जाणा सा तेरी मुश्कला बे खरी तरह। तू मूंबे किरडू-न थाले पा यारा, तौबे नी किछ आऊ। हाऊं-नी गरका औथी। नी तौबे गरका लागणा। पर एक शर्त तौबे होर केरनी पोणा"।

"सो की"? बरेस्तूए पूछू—

"सो ए जे रस्ता-न हेरी तू बशां देदा जां तांई जे तू घौरा नी पुहचला"।

"एण्डा केण्डा होणा", बरेस्तूए बोलू "मेरे एण्डा-ए एजिरा शाह शुकी। श्रौखा-न तौखे ता मूं-बे बशां देणा पोश्रा सा। ता तू बोला सा बशां बी नी देणा। नी-नी यारा गाजी मेरे नी तू चौकिदा भाई, तू किछ केर। दया ता ना मूं नी पांधे सा पर की केरनू। तू आपे बूझ।'

"तौबे नी श्राऊ किछ यारा," खापरे बोलू "तू जुश्रान। केर हिम्मत। बशाऊं केल्हा हेरी तू केरदा"।

आखर बरेस्तू तेईऐ मनाऊ-ए। किछं तेई-बे हेरानी बी हुई, ता बूझू 'हेरनू भोला, गप की सा ?" तेईए किरडू रा लूण छनेरू। खापरा थाले पाउ ऊझे-न लूणा री कोणी पाई। ता किरडू लेऊ—

'एबे ड़े यारो ! भरोटू ता जेंडा फूला से हीं हौलका' बरेस्तू हेरान हुआ। किरडा गरका होणा थी उलटा हौलका पे हुआ। हौलका बी एण्डा जो तेईए बूझू में पीठी पांधे बोझा पाहुदा-ए नी। तेइरी एक-एक गोई दस-दस गोई ढोई लोमी हुई। बशां री ता गल-ए नी सो जेंडा बुझणा उड़दा लागा। तेईए आपणे साथी एक-एक केरिया पछेरे ता जोता पांधे पुहचणा बे ता सेभी-न आगे हुआ।

'खौड़िया ड़े यारा बरेस्तुआ' तेईरे संगीए बोलू। 'तूसे केतरे एक खौड़ ए थी ड़े मूबे। एजा-ना एबे मजो' बरेस्तू लशा-लश तिन्हा-न आगे निकता ता घौरा धीरा-बे दबो-दब लागा होंडदा। जोबे सो ग्रां रे नेड़ जहे पहुता, आपणे घौरा ऊझे जों, तां तेईए मना-न सोठू 'भला सो खापरा न गल केरदा न किछ। पता नी सो सा भी किरडू-न की नी। बोला थी बशां हेरी केरदा, ता में बशां बी नीं केरू। एबे घौरा आगे ता हाऊं पुहता भालनू भोला तेई खापरा-बे, बशां बी देनू'। एतरा सोठदिया ता तेईए एकी टोल्ही पांधे किरडू डाहुए थी ता बस! किरडू उठला गये। सौ तौखे जोमू जेंडा। बरेस्तू ग़ुन हुआ ता किरडू-न हेरू ता खापरा री शक्ल हार। तेईए किरडू-न निकलदे बोलू —

"हाऊं सा हुरंगू देऊ। मूं एणा थी तेरे धीरा-बे। पर तें आपणा बचन नी डाहू, ता बौता-ए बशां धीना। एबे मूं औखे रौहणा। तेबे बी कोई हर्ज नी। तें हाऊं औखे तांई आणू तेरा घौर हांऊं फलदा-फूलदा केरनू"।

बस देऊआ रा एक थी बरेस्तू रा घौरा ता धारनी लागी-ए लागी, ओरे-पोरे ग्रां-इलाका-न बी खौल-फसल, अन्न-धन, सेर-टौल्हा खूब बौदू। लोके तौखे देऊआ रा डेहरा बणाऊ। रौथ बी बणाऊ ता तेंईरी पूजा केरनी शुरू केरी।

एण्डी तरह हुरंगू देऊ ग्रामंग देऊआ रे इलाका-न बी आगे निकता, ता एण्डी जगह निकता जौखे कोई होर देऊ नी थी औथी। बल्कि एसा जगह रे लोका-बे राखस-दूत सताआ केरा थी। हुरंगूए एक-एक केरिया ते सेभ राखस दूत शटे मारिया, ता तिन्हा रा नाश केरिया लोका-बे शान्ति ता धीनी-ए धीनी साथ सारा इलाका मालामाल केरू।

तेबे हुरंगू देऊए लोगा ग्रां धीरे-बे ध्यान फेरू, ता तिसा धीरा-बे बधणे री स्कीम केरी। पर तौखे भागा-सिद्ध देवी रा पौहरा थी। देवीए शर्त डाही जे 'एज जुए खेलणा। जे तें जीतू ता मूं आपणा इलाका छौड़ना। जे तें हारू ता भीरी हेरी इसे धीरे भालदा'। हुरंगू देऊए शर्त मोनी। पर जां जुए खेलदे लागे ता भागा-सिद्धे गों रे गोड़े रा पासा खोजू। बस एई हेरदेया हुरंगू तोखा न गेभौ ता टंडारी पुहता। जौखे तेईदें जागा मिली। टंडारी, गदियाड़ा रे लोका

रे कष्ट बी तौखे एजिया तेईए दूर केरे। ता लोके एक डंहरा हुरंगू देऊआ बे टंडारी बी बणाऊ, ता तईरी दूही जगह पूजा हुंदी लागी। ता हाजी बी हुरंगू नारायण केबकी जियाणी हौआ सा ता केबकी टंडारी। दूही जगह तेईरे डंहरे सी।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. होरी	अन्य	16. भाउशी	तीखी चढ़ाई
2. घाइया	दर्शाना	17. ओला सा	गिरता है
3. मना	मानते	18. भरोट्	बोझा
4. तेईए	उसने	19. हौल्का	हल्का
5. जोत	दुर्गम पहाड़	20. शाह फलांरा	सांस चढ़ा हुआ
6. धीरे	की ओर	21. गरका	भारी
7. लौड़दे	लड़ते	22. डरुहनी	धार
8. पांधे	पर	23. खापरा	बड़ा
9. टाऊणा	बहरा	24. बशां	आराम
10. गोठदा	सांवला	25. तौबे	तुझे
11. तोधी काल	उन दिनों	26. ठिमकणा	कैद करना (पकड़ना) या उनके पास पहुंचना
12. चौकिया	उठा कर	27. लशा-लश	जल्दी-जल्दी
13. किरड़ू	किल्टा	28. लोंमी	लम्बी
14. सीकू	खला		
15. थौकदे	थकते		



नेउली देवी

बड़ी पराणी गल सा, कुल्लू रे राजे री एक राणी थी। सो राणी बड़ी भगतण थी। दोथी, सोंझा, रात, दिहाडी भगवती री पूजा केरा थी। जां ताई तेसे पूजा नी केरी तां ताई मुंहा-न पाणी रा चूलू बी नी थी पांदी। दोथी उठिया सेभी-न पहले निहाउइया, धोउइया पूजा-पाठ केरा थी, तेबे जाइया घारा रा होर कोम केरा थी। राजा रे बेढ़ा-न कौसी गला री कमी नी थी औथी। धन-दौलत, नोकर-चाकर, जेउर-गेहणा, टौल्हा-टोपा, सेभ किछ थी। भला राजा रे घौरा-न घाटा बी कीभी रा होई सका सा। नोकर-चाकर होंदे होइया बी राजा री सेवा

सो ग्रापू केरा थी। देवी री पूजा ता आपणे पति राज़ा री सेवा ते सारे दूई बड़े कोम थी, पर होरी कोमा बूता-बे बी बुरा नी थी बुझदी।

राज़ महला रे सेभ सुख होंदे होइया बी तेसारे मना-बे शान्ति न थी औथी। एतरी पूज़ा-पाठ केरिया-ब्री तेसा री गोद खाली थी। 'पता नी मेरी पूजा-न की कमी रौही होली जो मेरे कोई शोहरू शौरनू नी हुंदे।' राणी हर बेले एण्डा सोचदी रौहा थी, ता हैरान थी जो एई राज़ चलाणू ग्राला तेसा रे नसीबा-न कोई नी ग्रौथी। भगवाना रा न्याय बी ग्रापणा हौग्रा सा। तेईरी कचहरी रा फेसला आपणा सा। पूज़ा-पाठ केरदे-केरदे राणी रे बेटा नी हुग्रा ता नी-पे-हुग्रा। राज़ा ता ग्रापणा प्रबन्ध केरना-ए थी। जेबे तेईए हेरू जो राणी रे नसीबा-न सतान नी ग्रौथी, तेबे तेईए दूजा ब्याह केरू।

राज़ा-बे दूजे ब्याहा-न राज-घराणे री राणी ता नी मिली, पर चौहान राजपूता रे खरे घोरा री लड़की थी। छ़के-ए दूजी राणी छ़रालिदी टेकी। जेबे सो गुर्भण थी ता बड़ी राणी-बे पता नी की हुआ? तेसे होछी राणी-बे बोलू 'तेरे होणी शोहरी, पर तेसा ज़ीणा नी सा ग्रौथी।' सची-ए तेण्डा-ए हुग्रा। होछी राणी री बेटी हुई, पर हुंदेया-ए मूई। किछ बौर्शा बाद होछी राणी रा भीरा री पैर भारी हुग्रा। बड़ी राणीए भी बोलू 'एबे तेरे मौर्द होणा, पर तेई ब्री बचणा नी सा।' होछी राणीए बूझू एसा सा सौकण झीक, एसा रे बोले की सोचीए मौरना। पर हुआ गौच़-ए तेंडा। राणी रे बेटा हुआ जो किछ दिहाड़े भीरी मुग्रां होछी राणीए बड़ी राणी-न दूर दूर रौहणा शुरू केरू। एकी–दूजी ग्रागे एणा जाणा बंद हुआ। पर जेबे तीजी घेरे बी बड़ी राणीए केंडी तरह पता लाऊ ता परेउगण लाई ता होछी राणी ता हुई क्रोधा-न फुकुइया पटाह–'डाइण रोंड भाई, एसा रा ता भू एबे चोढ़ा फूकणा। डाइण डणयाग मेरे शोहरू खांदी पोईरी। ग्रापणे ता नी गूठीए खाज़णा बे होरी रे गाभरू खांदी पोईदी।' तेसे सारी गल राज़ा-बे शणाई ता बोलू 'ज़ां ताईं ए डाइण घौरा सा, घौरा रा ठिकर बोणना। एसे बचे ता खा-ए-खाए घोरा रा कोई ज़िंदा नी डाहणा राज-बंश जो चलदा डाहणा ता ए घड़ी भर बी होर ज़िंदी नी डाहणी।

तौधी काल-ए रामगढ़ा रे घोणे बोणा-न एक बड़ा भयानक राखस निकलू हुंदा थी। तेईए सारे इलाका-न सारे माण्हू एक-एक चूंधियां खाणे लाआदे थी, ता सारा-न हा-हाकार मचाऊहुंदा थी। राजा-बे बड़ा खरा मौका मिलू। तेईए देरी नी केरी। हुकम धीना 'राणी-बे रामगढ़ा जंगला शेटी एज़ा'। पर राणी-न ग्राखर अवगुण की थीं, तेसा-रा दोष की थी। सो ता धर्मात्मा थी, पूज़ा-पाठ केरा थी। जो बचे मौरने री गल तेसा-बे पहला-ए पता लागा थी। ता कसूर की हुग्रा। बोणा पूजिया ज़ां राखस तेसा-बे खाणे-बे दौउड़ू तेसे आपणी कोन्हो गूठी काटिया झट तेईरे टीका लाऊ ता तेई-न जान बखशणा री ग्रर्जा केरी जो राखसे कबूल केरी। बोहू रोजा बाद जेबे राजा-बे खबर मिली जो राणी ता खरी तकड़ी सुख-सान्ता सुंगे बेठीदी सा ता तेईरा तेसरा डाइणी होणा रा भौरम पका हुग्रा।

ता राजें सलाह केरी जो एसा-बे नेउली नाऊं री जगह जिंदा दबाई शेटा। राजा रा हुकम कुणी टालणा थी। राणी-बे बोणा-न आणिया जिंदा पौथणा रा प्रबन्ध केरू। एक डूघी खातर कोतिया जोबे राणी पौथणी लाई, ता राणीए बोलू 'मूं पौथा ता जरूर, पर एक प्रार्थना सा जे बारह बौरशा भीरी मूंबे जरूर कोती ता तुसा-बे पता लागणा जे मेरा की, केंडा ता केतरा कसूर थी। ए मूं आपू दसणा।' राणीए एतरा-ए बोलू थी तांबे ता राजा रे नोकरे सो पाथरे-माटे बबाया शेटी।

जुआणी महादेऊ तौधी काल राजा रा कुल देवता थी। देऊ आखर देऊ होआ सा होर सो आपणे वक्ता-न सेभी-न बड़ा देऊ थी। देऊबे ए सेभ गला पता लागी, ता तेईए राजा-बे सुपना-न दसू जे राणी-बे बारह बौरशा बाद खोंजू ता तेसा देशा री सेभी-न बड़ी देवी बोणना ता राज-पाठ रा बी नाश केरना। जुआणी महादेऊआ बे राजा-न बी बड़ी आपणी फिकर थी। तेईए राजा-बे बोलू 'जे राणी-बे दसा बौरशा बाद ए खातरी-न खोंजिया आपणे सामने मारा।' राजा नेउली पुहता, आपू सोंगे जलाद बी आणें ता राणी बे बाहर खांजणा रा हुकम धीना। पर जेबें तौखे कोतिया भालू ता किछ नी थी आंथी। राजा बेढ़ा-न वापस पुहता ता तेईए पाणी ता रोटी-न कीड़े-ए-कीड़े लागे निकलदे। राजा-बे आपणी बेरहमी ता गलती रा पता लागा। रात-दिहाड़ तेई बे चैन न्हीसी पोई। राणीए सुपना-न दसू जे बेकसूरा रा लोहू जां नी जांदा। राजे राणी री मृत आत्मा-न माफी मूंगी ता तेसा री पूजा केरनी शुरू केरी ता हाजी भी तेसा-भे नेउली राणी या नेउली देवी रे नाऊंए पूजा केरा सी।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कोम बूता	काम काज	8. खोजणा	बताना
2. खरे	अच्छे	9. ठिकर बोणना	घर का घराट बनाना
3. शोहरी	लड़की	10. चुंधिया	चुन कर
4. रोहणा	रहना	11. शेटी	फेंकी
5. परेउगण	अनुमान	12. बोणा	बन में
6. फुकुइया	जलकर	13. पूजिया	पहुंच कर
7. धोढ़ा	सिर		

काग भाखे राखसणी री मौत

एकी ग्रां-न दुई दुहरू रौहा थी । एक खौश ता तेईरी लाड़ी खौशण । ते दुहे उमरा-न होछे-ए थी जेबे तिन्हा रा ब्याह हुग्रा ता हाजी बी होछे-ए थी तां-बे ता याणें-माठे रे चेथणे चेथुए-पहले एक शोहरी हुई, भौरी होर शोहरी, भौरी होर; पर शोहरू नी हुग्रा । ता जेडे सेभ लोका बेटा री ताईए लोड़ फड़ाइया सा तेडे-ए ते दुहे दुहरू बी बटे रे लोभा लालचें शोहरी जोणदे न्हौठे ता जोणन्द-ए रौहे । जब तिन्हा री छौह शोहरी हुई ता खोशण सोतुई वेरे बी छरालिदी टेकी तबे खाशे लाई-न मोरिया ता खौशणी-बो बोलू तू री ग्रापणे भागा-बो ।

खौशा रे मौरना-न भौरी खौशणी रा हुग्रा कर्जीण । एक ता पहले-ए घोरा खाणा-बो गुजारा नी हुंदा, एबो दयाउणी किसे होली । छौह-छौह शोहरी पाचणा-बे आपू छरालिदी । बुझा थी किसे जाणा । पर की केरना, फाही थोड़ी-ए लाणी । जीणा पोआ सा । घाह-छीड़ी बोचिग्रा मसे गुजारा केरदी लागी । तिन्हा-रे घौरा सामने एक पराणा मोहरू रा बूटा थी । तेई बूटा पांधे एक काउड़ा रोज एजिया बाशे केरा थी । जां सो बाशदा लागा ता खौशण आपणी तिन्हा छौह बेटी-बो बोला थी 'शुणा ता शोहरीग्रो ए काउड़ा की लागादा बोलदा' । पर शोहरी ता शोहरी थी, कोई लेखे नी पांदी ता खौशणा काउड़ा संगे जोंडी गला दूणा था ।

"की कड़ा-कड़ा ड़े ! तू इन्हा शोहरी रा बाबू सा ? ग्रोऊड़े ग्रोऊ बूझू में तू जा' ।

काउड़ा उड़दा ता भी भौरी एजिया बोशदा ता भी 'कड़ा-कड़ा' केरदा ! ता खौशण भी बोलदी—

"की ड़े कड़ा-कड़ा ! कौसकी एणा सा ? हो एणा होला शोहरी रे मामा" ।

ता सोची-ए सोझा-बो पाहुणा पुहचा थी । पर छौहा-न एक शोहरी बी ग्रापणी मां री गला धीरे ध्यान नां थी देंदी, ना काउड़ा-बो उड़दा बोशदा भालदी । खौशण केभकी जो शोहरी बो सामने दुई बोला केरा थी 'शुण ता शुणा-ए ए काउड़ा की लागादा बोलदा' पर एक शोहरी बी कोन नी थी लांदी । खौशण ग्रापूए बोलदी —

"की कड़ा-कड़ा केरा सा ड़े ? मेरे एबो बेटा होणा ?" पर काउड़ा उडिया न्हौठा । तेसे आपूए बोलू 'हो, बेटा नी होणा होला एबो बी ! तेबो-ए ता ए उड़ू" ।

खौशा रे मौरना-न चार महीने बाद खौशण छरालुई ता सौतुई शोहरी

हुई। खोशणी पांधे पोई जेंडी बीज। न घौरा खाणा-बो, न कोई कमोणीया, न बशाह देंदा, न दुखा गुखा दुणदा कोई। सो शुकदी लागी, शुकदी रौही। हिमत चूटी, खाणे-बो कीछ नी, मास शूकू, हाड़कू निकते ता त्रीजो बोरशो तेसे बी लाई मौरिया।

सौता शोहरी-बो आपणा गुजारा आपू केरना पोऊ। जमीन-जगह ता गुजारा-बो औथी नी थी। तिन्हा बूझू एबी छिड़ी बोचिया-ए पेट पालणा। ग्रां रे नेड़ ता बूटे झीटे रोके-ए काटिया मनेरी रे थी। दूर जेहां बड़ा घोणा बोण थी, जौखे लोक कोई नी थी जांदे। बड़ी-ए बड़ी शोहरी-बो सेभी-न बडी जिमादारी थी। एक रोज तेसे दात्त रांशी पाई ता तेई घोणे बोणा धीरा-बो सोके। जांदे जांदे पता नी की आई तेसा-बो खासी दूर निकती ता घोण बोणा-न रस्ता बी नी थी औथी। दूर जेहे तेसे तेरू घोणे बूटे ता झीड़ी झोंकड़े रे बीचा-न खाली जेहा जगह थी। सो तिसा धारे-बो फीरी ता एक झोंपड़ी जेंह तेसा-न तो रूई। घोरा-न जेबो सो बोणा-बो चोली थी ता एक काउड़ा साथ-साथ चौलुदा थी, ता एकी बूटा-न होरी बूटा-न 'कड़ा-कड़ा' केरदा उड़दा-पीछा केरदा लागीरा थी। जेबो सा शोहरी तेगा शारण जेहे सेंही टापरी आगे पुहती ता काउड़े जोरे-जोरे बाशणा शुरू केरू, ता बूटा-न फडराई मारिया सो शोहरी ताल् पांधे आंझोरी। तेसे आपणे मना-न बोलू 'एई काऊड़ा-बो की मौत पोड़री होली'। सो सट हांदरे तुरी, ता हांदरे एक खापरी थी कुणी आगे बोठीदी। तेसे बोलू, "हाईए बोटीए! तू कुण सा ए? तू कौ-न आई"। शोहरी ए सारी गल शणाई। खापरीए झट बोलू "खरा हुआ-ए हाऊं ता माण्हु निहालदी बोशा सा औज तू भागे आई! ता की केरना-ए एबो घौरा जाइया। औखे बोश। कीभी बो केरनी जूनी। ले एई लोटे ने। पांर धीरले कमरा-न गाई सा। गाई आण दुंहिया। आसे दूही दूध पीणा।

शोहरी ए लोटा चौकू ता भोल भाऊआ-न दूध दुन्हदो न्हौठी। जां सो दूध दुंहदी लागी ता एक मुशटी निकती। सो चरूं-चरूं केरदी चारी पासे घूमी। पर शोहरीए नी सो लेख-ए पाई। मुशटी जेंडी लोड़भड़ाउई। पर शोहरी धीरा-न तू मौर पोरे। तेसे दूध दूहूं ता खापरी आगे पुहतीए थी ता तेसरे शरीऊं-परीऊं न्हौठे। खापरी कौ? तौखे ता एक भसतूली, बड़-बड़ दोंदे आन्नी, काली कलूट, उलटे घुंडे आली राखसण थी डाइण। सो माण्हू-बे खांदी नी थी। गाई तेसा री जादू री गाई थी। सो तेसा गाई रा दूध जुणी रे मुण्डा पांधे पाआ थी सो झट एक बूटी बोणा थी ता तिसा हारले ते मारे बूटे माण्हू-ए थी जुणा तेसे औजा ताईं जादू री गाई रे दूधे लाईया बूटी-बूटे बणाइरे थी। बस राखसणी ए शोहरी ढौकी, तेसा आगा-न दूध मूंगू सो बाहरा-बे घशीटिया आणी। एकी जगह खड़ी केरी, तेसारे मुण्डा पांधे दूध पाऊ, ता बस! सो एक बूटी बोणी।

जेबे सो घौरा नी पुहती ता तेसा री होरी बेहणीए बूझू सो की-बे न्हौठी

होली। घोर बौसदी न्हौठी होली, की किसे गोझ ई। बोहू जेंह रोज़ तेसा-न होछी शोहरी उडी; तसे बी दाच, रौशी पाई ता तिसा धीरा-बे खोचुई। बूझ छोड़ी-बी आणनू, भालणू बी भोला सो बेवी किसि सा। पर, सो बी फिरदी फरांदी तौखे-ए पुहती। ता तेसा-बे बी बूठी बोणदेया बला नी लागी। एण्डी तरह बड़ी ते छौहा-री छौहा बेहणी घौरा-न न्हौठी, काउड़ री बाशणा रा कोई ध्यान नी धीना, ना मुशटी री चरू-चरां-बो किछ बूझ। ता छौहा-री-छौह बूटी बोणी।

जेबो ते सेभ घौरा नी आई, ता सेभी-न होछी तेसे बी एकी रोज़ तेंडा-ए दाच रौशी खोंझी ता बोणा धीरा बो चोली। तां बो ता काउड़ कड़ा-कड़ा केरू। तसे तेईरी भाख समझी। जेबो सो मां रे पेटा-न थी, ता मां तेई कोउड़ संगे गला केरा थी, ता तेसे शोहरीए पेटा-न-ए ए भाख सीखीदी थी। तेसे तेई काउड़े बो बोलू—

"कीड़े बाबा, तें मेरी तिन्हा छौह बोहणो-बो न्होली बोली जे तूसे इसे मौता जांदी। एबो मूंबो की बोला सा 'तू इसा मोत जांदी'। मूं ता जाणा यानी जेंडा होणा होला तेंडा सही।"

तेबो काउड़े बोलू "हाईए बेटीए मैं ता बोलू थीए सेभी-बो। तिन्हे न्होली फियाड़ी। तें मेरी गला फियाड़ी, ता तू मौत जांदी।" तसे बोलू 'काग भाखा जाणी रा नी होली तिन्हे। मैं जाणी री। पर मूं जाणा जरूर। मूं भालणा सेभ किछ आपू'। सो नी मनी ता आगे-आगे सिकदी लागी। काउड़े भीरी बोलू 'तू जा ता ना जा, मेरी गल ता तू शुणदी नी। पर तौबे होणा सा होर छलीतरा बी। तई धीरे ध्यान देई।

बस, होछी शोहरी बी तेण्डीए तौखे पुहती। पर जेबो सो दुध दुहंदी लागो ता सो मुशटी भी निकती, चरू-चरां बाठी। तेसे शोहरीए पछियाणी गल, तेसे मुशटी-बो बोलू 'की-ऐ आमां, तू की बोला सा'।

मुशटीऐ रोंदे–बाशदेया बोलू 'क्या बेटीऐ! होरी आगे ता अकल नी थीऐ औथी। तू ता अकली आली सा ना। कीबो सारे खानदाना रा नाश केरना। भग तू औखा-न सुधे भागे।'

बस, मां-बाबो दूईऐ बोलू, ता सो बी भगी। आगा-न सो, पिछा-न राखसण! आगा-न सो पिछा-न राखसण! भगदी रौही, भगदी रौही। तेसे री आमे मुशटीऐ भगणा-न पहले तेसा-बो बोलू हुंदा थी "तू गाई रे आगे री बुहारी पा साथ। राखसण पीछा-न नेड़-ऐ पुहचली ता ऐक-ऐक तुला शेटी।" तसे-बी जां राखसणा नेड़ जोंहे आई पूजी ता ऐक तुला शेटणा तेइरा बड़ा भार बोणा थी, ता राखसन तुईं-न बला गिया थी। आगे जोंह दूई बौलद, भीड़िदे लागांदे थी। शोहरी बोलू–"ओरे-पोरे हुआ ड़ बौलदो! सौत बोहणी थी आसे छौह खाई, हाऊं कली रौही; मूं-बो रास्ता देआ" बौलद ओरे-पोरे हुऐ। राखसणीऐ शुणी

सो बोलदी, तेसे बी एण्डा-ए बोलू 'ओरें-पोरें हुआं ड़ें बौलदो । सौंत बेहणी थीं श्रासें छौंह खांई, हाऊं केंली रौंही', ता बौलदे तेसा-बे बी रस्ता धीना । श्रागे नौंई थी । नौंई-बे बी तिन्हे बारी-बारी पहले सेहीं बोलू, ता नौंईए रस्ता धीना । एबे तिसा शोहरी श्रागे बुहार-बो तिभी श्राई, राखसण बी नेड़ पुहती । तेसे बूझू एबे की केरना । पर "जुणी रा नी कोई, तिन्हा रा परमेशरा तू होई" एण्डा बोला सी । तेसारे सामने एक केलू रा बूटा श्राऊ । तेसे झट बोलू —

"केलू मामा, केलू मामा, तेरा मेरा एक-ए नामा ।
तू बी काला हाऊं बी काला, तेरा मेरा एक-ए डाला ।
में छूंगे तेरे चरण, दे तू मामा मू-बे शरण ।"

केलू रा बूटा बीचा-बीचा—न फटो । शौहरी तेईरी खोखा न तुरी । केलू झट कठ हुआ पर तेसारी कोन्ही गूठी बाहरे रौंही । राखसणीए कोन्ही गूठी झट काटिया खाई ता बोलू "हा, कटे ! श्रौजा खाऊ मास, हौछी बेहणी री गूठी बड़ीए मीठी" । केलूए शोहरी बे शरण धीनी ता राखसण शें-फें केरदी वापस हुई ।

ए बोण पहलके बोणा-न दूर होरीए इलाका-न थी । तौधी काल ए तेई देशा रे राजा रा बेड़ा लागा हुंदां थी बोणदा । राजे रे बढ़ई खरी-खरी बूटी भालदे-भालदे तेसा बूटी श्रागे पुहते, ता तिन्हे बोलू "ए बूटी सा यारो खरी ए काटणी शौरा-बे ।" शोहरीए ते ढुणिदे शुणे तेसे बोलू —

"शुणा शुणा राजे रे बढ़ेई ।
ओरे पोरे काटा, मोंझें सा बेढ़ री देई ।"

ते हेरान हुए, जे ए की हुआ । ते खाली वापस न्होठे ता राजा बे सारी गल शणाई राजे बोलू चौला, मूं श्रापू भालणा, की गल सा । जेबे ते तौखे पुहते, ता राजे बोलू काटा एसा बूटी-बे । तेतरा-बे भी बो निकते 'शुण-शुण राजा रे बढ़ेई, श्रोरे-पोरे काट, मोंझें सा बेढ़ री देई ।' राजे बोलू 'ठी सा ! ओर-पोरे-न काटा ।' बढ़ेईए औरे-पोरे-न काटी बूटी, ता बीचा-न सुन्दर लड़की निकती । एबड़ी सुन्दर जे राजे सो श्रापणी राणी बणाई, ता महला-बे श्राणी । सो महला-न राणी बोणिया रौंहदी लागी । थोड़े बौरशा बाद तेसरे दोलें हुए एक बेटा, एक बेटी ।

राजा री आगली राणी बी थी । तैसरे कोई याणो माठे नी थी श्रौथी । होछी राणी-रे जोड़ए बेटा-बेटी हेरिया तेसा बे बड़ी औग लागी, ता जतन केरदी लागी जो केण्डी तरह इन्हा-रा नाश केरना थी । दूहे भरयारू बड़े हुंदे लागे । दूहे हेरने शुणने वे ता राजकुमार थीए, पर पौढ़ने, लिखणे, चाल वाजी सेभ किछी न बड़े तेज थी । तिन्हां री मांए तिन्हां दूही-बे होर-होर विद्या संगे काग ता सूशा-रो भाख बी सखाई जो तेसे श्रापणे श्रामा बापू-न सोखो रो थो । केबकी सो गला, गला-न श्रापणी पुराणो आप-बीती बी शणाआ थी । तिन्हा री मासक मा बड़ो राणी री झीक-मीश बी रोज-बरोज बधदी-ए लागी । सो एई जतना-न थी जे केण्ड़ी तरह ए दूहे जानी-न शोटणे थी मारिया । तौधी काल तेसा राखसणी दे बारे-न

सेभ जाणा थी। बड़ी राणीए एक रोजा महला रे नौकरा-बे चकमा धीना, ता तिन्हे एण्डा मंत्रा केरू जे जेबे ते खेलदे लागादे थी ते ठगिया नेए ता तेई जंगला-न जाइया शेटे जौखे सो राखसणी थी। जेंबे ते केल्हे शेटे ता एक काउड़ा 'कड़ा-कड़ा केरदा निकता। तिन्हें आपणी मां-न काग भाखी सीखिदी थी, तिन्हें सो फियाड़ी सो बोलदा लागा हुंदा थी—

"क्या धोतरूओ, क्या धोतरूओ ! कौबे चौली रे ड़ खाइणा। तूसे री मां बी मसे छूटिदी। तुसा रे छौह बड़ी आमा बी जुगा-बे बूटी बोणिया रौहिदी। तूसे वापस जाआ। हाऊं तुसा-बे रस्ता देआ सा खोजिया"। तिन्हें बोलू "नी नानू आसा की ता आपू मौरना की ता तेसा राखसणी-न बदला लेणा। बापस नी आसा जाणा। तू हाजी आसा री मदद केर"। काउड़े बोलू 'हाऊं ज्यादा मदद ता न्होला सा केरी। मूबे नी पता सो केंडी रौआ सा, फिबे जो सो बाहर घट-ए निकला सा। पर एक गल सा जे तूसे खाणे हौथा धीरले कमंरा-न हेरी पहले जांदे। तौखे रौहा सा राखसण। खेंजे हौथा रे कमरा-न जाई। ता खूब चतन हुई तेसा रा लोटा नी कदी भालणा। असल जादू तेई लोटा-न सा। जेबे सो लोटा गाई-न रिहाऊ ता दूध रा असर होरी-बे हौआ, नांई ता तेसा राखसणी-बे-ए असर होणा। होरा गला दसणी तुसा-बे मुशटी, बुझू ?' तिन्हें तां केरू ता सडा सड तौखे पुहते ता खेंजे हौथा धीरले कमरे-बे न्हौठे। तां बे ता मुशटी निकती ता पटिकी। तिन्हें झट पछियाणी ता बोलू "नानी ए तू सट पट आसा-बे राखसण मारना रा तरीका दस, होरा गला होली भीरी"। तेसे बी बोलू 'तूसे लोटा ता नी ड़े हेरू'। तिन्हे बोलू 'नांई'। "बस-बस फिकर मता केरदे, हौंसला केरा। एकी-ए केरा नोला दूधा-बे एकी-ए गाई नोला मिथर दूहां। तां बे एणा सा राखसणी हो। घबरांदे हेरी। जा एली ता तेसरे टेंडा—न पाई दूध। सट-केरा सट। लड़के टोऊ झट—पट नोला, ता लड़की ए गाई दुहणी शुरू केरी थी। तांबे ता सारा कमरा तौलू जेण्डा हिलण हुआ राखसण लेरा मारदी दुरूआजे आगे पुहती थी, राजे रे लड़के नोला रे दूधा रा पाऊ छपराला बस राखसण तौखे शिल बौणी।

तेबे मुशटीए भी बोलू "एबे तूसे एसा गाई गंचयाया, ता गोंचे लाइया इन्हा सेभी बूटी छड़काऊ देआ। भेरीए भीरी एसा गाई पांधे बी छड़काई। एबी दयाउणी एक बेटड़ी सा। तिन्हें तेंडा—ए केरू। सेभ बूटा माण्हू बोणे, गाई बी जिंदी बेटड़ी फिरी। तेबे की थी सेभीए तिन्हा दूही रा बड़ा आदर केरू। सारे इलाका पाधे खुशहाली हुई। लोका रौहदे बौसदे लागे। जमीना-न फसल बूटी बाही। लड़का राजा बणाऊ। बोहू रोज ते इहे भरयारू आपणी छौह बड़ा आमां लेइया आपणी आमा आगे पुहते। सेभ खुश हुए। बड़ी राणी बे बी तिन्हें माफी धीनी ता दूहे इलाके मौजी संगे रौंहदे बौसदे लागे।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
1. बूहरू	पति पत्नी
2. चेयणे चेयुए	भार से दब गए।
3. जोगदे	पैदा करते
4. छरालिदी	गर्भवती
5. कजीण	बुरा जीवन
6. धाचणा	पालना
7. उडिया	उड़कर
8. शुकदी	सूखती
9. भनेरी रे	खत्म किए
10. रौशी	रस्सी
11. सीके	चले
12. झोड़ी झोकड़	कंटक
13. फडराई	उडारी
14. सट	जल्दी
15. हांदरे	अन्दर
16. मुशटी	चुहिया
17. खापरी	बूढ़ी औरत
18. घशोटिया	रगड़ कर
19. गोझूई	छुप गई
20. बलाग	देर
21. फियाड़ी	समझी
22. बोलद	बैल
23. दोल	जुड़वां बच्चे
24. मासक मां	सौतेली माता
25. लेरा मारनी	जोर से रोना



दादी हिड़मा

कई शौऊ वौर्षा पैहिले कुल्लू घौरा पांदे पीत्ती रैं ठाकरा रा राज थी। ते वड़े जालिम थी। लोके तीनें रैं जुल्मा न छुटकारा पाणे री वड़ी कोशिश केरी। मगर सवे कौशिश असफल हुई। तीने ऐ रौजा री गल सा कि एक भंगमुनि नाआ रैं जुआने कुल्लू री धौरती पांदे प्रवेश केरू। सौ मायापुरी रैं वदरी नारायणा वै जान्दी सड़का पांदे स्थित एकी नगरी, राज-घराने सैंगे सम्बधित थी। किच्छ वूरे ध्याड़ें तेई रैं कि तेईवै आपणा घौर छौड़णा पोऊ। कठिन ता खतरनाक यात्रा केरणे न वाद सौ मंडी रयास्ता री हदं पार केरिए वज़ौरे पूजू। हाट ग्रां न आपणा डेरा लाऊ। एक रोजा अचानक तेईए सामने धारा पांदे एक मन्दिर हेरू। ऐं मन्दिर बिजली महादेऊ रा थी। तेइवै सुपना हुआ कि यदि सौ व्यासा ता पार्वती रैं संगमा पांदे, भूईणा न पाणी रा एक लोटकू लेईए बिजली महादेऊ रैं मन्दिरा जाईए तेई री पींडी पांदे पाणी छिड़कला ता तेई वै एक खास ता अदभुत इनाम मेलना। दोती भीशा उठिए सौ संगमा पौंदे नौठा ता पाणी रा लोटकू आटू ता आपणा रुख बिजली महादेऊ ए रैं डेहरैं धौरिए केरू।

एई डेहरैं बैं पुजणे री यात्रा काफी कठिन सा। भंगमुनि दौती चालिया सौंज पूजू, थकिए चूर हुआ, दयाऊणे जौए री ऊरा लागी ता सारा शरीर जौखिड़ ऊए बैठा। दूजे डेहरैं तांई पूजदे पूजदे रात पौई वापस हाट ग्रां पुजणा रा स्वाले ए नैई उठदा थी। तेइवै तौखे रात काटणे रैं सिवाए कोई चारा नई रौहू।

राती भंगमुनि वै भी सुपणा हुआ ता बिजली महादेऊ प्रकट हुआ। देऊए सुपणे न तेईवैं नास्त, औज़ का जग सुख, जाणे वे बोलू, जौखे तेईवैं एसा तीर्थ यात्रा रा फौल़ मेलला। भंगमुनिए दोती उठिए देऊआ आगे मौथा टेकणे बाद ऊभी री राह लेई। आखिर सौ नास्त पूजू। औखे पुजिए सौ एकी कमाहरे रैं घौरा न नोकर बेठा। एक रोज़ सौ एक बूटे हेठे सूता दा थी ता एक ज्वाला नाआं रे कशमीरी बामणा रा तीसी जाण हुआ। तेईए तेई छोकरे रैं तला न पदमनि, राजरेखा हेरी। तेई बामण सौ भंगमुनि नींदरा न चंकू ता बोलू कि सौ एक न एक रोज़ राजा बणला। नौजुआन राजकुमारे एसा भविष्यबाणी पूरी होणे पांदे धाने रैं किच्छ रौपे एई बामणा वै देणें केरे।

लोक पीत्ती रै ठाकरा रै जुल्मा न बड़े तंग थी। भंगमुनि प्रतिभाशाली ता थीए, तेईए तीनै रै विरुद्ध लोक कट्ठे केरणे आरम्भ केरे। भंगमुनि लोका रा नेता वैणू। तीनै तेई रै नेतृत्व न ठाकरै रै विरुद्ध विद्रोह केरू। ठाकरै री बूरी हार हूई। लोके भंगमुनि आपणा राजा मंनू। मगर आजी तांई सारे राजा न गृह युद्धा आली हालत थी। दूजे पीत्ती रै ठाकर रे किच्छ समर्थक हौथ धोईए भंगमुनि री जानां पीछ पौए दं थी। तीनै भंगमुनि मारणा रा षडयन्त्र रचाऊ। कोसकी ढंगा संगे भंगमुनि वै एई षड़यन्त्रा रा पत्ता लागा। राजे आपणी जान शूरू ग्रां री देवी रै डेहरे न गोजुऊईए बचाई। धीरे धीरे सारी रयास्ता न गृह युद्ध समाप्त हुआ, चौंऊ धीरिए शान्ति फली। भंगमुनि आपणे गुप्त स्थाना न बाहर आऊ ता लोके वड़ी खुशी मनाई। भंगमुनि राजगद्दी पौंदे बशाऊ। एसा खास घटना रे अवसरा पौंदे जग सुख ता ऊई रे नज़दीकी ग्रां न चचोहली री जाच मार्च महिने न ओज़ा तांई हौआ सा।

जादी काल भंगमुनि शूरू ग्रां न आपणे गुप्त स्थाना न गोजुउईए वेठा दा थी ता एक रोज़ सौ जगसुख ग्रां न आपणा भेस बदलिआ शाऊणे जाचा हेरदा नौठा। रस्ते न तेईवै एक खापरी बेटड़ी शै फै केरदी मौला रा किलड़ू चैकिए जगसुखा धीरिए जान्दी मेली। भंगमुनि वै तेसा पांदे तरस आऊ कि दयाऊणी जेई वै जाचा आले रोज़ा वी कौमा न वारी नेई भंगमुनिए तेसा खापरी रा किलड़ू आपू चंकू। तं दूहे जगसुखा धीरिए चौले। ग्रां न किच्छ दूरी पौंदे तेसै खापरिए भंगमुनि वं किलड़ू धसकी डाहणे वै बोलू। तेईए किलड़ू धौरती डाऊ। खापरिए तेई वै आपणी कौना पांदे उकलणे वै बोलू। पहिले ता सौ थोड़ा जाआं भिभकू मगर खापरी मनिए नौछी ता तेइवै तेसा रा कहणा मैनणा पौऊ। कौना पंदे उकलणे न बाद तेसे खापरिए तेई न पूछू :—

"तौ न कौ न कौ तांई देश हेरिया सा ?"

"कोंडी वज़ौरे न लेई ए रोटांग तांई, भंगमुनिए बोलू जा एं मेरा वरदान, जुण जुण देश तौन हेरिया सा, तेई रा तू राजा वणला," तेसे खापरिए तेई वै वरदान धौना। ऊंई न एक दम बाद सौ खापरी तेई री नैजरा न राऊई। खापरी रे भेशा न एं बेटड़ी हिड़मा देवी थी।

समय गुजरने संगे भंगमुनि सेचमुच कुल्लू रा राजा वणू। जुणी बामणे तेई रै राज़ बणने री भविष्यबाणी केरी की तेईवै राज़ आपणे बाईदे अनुसार रोपा धीना, जुण रोपा औज़ बी जुवाले बामणे रै वारिस, जुण जगलोढू रै नाआं पांदे प्रसिद्ध सी खाआ सा। भंगमुनि न ओरु औज़ा तांई कुल्लू रे राज घराने न देवी हिड़मा री वड़ी मानता होआ सा। इना रा कोई कार्ज ऐसे री मर्जी ता उपस्थिति रे बिना पूरा नेई वुजि़दा।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. पूजू	पहुंचा	9. गोजुउहए	छुप कर
2. लोटकू	गड़वी	10. चौंऊ पासे	चारों ओर
3. भीशा	सुबह	11. मौल्	गोबर
4. डेहरा	मन्दिर	12. बेटड़ी	औरत
5. सांजा	शाम को	13. शें फे	सांस चढ़ा हुआ
6. दयाऊणा	बेचारा	14. धूसकी	नीचे
7. जोखड़ुइआ	अकड़ कर	15. उकलणे वै	चढ़ने को
8. मौथा टेकणा	प्रणाम करना	16. रोपा	धान का खेत



रुप–वसन्त

एक थी राजा एक थी राणी। दुई तिन्हरे बेटे थी। बड्डे रा ना थी रूप ता हौछे रा ना थी वसन्त। एक रोज राणी एतरी बमार हुई जे तेसरे बचणे री कोई उम्मीद नी रोही राणी री नजर एक रोज एकी चिड़ू रे कोहला पन्ध पोई। एई कोल्हा न चिड़ू चिड़ी होर तिन्हरे चार बच्चे रोहा थी। कौसी बौगत चिड़ू बाहरे जा थी ता तिन्हां बै चग ता दाणा पाणी आणा थी ता कैब के चीड़ी दाणा पाणी बै जा थी। एक रोज चिड़ी चग आणदी बाहरे नोठी ता एकी माहणुएं मकाईया डाई। जब्बे तेसा नी एजिया खासी देर हूई ता चिड़ू तैस्सा बे तोपदा नोठा ता की हेरा सा जे चीड़ी एकी जग्गा मुईदी पोईदी। चीड़ू बड़ा भारी रुणू होर सोठदा लागा जे ऐतरे सारे बच्चे मू अब्बे किहां पालणे। कुण इन्हरी देख-भाल केरला कुण इन्हां बै दाणा पाणी आणला। तेईए सोठू जे बेटड़ी घट्टी ता घौर नीं चौलदा मू होर चिड़ी आणनी। अ सोठीया तेईए होर चिड़ी आणी। नऊंई चिड़ी लागी सोठदी जे औखे ता मुम्में होर भिगट सा मुम्मे अजादी नी मेलणी होरी रे बच्चे सी पालणे बै। तेस्सा बै एक रोज झिक आई तेस्से ते बच्चे बाहर खोलिया धौरती शेटे। शेटदेआ सार-अ त बच्चे मरी गोए। राणी अ सिभ किछ हेरदी लागीदी थी तेस्से सोठू जे सोकण बुरी होआ सा। जब्बे जे मू मोरना ता मेरे बच्चे रुप होर बसन्ते रा भी अ-अ हाल हौणा। जे राजे होर राणी आणी ता मेरे बच्चे भी अन्धेपटकाईया शेटणे।

तेतरे न राजा भी तोखे पूजू ता राणीए बोलू "राजा साहब मुम्मे एक बचन देया।" राजे बोलू जे की? ता तसे बोलू जे मू मोरने न बाद दुज्जा ब्याह हेरीत केरदे। राजे राणी री अ गल्ल मन्नी। राणी दुई चार रोजा बाद मुँई। किछ रोज ता राजा राणी रे अफसोसा न बैठा पर फिरी तेई रे मन्त्री होर बजीर बोलदे लागे जे राजा राणी बाझी शोभा नी देंदा। तिन्हूरे बोलणे पन्धे राजे होर ब्याह केरु। नोऊंई राणी री तईएं एक नऊंआं चबूतरा बणाऊ होर सो तोखे रोहन्दी लागी।

राणी आपणें चवारे न बैंशी रोहा थी ता रूप होर बसन्त दियाऊणे केहले खेलदे रोहा थी। एक धियाड़ी ते दूअे खेलदे लागे दे थी ता रूपे री गीन्द राणी रे कमरे न पोई। जब्बे रूप गीन्द लेन्दा आऊ ता राणीए बोलू जे तू मुम्बे बोस।

रूप हेरना शुणना बड़ा शोभला थी। राणी री ग्रे गल शुणीया रूप बड़ा भारी हैरान हुग्रा होर बोलदा लागा जे माता जी तुस्से ग्रे गल की ढूणी तुस्से ता मेरी मां री जग्गा सी।

राणीए बोलू ग्रच्छा। तेसे की केरु जे ग्रापणा चौहड़ा खलारु होर रोण पीटण पाऊ। राजा रोणा शुणीयां ग्राऊ होर पुछदा लागा जे ग्रे की गल ? ता सो बोलदी लागी जे रूपे मेरा ए हाल केरु बोलदा लागा जे मुम्बे बोंस जब्बे मैं बोलू जे ए किहां होई सका सा ता तेईए हांऊं ढीसी होर मेरा ए हाल केरू। राजे बें बड़ी भिक ग्राई। राजे रूप होर वसन्ता बें देश निकाला देईध ीना।

रूप वसन्त घौर छोड़ीया बाहर चौले, चौलदे चोलदे जंगला न पुज्जे होर तोखे तिन्हा बें रात पोई जब्बे जंगला न सोन्दे लागे ता तिन्हें सोढू जे ओखे ता ग्रासा जंगली जानवरा तंग केरने होर फैसला केरु जे एकी सोणा ता दुज्जे बिऊदे रोहणा होर पोहरा केरना। वसन्ते बोलू भाई जी तुस्से सोग्रा हांऊं पोहरा केरनू रूप सोई गोऊ। तेतरे न तोखे एक तोता होर मैंना आए। तोते बोलू मैंना कथा दे। मैंने बोलू मूं की कथा देणी। जुण ग्रासाबे एकी तीरा संघे मारला होर मैंना बें खाला सो राजा बणला। जुण तोते बें खाला सो बजीर बणला वसन्ते सौ गल शुणी तेईए बाही। तोता मैंना दूए मूंएं तोता वसन्ते खाऊ मैंना रूपा बें भूनी रखी।

ग्रौधी राती रा बोगत हुग्रा ता वसन्ते ग्रापणा भाई रूप जगाऊ ता बोलू जे भाई जी मैं तुस्सा बें शकार डाऊदा सा तुस्से तुईबें उठिया खात होर तुस्सरा सोणे रा बोगत भी अब्बे खत्म हुआ ग्रब्बे मूं सोंणा।

चार बजे रा बोगत हुआ ता रूप सैर केरदा नौठा पिच्छे न वसन्त कीड़े चीटू होर तोखे मोरीया रोहू। जब्बे रूप वापस ग्राऊ ता हेरीया हैरान हुग्रा होर रोन्दा लागा होर सोठदा लागा जे मूं एईरा हिन्दू धर्म केरना। बोता न तेईबे पौंज सपाही मेलू। जुण तोखरा राजा थी तेईरा राज नष्ट होई गोऊदा थी होर ते सपाही ग्रढ़े मांहणू बें तोपदे चोले दे थी जुण जे दोथी दोथी तिन्हां बें मेलदा होर सो ए तिन्हां राजा बणाणा थी। जब्बे तिन्हां बें रूप मेलू ता तिन्हें सो ढोकू होर राजा बणाणे री तईएं नेऊ।

वसन्त तोखे पोऊदा थी ता एकी साधुए सो भालू होर एक जंगली बूटी देईया जिन्दा केरू। जब्बे वसन्त जोन्दा फिरू ता सो तिस्से धीरे चोलू जोखे जे रूपे रा राज थी तोखे राक्षे री डोरे एक बड़ी भारी बड्डी दिवार धीनी दी थी होर तेई राजा न ग्रे फैसला हुग्रा दा थी जे एक माहणू बारी बारी तेई राक्षा बें देणा तदी एक बुढी रे शोहरु री बारी थी वसन्त तोखे पुजू ता बुढी न रोटी मोंगी। तेस्से बोलू जे मैं राक्षा बें रोटी बणाणी लाईदी सा पहले तेईबें रोटी देणी, फिरी शराबे रा घड़ा ता फिरी माहणू री जग्गा मेरे बेटे री बारी सा।

वसन्ते बोलू जे श्रोज तेरे बेटे री जग्गा हांऊं बेशनू मुम्से रोटी दे। बुढी री खुशी रा कोई ठकाणा नीं रोहू होर तेस्से वसन्ता बैं रोटी धीनी।

वसन्त तीर कमान लईया बैठा। रोटी री जग्गा तेईए किरड़े न गोष्टे पाए शराबे री जग्गा घड़ न गौन्त्र पाऊ। श्रोधा राती राक्ष श्राऊ सिभी न पहले तेईए किरड़े न हौथ पाऊ ता गोष्टे हौथा न लागे। पीन्दा लागा ता होर भी भिक श्राई फिरी लागा सो दरवाजे चोड़दा पर जब्ब छोड़ई नीछा ता बोलदा लागा जे श्रंढा बुभीया सा जे तू कोई खास सा तू आपणा हौथ दस जे केबड़ा हौथ सा तेरा। वसन्ते तीरी मौंझे शांज ठोकी। राक्षे शांज चापी होर श्रापणा हौथ तईबे तरीणने व पाऊ। वसन्ते लेऊ ता तेईरा हौथ काटीया डाहू।

जब्बे सपाही बैं वसन्ते री भादरी रा पता लागा ता तिन्हें वसन्त कैद केरु होर दस्सू जे बुढी रे बेटे श्रें राक्ष काटू होर इनामें रा श्रोधा हिस्सा बुढी न लेणे रा बचन केरु। होर तंढा केरीया इनाम तकसीम केरु।

तेई राजा न एक शाहूकार थी तेईरी बेड़ी चोलणे न रुकी होर श्रन्ढा बोलू जे माहणू री बोली री जरुरत श्रोखे सा। शाहूकार राजे आगे नौठा जे कोई माहणू दे। वजीरे कैदखाने न वसन्ते रा ना धीना शाहूकारे वसन्ते री बौली लेणी लाई ता तेईए बोलू जे की तुस्सा बेड़ी लोड़ी चोली की बोली ए लोड़ी शाहूकारे बोलू जे बेड़ी लोड़ी चोली। वसन्ते श्रापणी कोन्हीं गूठी काटी होर लोऊ तुई पन्धे शेटू ता बेड़ी चौली पोई।

शाहूकारे एकी तेल्ली बै बोलू जे मेरे एई नौकरा बैं श्रापू आगे रख जब्बे हांऊं एन्नू ता तब्बे मूं ए नेणा। वसन्त कोल्हू पेला थी होर धनोटू पन्धे राग गान्दा रोहा थी। एक राजकुमारी तेईरा ए राग रोज शुणदी रोहा थी होर तेई पन्धे मोहित होई गोई दी थी। एक रोज देई बोला सा जे मूं तो संघे ब्याह केरना। वसन्ते बोलू ठीक सा।

तेसे श्रापणे बापू बै भी दस्सू स्वम्बरे री त्यारी हौन्दी लागी। देई फुल्ले रे हार होर केसरे री कटोरी लइया हान्दरे न श्राई पर तेस्सा न वसन्त नीं भालूआ तेस्से राजे बै बोलू जे बापू जी श्रौधी रियास्त नीं आई। राजे बुज्जो ध्याड़ी सिभ नांढे, टाटे होर लंगड़े शधाए। वसन्त भी एकी कूणे न बैठा दा थी। देइए केसरे री कटोरी वसन्ता पन्धे पेरी गोला न फूल्ले रा हार पाऊ सो तेसरा खसम हुश्रा। सारे राजकुमारे थू थू छी छी केरी राजे तिन्हां बै दूर कुटीया पाई होर कोदरा खाणे बै धीना। किछ ध्याड़ी परन्त राजे बै पता लागा जे श्रे वसन्त ता राजे रा बेटा सा ता तेइए ते दूए शधाए होर दाज दान धीना होर दबारा तिन्हरा ब्याह केरू।

एक रोज जब्बे शाहूकार श्राऊ ता तेईए तेली न वसन्ते रे बारे न पुछू।

तेलीए वसन्ता बै दस्सू ता वसन्त शाहूकारा संघे जाणे बै त्यार हुआ। राजे ते दाज दान देईया विदा केरे। शाहूकारे बुए बेड़ी न पाए।

ओंधे समुन्द्रा न पुजीया शाहूकारे रे दिल्ला न बेईमानी ग्राई होर तेईए वसन्त धाका देईया समुन्द्रा न शेटू। देई रोन्दी लागी शाहूकारे बोलू ए मेरा नोकर थी एई की देणा थी तौंभे। ग्रब्बे तू मेरी शाहुकारन बणी।

वसन्त बचारा रूढ़दा रूढ़दा मगरमच्छे निगलू। मगरमच्छे रे पेटा न सो सावता-ए रोहू जब्बे तेईबै भूख लागी ता तेईए मगरमच्छे रा कालजा काटणा शुरू केरू। दुई चार ध्याड़े परन्त तेईए मगरमच्छे रा कालजा खाईया खत्म केरू। मगरमच्छ जब्बे मूग्रां ता भीरे थोड़ा थोड़ा काटणा रोज शुरु केरू। जब्बे हड्डी केल्ही रोही ता वसन्त हान्दरे न बोलू "भाई भीरा सूले सूले काट" भीर भीरनी हैरान हुए जब्बे तिन्हें सो खोलू बड़े खुश हुए होर तिन्हें सो आपू आगे डाऊ।

भीरनी कई घरे राजे बै फुल्ल देंदी जा थी। एक ध्याड़ी वसन्ते बोलू जे मूं भी जाणा संघे। भीरनी ए सो याणी रें भेशा न नेऊ। तोखरा राजा रूप थी। राजे पुच्छू जे ग्रे कुण सा ता भीरनी ए बोलू जे ग्रे मेरी बेटी सा।

राजें तदी तोखे कथा देणे री तईए किछ लोका शाधे दे थी। शोहरीए बोलू मूं भी कथा देणी। राजे बोलू दे। तेसे बोलू आपबीती कि जगबीती। राज बोलू कथा ग्रापबीती होए ता जादा मजा एला। पर याणीए बोलू जे कथा हांऊं पड़दे न देग्रा सा राजे पड़दे रा इन्तजाम भी केरू।

वसन्ते आपणी कथा शुरू केरी। जब्बे शणान्देआ शणान्देग्रा जंगला न कीड़ खाणे रे बारे न होर ग्रापणें भाई रूपे रे बारे न दसदा लागा ता राजें बै याद आई जे मेरा भाई भी वसन्त थी। मैं सो जंगलां न छोड़ू थी। तबै वसन्ते बोलू ऐतरी-ए ग्रौज, एतरी-ए-काल। राजे बै बड़ा दुःख हुआ तेईए तेस्सा भीरनी बै बोलू जे काल भी एजी कथा लाणी सी।

वसन्ते राक्ष मारने ढोई कहाणी शणाई। फिरी बोलू एतरी-ए ग्रोज ता एतरी-ए काल। राजे रूपा बैं बड़ी झिक ग्राई तेईए बुढी रे शोहरू बौ फांसी धीनी। तिन्हां सपाही व भी फांसी धीनी।

तरीजे रोज कथा भी लागी शोहरी बोला सा वसन्त जब्बे काटणा लाऊ की मूं काटीया सा फायदा कि बेड़ी लोड़ी चोली। गूठी रा लोऊ देईया बेड़ी चोली। शाहूकारे वसन्त तेली आगे बेचू। तेलीए वसन्त कोल्हू पेलदा लाऊ। वसन्ता बै पिछली याद आई। बड़ा दुःख हुआ। तेईए गाणा केरू। राजे री देईए शुणू। सो ग्रंडी मुगध हुई जे तेसे वसन्ता संघे व्याह केरू। शाहूकारे वसन्त लाड़ी सन्मेत वापस नेऊ। लालचा न एजीया धाका देईया समुन्दा न शेटू। मगरमच्छे निगलू।

फिरी शोहरी बोला सा एतरी ओज एतरी काल। राजे बैं शाहूकारे री झिक आई होर सपाही बैं बोलू जे शाहूकारा बैं ढोका होर फान्सी देआ। राजे शाहूकारा बैं फान्सी धीनी माल आपणे खजाने न डाहू देई भी बेढ़ न रखी।

मालणी री शोहरी बोला सा जैबे वसन्त समुन्द्रा न पाऊ सी मगरमच्छे निगलू। वसन्ता बैं भूख लागी तेईए मगरमच्छे रा कालजा काट। मगरमच्छे रा मास लिछिया खत्म हूआ। वसन्ते बोले भाई भीर सुल्ले सुल्ले काट। वसन्त भीरे बाहर कोढ़। याणी रे रूपा न डाऊ। झिन्नी माली रा कोम भी केरा थी। एक रोज वसन्ते बोलू मूं भी जाणा राजे आगे। सौ शोहरी रे रूपा न औज कथा ददा लागादा सा "भाई रूप बसन्त ओज दूए भाई आप्पू न मेल।"

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कोल्ह	घौंसला	13. चोटू	डसना
2. कैब-के	कभी	14. ढोकू	पकड़ा
3. मुईदी	मरी हुई	15. भालू	देखा
4. रुणू	रोया	16. गोष्ट	उपले
5. सोठु	सोंचा	17. शांज	लोहे की छड़ी
6. झिगट	झंझट	18. चापी	चबाई
7. झिक	गुस्सा	19. कोन्ही गुट्ठी	सब से छोटी ऊंगली
8. शेटे	फेंके	20. भालू आ	देखा गया
9. बाभी	बिना	21. शधाए	बुलाए
10. चोहड़ा	सिर के बाल	22. रुढ़दा-रुढ़दा	बहता-बहता
11. खलारू	खुले करना	23. निगलू	निगल गया
12. ढांसी	पीटना		



शूरु री देवी

ए ता सिभ जाणा सी जे कुल्लू देवभूमि रे नांव संघे मशहूर सा। एकी-एकी फरलाँगा पन्धे देऊ देवी रा बास सा। जग्गा जग्गा देऊए रे डेहरे हेरने बैं मेला सी। देऊ देवते पन्धे कुल्लू रे लोके रा विश्वास भी बड्डा सा किबै जे देऊ देवते सदा ए मुसीबतां न बाल ददे आए। सिभी देऊ देवी री आपणी आपणी कहाणी होआ सी। कोई कंढे चाणे प्रगटे ता कोई कंढ चाणे। अंढी ए शुरु री देवी रे प्रगटणे री भी कहाणी सा।

हामटे जोता न हेठे म्हारे देशे री प्रतिष्ठित देवी शबरी रा स्थान सा। बे एसा शाकम्भरी भी बोला सी। होर भी कई नां एसरे सी। जढे जे नगरे री देवी 'त्रिपुरा सुन्दरी' देवी भुटन्ति दोचै मोचे जेसरा स्थान वरशाई कोठी न सा बड़ा मानता रखा सी तढें शूरू री देवी भी कुलजे रे रूपा न मन्नीया सा।

कई शोऊ बोर्शा पहिले री गल सा जब्बे जे शूरू प्रीणी री जग्गा ऋषि लोके री तपस्या री भूमि होग्रा थी। शोभली जग्गा होंणे केरीया तपस्या केरने री तईए ए जग्गा ठीक बुझीया थी जंढ जे प्रीणी न जमलू देऊ रा स्थान (जुणी बैं जे जमदग्नी भी बोला सी) सा।

एक बारी एक जिमीदार जूण जे नांढा थी होल् बांहदा लागा दा थी। बांहदे बांहदेग्रा तेइरा हौल् एकसी टोहली न फसी गोऊ तईए बोल्दा बें जोरे ग्रार लाई नांढे ग्राली गल थी तईए। "ऐंईग" केरी। ऐ देवी रे मन्त्रे रा पहला अक्षर वो होग्रा सा जोसा बे बीज मन्त्र भी बोला सी। एई नांढे रे ग्रंढा बोलणें संघे देवी तोखे प्रकट हुई। हाजी भी तेस्सा टोहली पन्धे होल् रे 'चोरे रा नशाण' ता बोल्दे रे खूर हेरने बैं मेला सी जोखे न जे एस्सा गल्ला रा पक्का सबूत मेल़ा सा।

बोला सी कई बोर्षा तईएं पहाड़ी इलाके न बरखा नीं होंणे केरीया ग्रकाल पोऊ ता देवी रे तपा संघे शाग ए शाग लागा होर शाग खाइया लोका जीन्दें रोहे। तब्बे एसा बैं शाकम्भरी भी बोला सी। ऐ मन्दर हेरने लायक सा जो खे जेसो टोहल थी तोखे ग्रे मन्दर बणूदा सा होर ध्यान लाणे री तईए बड़ी शोभली जग्गा सा।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कुलज	कुल देवी	6. बांहदा	चलाता था
2. शोऊ बोर्षा	सौ साल	7. टोहली	पत्थर
3. बुझीया थी	समझी जाती थी	8. नशाण	चिन्ह
4. नांढा	गूंगा	9. बोल्द	बैल
5. होल्	हल	10. शाग	साग

●

रुभू री कथा

एक रुभू नां रा भेड़ रा बच्चा थी। सो रोज होरी भेड़ा संघे चौरदा जा थी एक ध्याड़ी तइये आपणी आमा बी बोलू जे मू ठेली बी चोरदे जाणा। पर तेईरी आम्में नांह धीनी जे केहले नीं जाणा किब्बे जे जंगली जानवरे रा डोर होआ सा। पर तेईए हठ केरी होर सो केहला ठेली बै नोंठा आगे जान्देआ तेइबे एक बाघ मेलू तेईए बोलू मूं तू खाणा। रुभू बड़ा भारी घबराऊ पर भट्टे तईबे एक भाना ध्याना न आऊ। तेईए बोलू जे बाघ मामा मू ठेली चौरीया एणा होर मोट्टे होणा तब्बे तू मुंभे खाई। बाघ मनी गोऊ। आगे तेइबे भालू मिलू तेइबे भी तेइए ऐ जवाब धीना फिरी गीदड़ सो खाणा लाऊ तईबे भी तेइए बोलू :—

"लाऊल मंघाउल चौरी एज नूं।
मिजरे कोशटू भारी एज नूं" ॥

मतलब खूब चौरीया चरबी वधाइया एन्नू तबै तुस्से मुंम्भे खाइत।

जब्बे सो चौरीया खूब तकड़ा हुआ ता सौ रोन्दा लागा जे वापस किहां जाणा। तबै एकी चील तेइन पुछू रुभू मामा तू किबे लागा रोन्दा तेइए तेइब सारी बिथा शणाई तब्बे तेस्से तेईबे एक सलाह धीनी जे भुरज पोत्तर मेलरे संघ आपणे फेर लपेटी जबै बाघ बगैरा तोंभे पुच्छले जे भुजणू मामा रुभू मामा भी हेरु थी ता तू अंढा बोली :—

"रुभू दुभू हांऊं नीं जाणदा।
भूजणू मामे बे बोत छोड़ा" ॥

तू अंढा बोलदा जाई होर भगदा जाई। तेइए तांढा केरू जे भूरज पोत्तर लपेटीया भग्गू। आग्गे तेईबे बाघ मिलू तेइए पुच्छू भूजणू मामा रुभू मामा भी हेरू तों। तेइए बोलू :—

"रुभू दुभू हांऊं नी जाणदा, भूजणू मामे बै बौत छोड़ा"

तांढा बोलिया सौ सभी जानवरा न बचीया निकलू आग्गे तेइबै गीदड़ मेली। सो बड़ी भारी चलाक थी तेस्से बोलू भूजणू मामा मेरी गुठ्ठी काटुई भूज पौत्र दे ता थोड़ा जेहा गुट्टी फेर लपेटण बै तांढे चाणे धोखे संघे तइए जब्बे भूज पोत्तर उचेड़े तेतरी समें रुभू बै ए बिलकुल याद नीं रोही जे उईरा नतीजा की होंणा। जंढे भूज पोत्तर उच्चेड़े ता हेठे ऊना निकली होर रुभू पछियाणुई गौऊ अब सो पछतांदा ता बड़ा लागा आपणी गलती पांध पर एतरी सम्में किछ भी होई नीं सकदा थी। गीदड़िये सभ जानवर कठ्ठे केरे होर तिन्ने सभीये मिलिया सो खाऊ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. चौग्दा	घास चरने	9. हेरू	देखा
2. ठेलो	चरागाह	10. बौत	रास्ता
3. केहला	अकेला	11. बच्चीया	बच कर
4. भट्टे	जल्दी ही	12. गुठ्ठी	अंगूठी
5. बिथा	व्यथा	13. काटुई	कट गई
6. सेलरा	बरोला	14. उचेड़े	निकाले
7. फेर	इर्द गिर्द	15. खाऊ	खा लिया
8. भग्गू	भागा		



वावा फुग्रारी

द्वापर युगे री कथा या महाभारते रै वारे न ता सभीश्रे शुणदा सा पौढ़ूदा भी हाला जै कौरवा रा ता पांडवा रा यूद्ध हुग्रा ती तुइनें कौरवा पांडवा वै वनवास धीना ती जै पांडव तेरह साल तईं कोईचै मिले ता तिना वै कोई जगह या रियास्त नहीं मिलनी पौंज भाई पांडव वनवासा वे निकते तिन्हें वनवासा न कई जगह कई देश घुमें एण्डी तरह वनवासे रै ग्रखीरी साला न ते उत्तरा खण्ड (हिमालय की आंचल) वै आये तिन्हें ग्रखीरी साला न ग्रौखें कई मन्दिर बणायें इनहां मन्दरा न खास केरिया ज्यादा जें मन्दर भगवान शंकर ता कृष्ण भगवाने रै तिन्हें वणायें ग्रवें वी ते मन्दर सी तेडी कारीगरी देरिया ग्रे सब विशवास केरा सी, कई वजुर्गां व ग्रे गल ग्रासें ग्रौज भी शुणा सी जै पांडवें ए मन्दर एकी राती न बणाएं दे सी ते राती कौम केरा ती ता ध्याड़ी ग्राराम केरा ती जुण कौम ते जुणो राती न केरना शुरू केरा ती ता ते तेसाग्रे राती न तेई कौमा वे मुकमल पूरा केरा ती ग्रासरै बजुर्ग हाजी वी बोला सी ज ग्रां नग्गर। न पांडबे स्वर्गा वै पौड़ी बणाणी लोईदी ती तिनै सौं कौम राती शुरू केरू पर दोती होणे वै सौ किछ अधुरा रौहू सौ पुरा नहीं हुग्रा ता ते सारी पौड़ी ढौली गोई दुजे म्हारै कुल न छाकी ग्रां ग्रागै छाकी नौई पंदे एक पाथ्तर बड़ा भारी सा सौ एकी ग्रोछे जें पात्थरा पंधे ग्रंटी कूंदा सा सब लोक बोला सी जे सौ पांडवें री ठुठी (चिल्म) चूगल दसा सी ग्रौख धीरै तीन्हें बशां केरु ती ता तमाकू पीऊ ती एंडी कई गला म्हारे उतर खंडा न सी हर जगह हर ग्रां न बड़े २ इतिहास छूपेंदे सी ऐडा ग्रे एक मन्दर पाण्डवे रा ग्रां नगरा न ठाउआ नां री जगह न बणाऊ ग्रै मन्दर ग्रौज वी तौखै खड़ा सा ग्रै 'मूरली धर' रा मन्दर नां केरीया मशहूर सा।

एई मन्दरा रै ग्रांगणा न एक गौंवरु रा बुटा भी सा, लोक श्रुती रै ग्रनुसार ग्रै गौंभरू रा बुटा अर्जुन जुण जे भगवान कृष्णा रा भक्त हुआ तइरै नां केरिया सा लोक पुराणें हाजी भी बोला सी जे जैबे कृष्ण भगवान ग्रौखें न कोइचै वै नौठै ता ग्रै गौंभरू रा बुटा शुका सा कई घेरे ग्रै घटना धटीदी सा। सेवै लोका तौखेवे मना सी सेंगे भगवान कृष्णा वै भी तत्काल समझा सी। ग्रवै हाँऊ तुआवें वावा फुग्रारी री कथा दसनूं।

औजा न किछ वौर्ष पहलै एक वावा नग्गरा न जीड़ी मन्दरा न आऊ तौखे तेईग्रं आपणा डेरा जमाऊ सौ फोल वगैरा खा ती तैवं तेईरा नां फलारी पौऊ ग्रवं ग्रे बिगड़दे-२ ग्रा फुग्रारी पौऊ ग्रं वावा बड़ा भक्त सेधं सिद्ध पुरष ती ऐइग्रं तौखे मन्दरा न आपणी गुफा बणाई ग्रवें बी ग्रे गुफा फुग्रारी गुफा रै नो संगै मशहूर सा जुणा तेई बौक्ता न तौखै पुजारी होआ ती ते हाजी भी बोला सी जं वावा फुग्रारी ता ठाऊग्रा रा ठाकर (मुरली धर) दोती रोज तौखंन मणीकर्णा वं नांइदे जा ती, हाजी औजा कोई दुई त्रा वौर्षा तेई सौ गौल्. तौखं ती जिसी ते मणीकर्णा वे नांइदं जा ती ग्रवं सौ बाढ़ रै पाणी संगै ढौल़ दा सा। ते मणीकर्णा न काफी देर बाद सेजा ती, ऐंडी तरह हर रोज एर्जाग्रा ते पूजा केरा ती।

एकी वौर्षा कुल्लू रै राजे बड़ा भारी कुष्ट निकता तैवं कुल्लू रा राजा एई वावै आगं आऊ तेई वावै आगं आपणा रोणा रोऊ। वावा फुग्रारी हागे दुग्रालै न त्रा नारसिंह ती वावै वोलू मू हागे त्रा नारसींह सी पहले रा नां लटूरीया दूजं रा नां सूरीया ता त्रिजै रा नां चकोरिया ती, इनां न लटूरिया नारसिंहा खे मनीकर्णा न स्थापना केर ता चकोरीय री कुल्लू दुग्राले त्रिजा तिन्हें तौखे आपणी गुफा न डाऊ। सेधं वोलू जं तू कौसी तरीके ग्रयोध्या न रामचन्द्रे री मूर्ति ग्राण ता तुंइरी स्थापना कल्लू न केर राजे वे ग्रं देसिया राजा आपणं महला न आऊ तेईयं जंडा वावै बालूदा ती तंडा ग्रे केरू। किछ ग्रादमी दरवारे र खर्चा संघ ग्रयोध्या वं भेजे तीना व सब राशन वगैरा भौरीया धिना ते ग्रयोध्या वें नौठे तीने तौखें पुजीया हेरू जं ग्रौखै भगवानै री मन्दरा न बड़ी भारी मानता होआ सी ते भी तौखै जाइया मन्दरा न रौग्रे काफी अरसा ते तौखे रांहे, तौखरे पुजारी संघं ते कौम खूब केरा ती, पुजारी वी सारा कौम तिन्हां न करा ती, काफी रोजा बाद तिन्हें भगवान राम चन्द्रै री असली मूर्ति रा पता लाऊ तिन्हें एक राती न सौ मूर्त तौखें न चोरी ता रातीग्रं तौखेन निकली गोग्रे पिछे न तौखे पता लागा ता ते तिन्हां पिछै दौड़ काफी रसता तैं केरिया ते तिन्हांवे रस्तै न मिलै ग्रयोध्या रै पाण्डै ते रस्ते न ढौके ता तिन्हें सभी ग्रे सौ मूर्ति धूकसी डाई ता तिनावे बोलू जे भाई भगवान रामचन्द्रा जौखं वे भी जाणा होला ग्रं भगवाने री मर्जी सा तुसं भगवाने री मुर्ति वें चका ता ग्रापणी ग्रयोध्या वें नेग्रा। तिन्हें पुजारी पाण्डे भगवाने री मूर्ति चकणी लाई पर ते तेसा मूर्ति वें नहीं चकी सकै ग्रोच्छी जेंई ता मूर्ति ती पर भगवान रामचन्द्रा री ग्रापणी मर्जी भी उतराखण्डा न ऐणं री ती तिन्हें केतरा जोर लाऊ पर ते मूर्ति वै ढोकी नहीं सके, तंवे कुल्लू बे तिन्हें मूर्ति चकणी लाई ता सौ तिन्हें चकी तैवं ग्रयोध्या रै पाण्डे निराश होईया तौखं न वापस आपणी ग्रयोध्या नागरी न नौठे। तिन्हें मूर्ति आणीया कुल्लू पजाई। तौखे राजै तेइरी स्थापना केरी।

कुल्लू न ग्रवं भी सौ मूर्ति सा कुल्लू सुलतानपुरा। रघूनाथपुरा न रघुनाथ रा मन्दीर सा तुईन वाद राजै आपणा सारा राज पाठ रघुनाथ जी वें धिना

आप्पू तिन्हारा नूमाईंदा बणोया कौम चलांदा लागा। तूईन बाद राजा रा कुष्ट हट्ट्। तैंदी न बाद औ कूल्लू दुशहरा भी रघुनाथ जी री यात्रा संगं सम्पन होआ सा। बाबा फुआरी जी औं राजे री सारी बिमारी दुःख-दलिद्र दूर केरे।

बाबा फुआरी रोज नहाईंदे मणीकर्णा बै जा ती, ते मणीकर्णा न ऐंदैआ बड़ो बलाग पा ती, दुआलै रै पुजारी रोज बेंड़े तंग लागे ऐंदें, तिन्हावै एक रोज औं गप्प सुझी जै जिसी फुआरी बाबा मणीकर्णा बं जा सी तेई गौलू न लाख शेटीआ डाहणी, दूजे रोज तिन्हे तंढाए केरू जेंबं बाबा फुआरी वापस आयें ता तिन्हे तौखैं लाख शेटों धिन्नी तिन्हें तुइंरा मतलब समझी लऊ ता तदी न बाद मणीकर्ण जाणा छौड़ू तेंबे ते तौखं न ते नौठौ सब म्हारं पुराणे आदमी बोला सी जै बाबा फुआरी एई जिस्मा समेत अमर सी, तुइन बाद ते कदी औखैं नहीं आए। कई बार तिन्हें रें दर्शन कई लोका बै तौखैं होआ सी ते साधू रं भेशा न औं मिला सी। औ मैं तुआवें बाबा फुआरी री कथ जे म्हारें काफी मशुहर सा तुसा बं बी देसी भाद्रो री बीहा बें काफी आदमी औखें बाबा फुआरी जी री गुफा बं ऐजा सी 19 भादो री राती जागरण केरिया 20 भादो तौखं निहाइया सी, बड़ा पवित्र, एकांत जंगला न औं जगहा सा जुण भी औखैं जा सा जेतरी देर औखे बेशा सा ता साधू बणी जा सा सतसंग ता तौखैं रोज औं होआ सा। बाबा फुआरी म्हारी महान हस्ती सी। राजै रै घौरा न अंदें भी एक त्रांबें रा पौट सा तुइंने बाबा फुआरी जी रैं बारें न लिखुंदा सा जै, जेंबे कल्लू न रामशीला नामक जगह रे चौदहा टुकड़ें होलं ता हांऊं दर्शन देनूं।

"ऊत्तरा खण्डा न मनू जी हुआं।
हांऊं ता बुझा सा,
औखं न सृरित री रचना हुई।"

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. ध्याड़ी	दिन को	9. हाजी भी	अभी भी
2. ढौली	गिर गई	10. गोलू	छोटा रास्ता
3. नोई	नदी	11. एजीआ	आ कर
4. ठूठी	चिलम	12. रोणा रोऊ	व्यथा सुनाई
5. पीऊ	पीया	13. पुजीया	पहुंच कर
6. गौंबरू	नीम्बू प्रजाति का एक फल	14. चोरी	चुराई
		15. ढोके	पकड़े
7. कोंईचे	कहीं	16. बलाग	वैर
8. शुका	सूखा	17. त्राम्बा	तांबा



जचौली जातर

बड़ी पराणी गल सा जगतमुखा आगे भनारा नां रे ग्रां न एक राणा रा किला थी। सौ राणा बड़ा दुष्ट थी। तादि कालके रिवाजे रे मुताबिक हर रोज एक आदमी आपणी बारी संगे राणा वें दुध देया थी। जुण दुध नई थी देई सकदा तेई वें बड़ी बुरी सजा मेला थी। अंदे चराणे हर आदमी ठिक बौगता पंदे राणे वें दुध पजाई देग्रा थी।

एकी रोज एकी ब्राह्मणे री बारी थी। बड़ी कोशिश केरी तेईए पर दुधे रा इन्तजाम नी हुआ। अवें ता तेई सामणे मौत नौंचदी लागी। सौ बड़ी फिकरा न थी पौउदा जे अवें की केरनू कौन आणनू दुध। तेई ब्राह्मणे रे घौरा एक बच्चा थी हुआदा। तेईयें आपणी लाड़ी रा दुध राणे वें नेऊ ता आपणी जान छुड़ाई। रोजा साई राणे दुधे री खीर वणाणे रा हुकम धिना। जवें राणे खीर खाई ता तेईवें सौ बड़ी खरी लागी। राणा बड़ी सोच न पौऊ थी जे एै खीर स्वाद किबे सा तेईयें सौ ब्राह्मण शधाऊ ता तेईन सब किछ पूछ। ब्राह्मणे आपणी जान वचदी हेरिया सब किछ ठीक-२ दस्सी धिना।

अब ता राणा खुशी संगे पागल होई गोऊ थी तेइयें हुक्म धिना जे मेरे राजा न जुण भी बच्चा पैदा होला तेईवें कत्ल केरी देआ होर दुध मुंव पजाई देआ। राणा रा राज थी जुल्म पूरे जोरा पंदे थी। कौसरी मजाल थी जे राणे रे हुक्मा वे न मने ? पैदा हौंदे सारे बच्चे लाए मारने होर दुध राणा वें मिलदा लागा। एई घोर पापे रा रौंला चौऊ पासे खूब पौऊ पर कौसी री वी हिम्मत नई थी जे सामणें एजिग्रा राणा रा विरोध केरे।

एकी रोज एक आदमी घुमदा-२ जगतसुख पूजू। सौ बड़ा भारी थकी गोऊ थी। सौ एकी टोहली पंदे बेठा तौखे तेईवें नींदर आई गोई। सौं नांगी जौंगे थी। वोला सी जे तिसी फेटे एक बुढि बेटड़ी थी चौलीदी तेसरी पीठी न किरड़ा थी। तेस बुढिए तेईरी जौंघा धीरे भालु तेस हेरू जे तेइरी जौंघा न राज रेखा सा। तेसे सौ जगाऊ ता आपू संगे नेऊ। किरड़े न पाइया तेसे सौ महला हांदर नेऊ। तेस सारे लोका जगाए होर ते तेस पासे होई गोए। अवें तेस बुढिऐ आपणा चमत्कार दसू। सौ भांऊ-२ वधदी गोई होर बड़ी भारी लौमी होई गोई। सौ आदमी तेस आपणे कौन्हा पंदे थी डाऊदा। फिरी तेस तेइन पूछू जे तौन की लागा सा हेरीदा। तेइयें बोलू-दारी दलासणा भांऊ ता छोटे वेलंगा न भयांऊ।

तेस बुढि ए एलान केरू जे तू एई देशे रा राजा सा। सारी जनता राणे रै वरखलाप तौ संगे रौहली। बस फिरी की थी राणे रा जुल्म खत्म हुआ। ऐ बुढी थी देवी हिड़मा। ओंख न लेइया कुल्लू न राणा खानदान खत्म हुआ ता राजा खानदान शुरू हुआ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. नौचदी	नाचती	10. बेटड़ी	औरत
2. सोचा न	सोच में	11. धीरे	की ओर
3. शधाऊ	बलाया	12. जगाऊ	उठाया
4. रौला	शोर	13. संगे नेऊ	साथ ले गई
5. कौसी री	किसी की	14. झांऊ-झांऊ	ऊपर-ऊपर
6. एजिआ	आ कर	15. हेरिदा	दिखाई देता
7. टोहन	चट्टान	16. भयाऊ	नीचे
8. नींदर	नींद	17. गूर	जिस में दैविक शक्ति प्रवेश करे
9. नांगी जौंगे	नंगे पांव		

●

दिपारी ठाकर

कुल्लू देऊ देवता री भूमि मने जा सा। औखे थोड़ी-२ दूरी पंदे कौसी न कौसी देऊ या देवी रा डहरा हेरने व मिला सा। तकरीबन हर ग्राएं रा आपणा-२ देऊ हौआ सा होर ग्रां न तेइरा डेहरा हौआ सा। हर देऊ-देवी संगे कोई न कोई कथा जरूर हौआ सा। सिर्फ देऊ-देवी संगे ए कथा नीं हौंदी पर राक्सा री कथा भी बुजुर्गा न शुणने व मिला सी। ए कथा जुणा जे कौंचे भी लिखुई दी नई हौंदी पर लोका वै जवानी याद हौआ सी लोक कथा कहला सी।

एंडी ए कथा लोका एक दूजे न शुणीआ याद रखा सी होर आगे न आगे ए कथा चौलदी रौहा सी। कई बारी ता ए कथा बदलुइया होरे री होर भी होई जा सी।

कौसी देऊ या देवी रा डेहरा कदी बणु ए ता पता लाणा बड़ा मुश्कल हौआ सा। हां ए डेहरा एंडा किब बणु ऊंइरी बारे न फिरी भी पता लागी सका सा।

बिजली महादेऊ रा डेहरा बोला सी सेभी न पैहले गलाऊ ए आपणा जाला बुणीआ बणाऊ थी तेइन बाद ए डेहरा बिलकुल तेंडा बणाए गोऊ जंढा जाला थी। अंढी-२ होर मन्दिर होर डेहरे रे बारे न भी कथा सी। दिपारी ठाकरे रा डेहरा बोला सी डेगा केरिया सा केरुदा। ए डेगा बोला सी देऊ-२ री आपणी लड़ाई संगे सा हुआदा।

राक्स ता देऊ आपून लड़दे आए पर कभे-२ देऊ भी आपून लड़ी पौड़ा सी। देऊ री देऊ संगे लड़ाई ता बड़ी बुरी हौआ सा किबे जे दुई आगे बड़ी

ताकत हौआ सा । कुल्लू न दयार नां री एक जगा सा । औखे दियारी ठाकर नां रै देऊ री बड़ी मानता सा । उंई जगा एई देऊ रा डेहरा भी सा । दियारी ठाकरे रा डेहरा डैंगा सा । एंडा वोला सी झे एँ डेंहरा डंगा केंरिया केरुदा सा ।

कुल्लू न खोखण नां री एक जगा सा औख रे लोका आदी-ब्रम्हा नां रे देऊ वैं मना सी । उई जगा न आदी ब्रम्हा रा डेहरा भी सा । एंडा बोला सी जे एकी वारी कौसी गला पंदे दूई देऊ रैं बीच थोड़ा जेहा झगड़ा हूआ । दूए देऊ बड़ी ताकतो आलै थी तवै हार मनणूं आला भी नई थी कोई गल एतरी वधी गोई झे दूऐं देऊ आपून झौटिदे लागै दयारी ठाकरैं लाए वाण मारनै ता आदी ब्रम्हा रौहु लुकिया । देयारी ठाकरै बडे भारी बोहू तीर मारे पर आदी ब्रम्हा वैं नी लागा कोई तीर । एँ लड़ाई खासी देर चौली । दयारी ठाकर जवै तीर मारिया थकी गोऊ ता सौ आपणे डेहरे हांदर चली गोऊ । खोखण जांदी घेरे हाजी तंग भी दियारी ठाकरे रैं मारुए तीर हेरैं जाई सका सी जुणा झे अवे 'ओड़ी' वणी गोए सी ।

अब जब झे दियारी ठाकर खूब तीर मारी मारीया थकी गोऊ थी होर डेहरैं हांदर थी वेठादा तवैं वारी आदी ब्रम्हा री थी । आदी ब्रम्है कोई तीर नी मारु पर तेइयै एक होछा जेहा गोशटू लेऊ ता सो आपणी पूरी ताकत लाइया मारु गोशटू ठिक दियारी ठाकरे रैं डेहरैं पंदै लागा । गौशटू एतरी जोरैं थी मारुदा झे दियारी ठाकरे रा डेहरा डैंगा होई गोऊ । गोशटू बिल्कुल ठिक जगा भी लागा । वस तदी न लेइया बोला सी झे दियारी ठाकरे रा डेहरा डैंगा सा होई गोऊदा जुण झे हाजी ढोई भी डैंगा सा । एँ डैहरा डैंगा ता सा पर एँ ढौलदा नईं । इटली न एक टावर सा जुणी वैं पीसा रा टावर वोला सी सौ भी डैंगा सा होर सौ भी ढोलदा नईं । एंडी गाल नईं आथी झे तौखे भी कौसिए गोशटू मारू होला होर सौ टावर डैंगा केरी शेटू होला ।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. कौंचे	कहीं भी	8. एतरी	इतनी
2. कौसी	किसी	9. झौटिदे लागे	लड़ने लगे
3. डेहरा	देव मन्दिर	10. लुकिया	छुप कर
4. गलाऊ	मकड़ी	11. हांदर	अन्दर
5. जाला	जाल	12. गोशटू	उपले
6. डेंगा	टेढ़ा	13. ढोलदा	गिरता
7. कभें-२	कभी-२	14. शेटू	फेंका

सोमसी (त्रैमासिक पत्रिका)

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के तत्वावधान में पर्वतीय संस्कृति-कला एवं भाषा के विभिन्न पक्षों को उजागर, संरक्षित तथा पोषित करने के उद्देश्य से एक त्रैमासिक पत्रिका **सोमसी** का प्रकाशक जनवरी 1975 से हो रहा है। पत्रिका का वार्षिक चन्दा मात्र 12 रुपये है तथा यह प्रदेश के कालजों व स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए शिक्षा निदेशक हिमाचल प्रदेश द्वारा स्वीकृत है।

पत्रिका के अब तक के अंक भी अकादमी कार्यालय में प्राप्य हैं। संस्कृति, भाषा एवं कला के अध्येताओं के लिए यह पत्रिका नये कीर्तिमान स्थापित करती है।

कृपया निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

सचिव,
हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा
अकादमी, परीमहल,
शिमला-171009

हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी परीमहल शिमला-९ के प्रकाशन

1. **पहाड़ी लोक रामायण**
(प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित राम कथा के रूपों का संकलन तथा सारगर्भित विवेचन)। 12–00

2. **ऋतम्भरा**
(प्रदेश के संस्कृत कवियों की कविताओं का हिन्दी अर्थ सहित संकलन)। 6–00

3. **माला रे मणके**
(हिमाचल के प्रसिद्ध पहाड़ी कवियों की कविताओं का संकलन)। 6–00

4. **छनाट**
(संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार महाकवि भास के छः नाटकों का पहाड़ी भाषा में रूपान्तर)। 12–00

5. **श्यामला**
(प्रदेश के प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की कविताओं का संकलन)। 15–00

6. **कथा सरवरी भाग-1**
(हिमाचल प्रदेश के शिमला, सोलन, सिरमौर तथा कुल्लू जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन)। 2–50

7. **कथा सरवरी भाग-2**
(हिमाचल प्रदेश के चम्बा, कांगड़ा, ऊना, मण्डी, हमीरपुर तथा बिलासपुर जनपदों की लोक-कथाओं का संकलन)। 2–50

8. **इन्दु काव्यम**
(भूतपूर्व सिरमौर रियासत का संस्कृत भाषा में इतिहास)। 15–00

9. **उर्दू काव्य संकलन**
(प्रदेश के उर्दू कवियों की कविताओं का संकलन)। (प्रैस मे)

नोट—हिमाचल कला-संस्कृति-भाषा अकादमी के सभी प्रकाशन प्रदेश के पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत होते है।